मेरी तस्वीर

ضیا فتح آبادی

मेरी तस्वीर

ज़िया फ़तेहाबादी की उर्दू काव्य रचनाऐं
हिन्दी लिपी में प्रस्तुत

प्रस्तुति
रविन्द्र कुमार सोनी

जी. बी. डी. बुक्स
नई दिल्ली

मेरी तस्वीर

पहला संस्करण 2011

ौ सर्वाधिकार आदित्य सोनी अधीन

ISBN: 978-81-88951-88-8

डिज़ाइनिंग एवं टाईपिंग
देवीशरण उपाध्याय
बी–1, बनीपार्क, जयपुर
फोन. 0141–2203738
प्रकाशक
जी. बी. डी. बुक्स
आई 2/16, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली 110002
फोन: 23260022, 41563695, 9312286851
ई–मेल: generalbookdepot@yahoo.com

मुद्रक
राधा प्रेस
दिल्ली 110031

विषय - सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
1. अपने पाठकों से	7
2. जोश मलीहाबादी की कलम से	11
3. ताब-ए-नज़र अगर हो	17
4. क़तआत और रूबाइयाँ	29
5. ग़ज़लें	49
6. नज़्में, गीत और सानेट	145

वो देख मशरिक़ से नूर उभरा लिए हुए जलवा-ए-हक़ीक़त
मजाज़ की तर्क कर ग़ुलामी कि तू तो है बन्दा-ए-हक़ीक़त

-ज़िया फ़तेहाबादी

अपने पाठकों से

मेहर लाल सोनी ज़िया फ़तेहाबादी का सँबन्ध मिर्ज़ा दाग़ देहलवी के अदबी ख़ानदान से रहा, उनके उस्ताद अल्लामा सीमाब अकबराबादी मिर्ज़ा दाग़ देहलवी के शागिर्द थे। उर्दू ग़ज़ल के अलावा अपने उस्ताद सीमाब की दिखाई हुई राह पर चलते ज़िया ने भी क़तआत, रूबाई और नज़्में, जिन में सानेट और गीत भी शामिल हैं, लिखीं जो अब उर्दू साहित्य का एक अटूट हिस्सा हैं।

इस बात को मानते हुए कि भारत में जहाँ उसने जन्म लिया और अपने पैर फैलाये उर्दू भाषा अब उतनी प्रचलित नहीं रही जितना कि आज से कुछ वर्ष पहले थी, और आज इस बात को ध्यान में रखते हुए कि हम भारतवासी काव्य-रचना चाहे वह किसी भाषा में क्यूँ न लिखी या कही जाए अगर समझ पाऐं तो उसे स्वीकार करने, सराहने और पसन्द करने में कभी नहीं चूकते एक अनुवाद न सही परन्तु ज़िया की चँद एक काव्य रचनाऐं जो उनके पहले छपे हुए संग्रहों से, यानी - "तुलू", "नूर-ए-मशरिक़", "नई सुबह", "गरद-ए-राह", "हुस्न-ए-ग़ज़ल", "धूप और चाँदनी", "रँग-ओ-नूर", "सोच का सफ़र" व

"नर्म गर्म हवाऐं", से चुनी गई हैं, इस संग्रह में हिन्दी लिपी में प्रस्तुत कर रहे हैं इस उम्मीद के साथ कि वह हिन्दी-भाषी जो उर्दू भाषा से भी लगाव रखते हैं इस संग्रह द्वारा एक ऐसे कवि से परिचित होंगे जिसने अपने जीवन के लगभग साठ वर्ष उर्दू भाषा को निखारने व सँवारने में व्यतीत किए, जिसने शायरी के दिल को अपने ग़म से नहीं बल्कि इन्सानियत के दर्द से धड़काया, जिसने अपनी सोच से जन्मी रोशन किरणों से रात की तारीकी को कम करने की कोशिश की और दबी हुई अनेक उम्मीदों को फिर से जगाया था। ज़िया आशावादी थे और उन का कलाम उन की शख़्सियत का आईनादार है।

ज़िया फ़तेहाबादी की शाइरी एक ऐसी तस्वीर है जिस में आप अपने हर एक मनचाहे रँग बख़ूबी तलाश कर पाऐंगे।

कौशल गोयल
प्रकाशक

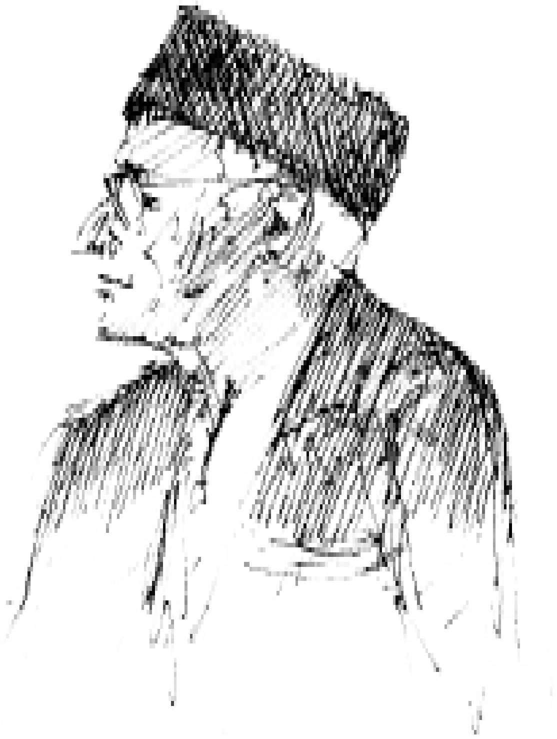

Swedenborg Hall, London
28.11.1981

ज़िया फ़तेहाबादी

From: SULTAN COLLECTION

ज़िया फ़तेहाबादी

जोश मलीहाबादी की कलम से

(1)

मेहर लाल सोनी ज़िया फ़तेहाबादी को मैं कई वजह से अज़ीज़ रखता हूँ। पहली वजह तो ये है कि उनका क़ल्ब साफ़ और वसी है जिसे सब्हा-ओ-ज़ुन्नार की अहमकाना कशाकश से दूर का भी वास्ता नहीं, वो मादर-ए-वतन के सच्चे परस्तार हैं और हिन्दुस्तानी के सिवा और कुछ भी नहीं।

अगर हम हिन्दुओं और मुस्लमानों में ये रूह बेदार हो जाए तो आज ही बेड़ा पार हो जाए। दूसरी वजह ये है कि हरचन्द वो अभी नौजवान हैं मगर उन के तफ़क्कुर में उस पुख़्तगी-ओ-रसीदगी के इलामात पैदा हो चले हैं जो तजुरबाकार पीरानासाली का हिस्सा होते हैं।

हर वो शख़्स, जिसका दिमाग़ उस से ज़्यादा सिनरसीदा हो, क़ाबिल-ए-मुहब्बत-ओ-अक़ीदत हुआ करता है। तीसरी वजह ये है कि वो उन चँद गिनती के शोअरा में से हैं जिन्हें बख़्त की यावरी और क़ुदरत की फ़य्याज़ी से शायरी का सही रास्ता मालूम हो गया है। उन का कलाम ग़ज़लगोई की ग़ैर-फ़ितरी मसख़रगी से क़तअन पाक होता है। जो कुछ

मुतालेआ या महसूस करते हैं उसी को कहते हैं और इस अन्दाज़ से कहते हैं जो दिलनशीं होता है।

तराकीब की चुस्ती, मानी-ओ-अलफ़ाज़ की हमआहनगी, अलफ़ाज़ की तरतीब-ओ-नशिस्त, अन्दाज़-ए-बयाँ की रवानी-ओ-मोसिक़ी और तरज़-ए-सुख़न की हमवारी, ये तमाम चीज़ें, ज़ाहिर है कि मश्शाक़ी के नुक़्ता-ए-उरूज़ पर पैदा होती हैं। ज़िया साहिब नौजवान हैं और नौमश्क़ इस लिए मौजूदा हालात में उन से मनदरजा-ए-बाला महासिन की तवक़्क़ो रखना क़बल अज़ वक़्त है लेकिन उन की नज़्मों के तेवर साफ़ बता रहे हैं कि अगर उन की मश्क़ इसी तरह जादा-ए-सही पर गामज़न रही और उन में वो पिन्दार-ए-कलाम पैदा न हो गया जो अकसर-ओ-बेशतर उन के से तब्बाअ और ख़ुशगो शोअरा अहबाब की तहसीन-ओ-आफ़रीं से पैदा हो जाया करता है तो ये एक यक़ीनी बात है कि वो हिन्दुस्तान के मुमताज़ शोअरा में से शुमार होने लगेंगे।

ज़िया साहिब ने, इस में कोई शक नहीं, एक सही रास्ता इख़्तियार किया है, लेकिन मैं उन्हें मतला कर देना चाहता हूँ कि उन की राह में एक पत्थर है और वो है नौजवानी के बावस्फ़ उन की सादगी और सलामतरवी

जिस पर निगाह करके ये ख़याल पैदा होता है कि वो अपने शबाब और मौसम के साथ ख़ुलूस नहीं रखते हैं। हरचन्द ये ख़ुशी की बात है कि अब तक ऐसी कोई शहादत फ़राहम नहीं हुई है जिससे ये साबित होता कि वो अपनी जवानी और अपने मौसम के, बाज़ दीगर "सालेह" नौजवानों की तरह, बाग़ी भी हैं फिर भी अपने फ़स्ल-ए-बहार से ख़ुलूस न रखना एक ऐसी चीज़ है जो शायर के अदबी मुस्तक़बिल को बेस्वाद बना देने की धमकी देती रहती है।

बहरहाल ये एक निहायत ही बारीक क़िस्म की मोशिगाफ़ी है जिस पर मैं सर-ए-दस्त ज़ोर देना पसन्द नहीं करता क्यूँकि हनूज़ इस का इमकान बाक़ी है कि ज़िया साहिब ख़ुद ही अपनी राह के पत्थर को हटा कर अपने शबाब से मुसालहत कर लें।

जहाँ तक ज़िया साहिब के कलाम का ताल्लुक़ है मैं दोबारा अर्ज़ करूँगा कि वो हर तरह इस के मुस्तहिक़ हैं कि हिन्दुस्तानी ज़ुबान के क़द्रदान उसे हाथों हाथ लेकर उनकी हिम्मतअफ़ज़ाई करें और ख़ास तौर से उन्हें मुबारकबाद दें कि फ़रसूदा-ओ-नक़्क़ाली शायरी के माहौल में रहते हुए उन्होंने वो राह इख़्तियार की है जो हक़ीक़ी-ओ-फ़ितरी और ज़िन्दगी से हमआहन्ग है।

कुव्वत-ओ-हयात उन्हें ता देर सलामत रखे और वो उस मँज़िल को पालें जिसका रास्ता उन्हें मिल गया है।

ई दुआ अज़ मन ओ अज़ जुमला जहाँ आमीन बाद।

देहली जोश मलीहाबादी

18 अक्तूबर 1937 एडिटर "कलीम"

(2)

हज़रत ज़िया मेरे क़दीम अहबाब में से एक हैं। उनकी शख़्सियत-ओ-शायरी से मैं हमेशा मानूस रहा हूँ।

उनकी शायरी में सनजीदगी है, उनकी तर्ज़-ए-बयाँ में रस और घुलावट पाई जाती है। ये आम शोअरा की मानिन्द, रदीफ़ और क़ाफ़िये के हदूद में रह कर रिवायती शायरी से हमेशा दामन बचाते और उरूस-ए-शेअर को अपने तख़ैय्युल के ज़ेवरों से सजाते हैं।

ये बड़ी बदबख़्ती है कि ज़िया साहिब बै।क के दामन-ए-ख़ुश्क से वाबस्ता हैं जहाँ रूपये, आने, पाई के हिसाबात से दिमाग़ को फ़ुरसत नहीं मिलती, और मेरा ख़याल है कि अगर उनको क़ुदरत इस क़दर मज़बूत दिल-ओ-दिमाग़ अता न फ़रमाती तो वो नामोज़ूँ हो कर रह जाते। ये

दरअसल एक मोजज़ा है कि वो उस झुलसा देने वाले माहौल में रह कर नसीम-ओ-शमीम से खेलते रहते हैं।

मेरी दिली तमन्ना है कि अरबाब-ए-ज़ौक़ उनके मरतबा-ए-सुख़न को सराहें और उन की शायरी को सरआँखों पर बिठाऐं।

24 मई 1965 जोश

देहली शरीफ़

(3)

मेहर लाल साहिब ज़िया मेरे क़दीम अहबाब में से हैं यानी इतने पुराने दोस्त हैं कि अगर कोई इतना पुराना दुश्मन मिल भी जाए तो उस को कलेजे से लगा लेना चाहिए।

रही ज़िया साहिब की शायरी, सो इस के बारे में सिर्फ़ इस क़दर कह सकता हूँ कि उन के कलाम में जो ख़ुशगवार सनजीदगी, लोच और रस पाया जाता है वो इस क़दर दिलनशीं होता है कि रूह वज्द करने लगती है। मेरी दिली तमन्ना है कि उनके कलाम की अरबाब-ए-अदब-ओ-इलम क़दर करें उसे सरआँखों पर जगह दें।

(तिमाही "तहरीर" 1977 से) जोश मलीहाबादी

ताब-ए-नज़र अगर हो तमाशा करें कलीम

अब हर तरफ़ ज़िया ही ''ज़िया'' अन्जुमन में है

– ज़िया फ़तेहाबादी

ताब-ए-नज़र अगर हो.....

मैंने जब यह जानना चाहा कि हमारा कपिल गोत्र का क्षत्रिय सोनी परिवार पँजाब प्राँत के तरन तारन शहर के नज़दीक फ़तेहाबाद आकर कब और क्यूँकर बसा तब मेरे पिता मेहर लाल सोनी जी ने बताया था कि कभी मुग़ल बादशाह शाहजहाँ के समय में हमारे पूर्वज जो कहीं राजस्थान में (शायद जोधपुर के क़रीब) रहा करते थे किसी वजह उस जगह को हमेशा के लिए छोड़ कर सपरिवार उत्तर दिशा की ओर कूच कर गए थे और आख़िर फ़तेहाबाद जा बसे। उनका नाम क्या था और वह क्या करते थे यह जानकारी तो मुमकिन न हो सकी लेकिन हमें हरिद्वार जाकर मालूम हुआ कि विक्रमी सन 1773 में हमारे एक पूर्वज लाला बादल दास सोनी के पौत्र व लाला बदरी दास सोनी के पुत्र लाला तनसुख राय सोनी फ़तेहाबाद से हरिद्वार आए थे। उस वक़्त उनकी उम्र क्या थी यह तो न जाना जा सका फिर भी लाला तनसुख राय के पुत्र श्री अमोलक राम सोनी लाला लड्ढा मल के पिता थे और लड्ढामल जी के पुत्र श्री मूल राज सोनी लाला ज्योति राम के। मेरे दादा श्री मुँशी राम, शाह जी ताराचन्द सोनी के पुत्र और लाला ज्योति राम के पौत्र थे। मुँशी राम सोनी जी का जन्म ईस्वीं सन 1883 में और देहान्त सन 1969 में हुआ था, वह

एक सिविल इन्जीनियर थे जिनका विवाह कपूरथला के श्री मूल राज पुरी की पुत्री शँकरी देवी के साथ हुआ था। मेरे पिता मेहर लाल सोनी जी का जन्म सुबह के वक़्त 9 फरवरी सन 1913 को उनके मामा लाला शँकर दास पुरी के मकान में कपूरथला में ही हुआ।

मेहर लाल सोनी जी का उर्दू शायरी का सफ़र आप की माता जी की निगरानी में और मौलवी असग़र अली हया जयपुरी की मदद से सन 1925 में शुरू हुआ, तब आप जयपुर के महाराजा हाई स्कूल के छात्र थे। हया साहिब ने आप को ''अता'' तख़ल्लुस दिया मगर आपकी एफ़.ए. की पढ़ाई हिन्दू सभा कालेज, अमृतसर, के दौरान आपका संपर्क डाक्टर शफ़ाअत अहमद तसनीम के द्वारा जनाब ग़ुलाम क़ादिर फ़रख़ अमृतसरी से हुआ और आप उनके शार्गिद बन गए। इन्हीं फ़रख़ साहिब ने आप का तख़ल्लुस ''अता'' से बदल कर ''ज़िया'' कर दिया था। मगर यह रिश्ता ज़्यादा देर नहीं चला क्यूँकि सन 1930 में ज़िया साहिब आगरा निवासी अल्लामा आशिक़ हुसैन सिद्दिकी सीमाब अकबराबादी के शार्गिद बन गए। ख़ुद सीमाब साहिब सन 1898 में जनाब सख़ा देहलवी की सलाह पर मिर्ज़ा दाग़ देहलवी के शार्गिद बन गए, तब सीमाब साहिब सिर्फ़ अठारह बरस की उम्र के थे। ज़िया साहिब

की कही गई कोई ग़ज़ल पहली बार अप्रेल 1929 के ''चमन'' में छपी थी। सन 1931 से लेकर सन 1935 तक आप फ़ारमेन क्रिश्चन कालेज, लाहौर, में पढ़े जहाँ से आपने बी.ए. (आनर्स) फ़ारसी, और एम.ए. अँग्रेजी की डिगरियाँ हासिल कीं। इसी दौरान आपकी मुलाक़ात जनाब शब्बीर हुसैन जोश मलीहाबादी और जनाब समदयार ख़ाँ साग़र निज़ामी से हुई थी और उन से एक ऐसा रिश्ता बना जो उम्र भर दोनों ओर से ख़ूब निभाया गया। हमारे घर इनका आना-जाना कई बरसों तक चला। उर्दू अफ़साना निगार कृष्ण चँद्र इसी कालेज में ज़िया साहब से एक साल सीनियर थे और अँग्रेज़ी में कहानियाँ लिखा करते थे। जब ज़िया साहिब कालेज मैगज़ीन के एडिटर बने तब आपने कृष्ण चँद्र का पहला उर्दू अफ़साना ''साधू'' सन 1932 में छपवाया था। सीमाब साहिब के बड़े बेटे, मन्ज़र सिद्दिकी का आगरा से लाहौर जाना अकसर हुआ करता था, उन्हीं के साथ आप एक-दो बार अल्लामा मुहम्मद इक़बाल से मिले जो उन दिनों बहुत बीमार रहा करते थे। लाहौर में ही आपकी श्री रबीन्द्र नाथ टैगोर से और सरोजनी नाइडू से पहली मुलाक़ात हुई थी।

सन 1934 में सीमाब साहिब के चहेते शार्गिद जनाब साग़र निज़ामी ने मेरठ से ज़िया साहिब के कहे क़तों का संग्रह ''तुलू'' नाम से प्रकाशित

किया जो ज़िया साहिब की कविताओं का पहला संग्रह साबित हुआ। उसके बाद सन 1937 में आपकी कही गई कविताओं का दूसरा संग्रह ''नूर-ए-मशरिक़'' देहली से प्रकाशित हुआ और तीसरा ''ज़िया के सौ शेयर'' उसके अगले साल। सन 1952 में आपकी कविताओं का एक और संग्रह ''नई सुबह'' और सन 1963 में ''गरद-ए-राह '' देहली से प्रकाशित हुआ। आपकी ग़ज़लों का संग्रह ''हुस्न-ए-ग़ज़ल'' जनाब मेअराज मित्तल साहिब ने सन 1964 में अम्बाला में छापा था। सन 1980 में देहली से आपकी कही गई ग़ज़लों का संग्रह ''रँग-ओ-नूर'' प्रकाशित हुआ। इस बीच सन 1977 में ग़ज़लों का संग्रह ''धूप और चाँदनी'' लंदन (यू.के.) में छप चुका था, बाद में आप के उर्दू अफ़साने ''सूरज डूब गया'' के नाम से सन् 1981 में और नज़्में ''सोच का सफ़र'' के नाम से सन 1982 में लंदन से ही प्रकाशित हुईं। इन संग्रहों के अलावा बीस उर्दू शोअरा पर लिखे आपके लेख ''ज़ावियाहा-ए-निगाह'' के नाम से सन 1984 में और आप के पचीस ख़ुतबात-ए-सदारत ''मसनद-ए-सदारत से'' के नाम से सन 1985 में सामने आए। आपने अपने उस्ताद के अपने नाम लिखे ख़तों का संग्रह ''सीमाब ब नाम-ए-ज़िया'' सन 1981 में प्रकाशित किया और सन् 1985

में अपने उस्ताद की जीवनी और शायरी का ज़िक्र ''ज़िक्र-ए-सीमाब'' के नाम से किया।

ज़िया साहिब का स्वर्गवास दिनाँक 19 अगस्त सन 1986 को रक्षा-बँधन के दिन हुआ। उनकी याद में अनेक शोक सभाऐं कई शहरों में हुईं। अनेक अदीबों ने अपने लेख और शायरों ने नोहे और क़ता-ए-तारीख़ पढ़े। मैं यहाँ जनाब साहिर होशियारपुरी का कहा क़ता बरवफ़ात जनाब ज़िया फ़तेहाबादी पेश कर रहा हूँ -

जो कर सको न बयाँ तुम बा सूरत-ए-अलफ़ाज़
फ़साना-ए-ग़म-ए-हस्ती बा चश्म-ए-नम कह लो
ज़ुबान-ओ-फ़्रिक-ओ-तख़ैय्युल जो साथ दे न सके
तो ''दिल'' को साथ मिलाकर ''ग़म-ए-ज़िया सह लो''

(34)   +   (1952) =   1986

(बीसवीं सदी अक्टूबर 1986 से)

पिताजी के देहान्त के बाद सन 1987 में उनकी ग़ज़लों का एक और संग्रह ''नर्म गर्म हवाऐं'' उर्दू अकादमी, देहली, की मदद से प्रकाशित हुआ जो संग्रह उनके घनिष्ट मित्र ओम प्रकाश बजाज जी ने तैयार किया था।

ग़ौर तलब है कि ज़िया साहिब की जीवनी और शायरी पर नागपुर की डाक्टर ज़रीना सानी का एक रिसर्च सन 1979 में ''बूढ़ा दरख़्त'' के नाम से प्रकाशित हुआ था इससे पहले इल्मी मजलिस, देहली, ने अपना तिमाही ''तहरीर'' का जुलाई-सितँबर 1977 का नम्बर किताबी सूरत ''ज़िया फ़तेहाबादी-शख़्स और शायर'' के नाम से एक ख़ास इश्यू निकाला था। ग़ौर तलब यह भी है कि सन 1990 में धूलिया के जनाब शब्बीर इक़बाल ने मुंबई यूनिवरसिटी से अपनी थीसिस ''आनजहानी मेहर लाल सोनी ज़िया फ़तेहाबादी-हयात और कारनामे'' पर पीएच.डी. की डिगरी हासिल की जो काम उन्होंने डाक्टर आदम शेख़ (चेयरमेन, बोर्ड आफ स्टडीज़ इन उर्दू) की ज़ेर-ए-निगरानी मुकम्मल किया और सरपरस्त थे अन्जुमन-ए-इस्लाम, मुंबई, के डाक्टर फ़रीद शेख़।

ज़िया साहिब के बारे में आप के उस्ताद अल्लामा सीमाब ने ''शायर'', आगरा, के मार्च 1934 के इश्यू में लिखा है - ''ज़िन्दगी की दुश्वार गुज़ार घाटियों में जहाँ मुशाहदात के लिए कोई रास्ता नहीँ ज़िया साहिब का ज़ुल्मत शिगाफ़ ज़मीर-ओ-ज़हन बड़ी आसानी से पहुँच गया है और वहाँ पहुँचकर जो दर्स-ओ-प्याम उन्होंने आज़ादी के साथ दिया है वही हक़ीक़त में उनका

असली काम है।'' यह सच्च है कि ज़िया साहिब का कलाम हर उर्दू अदीब ने अपने तौर से परखा और सराहा है, उनका कलाम उनकी केरेक्टर की बुलन्दी का सबूत है, नाम-ओ-नुमूद से उन्हें हमेशा नफ़रत रही। उनके कलाम के बारे में श्री रघुपति सहाय फ़िराक़ गोरखपुरी ने लिखा है- ''कई मुक़ामात पर मुफ़क्किराना और शायराना अन्दाज़ के इम्तिज़ाज ने मुझे बहुत लुत्फ़ दिया। आपकी शायरी बिलकुल नक़्क़ाली या तक़लीद नहीं। इसमें ख़ुलूस है और कहीं रँगीन सादगी है। कहीं सादा और दिलकश रँगीनी, तरन्नुम और रवानी और एक हस्सास सलामतरवी इसकी ख़ास सिफ़तें हैं।'' जनाब मन्सूर अहमद, एडिटर, अदबी दुनिया, लाहौर, लिखते हैं - ''ज़िया एक हक़ीक़ी शायर हैं और जो कुछ उन्होंने कहा है उसे उन्होंने महसूस भी किया है और सोचा भी है। इसीलिए उनके कलाम में सनजीदगी और असर की फ़रावानी है। उनका ज़ौक़ बुलन्द है और ज़ुबान निहायत पाकीज़ा और सही।'' दया नारायण निग़म लिखते हैं- ''ज़िया के कलाम में लफ़्ज़ों की तरतीब, तरकीबों की चुस्ती, बयान की रवानी वग़ैरा इस क़दर पुरलुत्फ़ है कि ख़्वामख़्वा दाद निकलती है।'' जैसा कि जनाब एजाज़ सिद्दिकी ने लिखा है- ''ज़िया फ़तेहाबादी का नाम सन 1929 ही में उभरने लगा था। ....ग़ालिबन

उनकी शायरी की इब्तदा नज़्मनिगारी से हुई .. ज़िया का रूजहान नेचुरल शायरी की तरफ़ रहा है। ....(उनकी) नज़्मों से एक रचा हुआ जौक़ आश्कार है। ...... अपने गीतों की तरह नज़्मों में भी उन्होंने नर्म हिन्दुस्तानी लफ़्ज़ियात से काम लिया है।'' तो ज़ाहिर है डाक्टर ख़्वाजा अहमद फ़ारूकी ख़ुद को यह लिखते रोक न सके कि ज़िया ने अपनी शायरी के ज़रिए अच्छी क़दरों की इशाअत की है, उस में इज़्हार-ए-क़ुव्वत भी है और लताफ़त भी, उनके यहाँ बयान-ए-शौक़ की बेबाकी के साथ इन्सानियत की हिनाबन्दी का नर्म नर्म अहसास भी है, उनके यहाँ जज़्बात की घनगरज नहीं है नफ़ासत और नज़ाकत है इसीलिए उन के लब-ओ-लहजे में दिलआसाई और मिठास है, और उनकी शायरी में पुरकारी और सरशारी है।

ज़िया साहिब के नज़दीक सब से ऊपर मीर तक़ी मीर और मिर्ज़ा ग़ालिब थे और उनके बाद मोमिन ख़ाँ मोमिन। उनके महबूब तरीन शायर मुहम्मद इक़बाल, अल्ताफ़ हुसैन हाली, सीमाब अकबराबादी, यास यगाना चँगेज़ी, फ़ानी बदायुनी और फ़िराक़ गोरखपुरी थे। आपका यह मानना था कि अज़्मत के लिए मुसन्निफ़ को ज़्यादा अहमियत नहीं देना चाहिए। देखना यह चाहिए कि शायर क्या कहना चाहता है और कैसे कहना चाहता है अगर

वो इस में कामयाब हो जाए तो वह बड़ा शायर है। ज़िया साहिब नज़रियाती शायरी के क़ायल नहीं थे और जमालियाती कैफ़ को शायरी के लिए ज़रूरी समझते थे। आपका कहना था कि आप भी औरों की तरह हसीन चेहरों से मसरूर होते रहे इतना कि आपका रूमानी तख़ैय्युल का पैकर आपके साथ ही एफ़.सी.कालेज, लाहौर, में पढ़ने वाली मीरा नाम की एक बँगाली लड़की बनी। आपकी कई नज़्मों में उसका नाम आता है। यहाँ तक कि आपके बहुत ही नज़दीकी दोस्त उर्दू के मशहूर शायर मोहम्मद सनाउल्लाह दर मीराजी ने उसी लड़की के नाम पर अपना शेयरी नाम रखा था। शायद मीरा ही एक वजह थी कि आपका मीरा जी साहिब के साथ तमाम उम्र एक गहरा संबंध क़ायम रहा।

मालिक राम जी ने लिखा है कि मीरा जी को ज़िया साहिब की आज़ाद नज़्में और ग़ज़लें बहुत पसन्द थीं और ज़िया साहिब की पाबन्द नज़्मों को पढ़कर माहिरउलक़ादरी साहब के ज़हन में चकबस्त साहिब की याद ताज़ा हो गई थी। साग़र निज़ामी ने ज़िया साहिब को एक अन्दलीब-ए-ख़ुशनवा जाना जिस का दिल अछूते नग़मों की एक लाज़वाल दुनिया है और जिसकी ख़ामोशी एक अज़ीम गोयाई का मुक़दमा मालूम होती

है। अब्र अहसनी साहिब के मुताबिक़ ....''ज़िया मामूली शायर नहीं हैं। वो हर बात बहुत बुलन्दी से कहते हैं। उनकी ज़ुबान शुस्ता-ओ-पाकीज़ा और ख़यालात लतीफ़ हैं। दिल में जज़्बा-ए-हमदर्दी-ए-इन्साँ बेपायाँ है और ऐसा ही शायर मुल्क-ओ-क़ोम के लिए बाइस-ए-फ़ख़्र हुआ करता है।''

मेहर लाल सोनी ज़िया फ़तेहाबादी साहिब मेरे पिता और मेरे गुरू भी थे। आपने मुझे सही सोच-समझ के तरीक़े बताए, मेरे भीतर के सोए हुए ''मैं'' को जगाया व उकसाया और मुझे इस क़ाबिल बनाया कि मैं अकेला ही ख़ुद को अपने बाहर और भीतर आनँद की तलाश में खो सकूँ, ऐसा खो जाऊँ जैसे पानी की एक बूँद सागर की आग़ोश में आ हमेशा के लिए समा जाती है कभी जुदा न होने के लिए।

देहली **रविन्द्र कुमार सोनी**

22 नवम्बर, 2010

अज़ल में जब हुई तक़सीम-ए-आलम-ए-फ़ानी

बतौर-ए-ख़ास मिला सोज़-ए-जाविदाँ मुझ को

– ज़िया फ़तेहाबादी

कर दिया मुझ से हमकलाम मुझे

आइने मेरे हमज़ुबाँ निकले

– ज़िया फ़तेहाबादी

छटपटा वक़्त ठँडी ठँडी हवा
आस्माँ पर ख़िराम बादल का
जान–ओ–दिल को ख़रीद लेती है
ऐसे आलम में बाँसुरी की सदा

दौर–ए–मय जाम–ए–अरग़वानी है
सुहबत–ए–ऐश–ए–जाविदानी है
क्या डराता है मुझको, ऐ वाइज़
मैं जवाँ हूँ मेरी जवानी है

सुबह मशरिक़ से आफ़ताब आया
दौर - ए - बेदार हमरक़ाब आया
ख़्वाब–ए–ग़फ़लत से आँख खोल,“ज़िया”
देख दुनिया में इन्क़लाब आया

इक तरफ़ ख़ारज़ार इसियाँ का
इक तरफ़ बाग़ दीन–ओ–ईमाँ का
कारगाह–ए–जहाँ में शाम–ओ–सहर
इम्तिहाँ हो रहा है इन्साँ का

शम्अ-ए-अहसास जलती रहती है
आग दिल में सुलगती रहती है
लब पे आता नहीं कोई शिकवा
चुपके चुपके पिघलती रहती है

है मुख़ालिफ़ अगर जहाँ फिर क्या
तेग़ बरसर है आस्माँ फिर क्या
पाँव मेरे न डगमगाऐंगे
सख़्त मुश्किल है इम्तिहाँ फिर क्या

देखकर बेनक़ाब जलवा-ए-नूर
हो गया था सियाह दामन-ए-तूर
इस से साबित हुआ कि दुनिया में
ज़ुल्मतें भी हैं नूर में मस्तूर

कुन्ज-ए-ख़लवत में, नर्म पत्तों से
चाँदनी यूँ निखर के आती है
जैसे सिमटी हुई उरूस-ए-नौ
सर से पा तक सँवर के आती है

पुरसुकून-ओ-ख़मोश लम्हों में
याद अब भी किसी की आती है
जैसे पुरहौल तीरह रातों में
सनसनी दिल में तैर जाती है
सोचता हूँ कि क़िस्मत-ए-इन्साँ
बेबसी और बन्दगी क्यूँ है
शौक़-ओ-उम्मीद के तलातुम में
मौत अन्जाम-ए-ज़िन्दगी क्यूँ है
चाहता हूँ समझ सकूँ तुझ को
ख़ुद को पहचानता नहीं हूँ मैं
अक़्ल महदूद, इश्क़ लामहदूद
ये अभी जानता नहीं हूँ मैं
चाँदनी में धुली हुई दुनिया
ऐसी है जैसे इक अजीब ख़याल
जैसे गोशे में ज़हन-ए-शाइर के
एक नादीदा शक़्ल के ख़द-ओ-ख़ाल

ना उम्मीदी है बेक़रारी है
दिन पहाड़ और रात भारी है
लेकिन इस पर भी लुत्फ़ ये है ज़िया
ज़िन्दगी जान से भी प्यारी है

तजरबा एक बार कर देखो
दिल को बेइख़्तियार कर देखो
मुझसे क्या पूछते हो हाल-ए-फ़िराक़
एक दिन इन्तिज़ार कर देखो

पस्ती को बुलन्दी से मिलाया हम ने
ज़ररों को जहाँताब बनाया हम ने
इक जुरआ-ए-सहबा-ए-बग़ावत की क़सम
तारों से हिजाब-ए-नूर उठाया हम ने

ज़ुल्मत के बग़ैर नूर पाएगा कहाँ
ख़्वाबों के हसीं क़िले बनाएगा कहाँ
धरती की कशिश से बच निकलने वाले
जज़्ब-ए-उलफ़त से बचके जाएगा कहाँ

काम शाम-ओ-सहर है मस्ती से
मैं हूँ आज़ाद रँज-ए-हस्ती से
क्यूँ मैं ऐ फ़िक्र-ए-बातिल-ए-फ़रदा
बाज़ आ जाऊँ मय परस्ती से

जब जहाँ महव-ए-ख़्वाब होता है
बेच कर अक़्ल-ओ-होश सोता है
मौत दुनिया पे देखकर तारी
मैं भी रोता हूँ दिल भी रोता है

रात उफ़ किस क़दर है ज़ुल्मतकोश
हैबत अफ़ज़ा डरावनी ख़ामोश
दूर इस वक़्त गा रहा है कोई
मैं सरापा बना हुआ हूँ गोश

उमड़ा हुआ बादल शब-ए-गेसू पे निसार
जज़्बात का फैलाओ जवानी का उभार
आँखों में टपकते हुए अँगूर का रस
गालों पे दमकते हुए फूलों का निखार

सँगम पे तुलू-ए-सुबह मस्ती का समाँ
अठखेलियाँ करती हुई अम्वाज-ए-रवाँ
आकाश पे बुझते हुए तारों के चिराग़
सूरज की बढ़ाता हुआ लौ हुस्न-ए-जवाँ
बारिश है कि होती ही चली जाती है
हसरत दीदार की रही जाती है
ऐ साक़ी-ए-मस्त मेरी जानिब भी बढ़ा
वो आग पियालों मे जो पी जाती है
मस्ती-सी फ़िज़ा में छा गई हो जैसे
लौ शम्अ की थरथरा गई हो जैसे
तकते हुए रास्ता किसी महरू का
दीवाने को नींद आ गई हो जैसे
आज़ाद हुए थे कि जुनूँ ने घेरा
डाला ग़म-ओ-अन्दोह ने हर सू डेरा
तहज़ीब को क़ुरबान किया मज़हब पर
कुछ इस में मेरा क़सूर है कुछ तेरा

फैला के तेरे हुज़ूर बाहें यारब
लेता है मुक़द्दर की पनाहें यारब
इन्सान अभी तक है जहालत का शिकार
दे इस को बसीरत की निगाहें यारब

अब मज़हब-ओ-मिल्लत का ख़ुदा ख़त्म हुआ
बेचारा ज़रूरत का ख़ुदा ख़त्म हुआ
देता था जो इन्सान को जन्नत का फ़रेब
वो दौर-ए-जहालत का ख़ुदा ख़त्म हुआ

साक़िया मुझको साग़र-ए-मय दे
जिसकी क़ीमत नहीं है वो शय दे
बदलियाँ घिर कर आई हैं सर-ए-कोह
तेरी आँखों में जो भरी है दे

आरज़ू का न ख़ून कर साक़ी
दिल दुखाने से कुछ तो डर साक़ी
देख घँघोर वो घटा आई
ला सुराही पियाला भर साक़ी

मुँह अश्कों से धोना भी न आया मुझको
दामन को भिगोना भी न आया मुझको
बेदाद-ए-जहाँ सह गया हँसते हँसते
रोता हूँ कि रोना भी न आया मुझको

तमहीद ही इन्तेहा फ़साने की है
ये रस्म-ए-क़दीम खोने पाने की है
हस्ती है नेस्ती अदम मेरा वुजूद
आना मेरा दलील जाने की है

आवाज़-ए-जुनूँ फ़ितना-ए-फ़रियाद सही
इख़लास-ओ-वफ़ा की दाद बेदाद सही
रखता हूँ निगाह अपने मुस्तक़बिल पर
माज़ी मेरे इमरोज़ की बुनियाद सही

तदबीर का हर रँग निखारा मैंने
तक़दीर की ज़ुल्फ़ों को सँवारा मैंने
दैर और हरम से बच के ऐ मअबद-ए-हुस्न
ख़ुश हूँ कि लिया तेरा सहारा मैंने

चलता है तो आँधियों पे बन आती है
रुकता है तो कायनात थम जाती है
ये तेरा ही जज़्बा-ए-अमल है ऐ दिल
तदबीर जो तक़दीर से टकराती है

यूँ उक़दे हयात के कहीं खुलते हैं ?
बेसई-ओ-अमल नहीं खुलते हैं
उठती है जहाँ हुस्न के चेहरे से नक़ाब
असरार शबाब के वहीं खुलते हैं

बादा में मता-ए-होश घोली है कभी
अश्कों से जबीन-ए-शौक़ धोली है कभी
हर ज़र्रें में सद हज़ार सूरज रोशन
ऐ तालिब-ए-दीद आँख खोली है कभी

हर रोज़ नया गुनाह करता हूँ मैं
हर जादा-ए-इसियाँ से गुज़रता हूँ मैं
मरने का मुझे ख़ौफ़ नहीं है लेकिन
आमाल के अन्जाम से डरता हूँ मैं

साँचे में ख़ला के हमने गेंदें ढ़ालीं
मेहर-ओ-माह-ओ-अन्जुम पे कमन्दें डालीं
धरती ने, फ़लक ने, नूर ने, ज़ुल्मत ने
इन्सान की इरतिक़ा की क़समें खा लीं

है फ़रश से ता बा चर्ख़ दीपों की क़तार
निखरा हुआ रँग-ए-गुल है रक्साँ है बहार
ज़ुल्मतकदा-ए-दिल मेरा रोशन हो जाय
आ जाओ जो दीवाली का तुम बन के सिँघार

परदा रुख़-ए-गीती से उलटना है मुझे
हर नूर से ज़ुल्मत से निमटना है मुझे
ऐ पीर-ए-मुगाँ बादा-ए-रँगीं की क़सम
आख़िर तेरी जानिब ही पलटना है मुझे

उलफ़त की हक़ीक़त से फ़साना बहतर
ये होश है तो होश गँवाना बहतर
जिस से न शगुफ़ता हो मेरे दिल की कली
उस हँसने से तो अश्क बहाना बहतर

उठ साक़ी-ए-मयख़ाना मुझे जाम पिला
दीवाना हूँ दीवाना मुझे जाम पिला
मैं ज़ुहद-ओ-इबादत की हदें तोड़ चुका
काबा है न बुतख़ाना मुझे जाम पिला

दे मय कि है दो रोज़ बहार-ए-हस्ती
दे मय कि है दुनिया में बुलन्दी पस्ती
दे मय कि हर इक ज़र्रा हो ख़ुरशीद जमाल
दे मय कि दवाम हो मज़ाक-ए-मस्ती

मैं हाल की ज़ुल्फ़ों के फ़साने बुन लूँ
फ़रदा की हवाओं के तराने सुन लूँ
ऐ वक़्त ज़रा थम कि किनार-ए-दिल से
भूले हुए रँगीन ज़माने चुन लूँ

गरदूँ पे घटा तुली हुई है अब तक
नशे में फ़िज़ा घुली हुई है अब तक
शब ख़त्म हुई हुस्न के शानों पे मगर
ज़ुल्फ़ों की गिरह खुली हुई है अब तक

आफ़ात से हम नहीं हैं डरने वाले
ज़ुल्मात से हम नहीं है डरने वाले
गरदिश में ज़मीन-ओ-आस्माँ हैं पैहम
दिन रात से हम नहीं हैं डरने वाले

ज़िन्दगी नज़र-ए-जाम-ए-उलफ़त है
ये भी मिल जाए तो ग़नीमत है
इशरत-ए-जान-ओ-दिल समझ इसको
वरना दुनिया नहीं मुसीबत है

धोका है फ़रेब है ये हस्ती क्या है
बेगानगी होश है तो मस्ती क्या है
है और नहीं की कशमकश है अबदी
इन्सान की वेहम परस्ती क्या है

शब-ए-ग़म पुरउम्मीद होती है
दिल तड़पता है आँख रोती है
तारे मुझसे कलाम करते हैं
चाँदनी मेरे साथ सोती है

ज़िन्दगी क्या है कोई क्या समझे
आगही क्या है कोई क्या समझे
आदमी   जब नज़र नहीं आता
आदमी क्या है कोई क्या समझे

मिल जाए अगर ख़ुदा मुझे तो पूछूँ
रिन्दों के ख़िलाफ़ है तेरा ज़ाहिद क्यूँ
दोज़ख़ भी तेरी है जन्नत भी तेरी
चाहूँ मैं किसे और न किस को चाहूँ

बिखरी हुई ज़ुल्फ़ों में गुल-ए-तर की महक
बहकी हुई आँखों में सितारों की चमक
अहसास-ए-शबाब से धड़कता हुआ दिल
भीगी हुई सारी में शरारों की लपक

शफ़फ़ाफ़ फ़िजाएँ गुनगुनाती लहरें
अन्गड़ाईयाँ लेती वो कँवल की शाख़ें
इक ख़ास हया के साथ रस की पुतली
उतरी है नहाने पाक सँगम जल में

फ़ायदा क्या तुम्हारे डरने से
रात-दिन आह-ए-सर्द भरने से
हाथ पर हाथ रक्खे बैठे हो
कुछ नहीं होता कुछ न करने से

मेरी आँखों का नूर छीन लिया
मेरे दिल का सरूर छीन लिया
बहुत अच्छा किया फ़रिश्ता-ए-मौत
आदमी का ग़ुरूर छीन लिया

चाँद अब भी तुलूअ होता है
दिल में रूमान-ए-ग़म समोता है
तू नहीं तो बग़ैर तेरे यहाँ
चैन की नीदँ कौन सोता है

मँज़िलें हैं अभी तो और बहुत
एक मँज़िल को पा लिया भी तो क्या
दिल में है दर्द की कसक बाक़ी
तुझको अपना बना लिया भी तो क्या

सूरज को निकलते हुए मैंने देखा
शोलों को उबलते हुए मैंने देखा
फूलों के दमकते हुए रुख़सारों पर
शबनम को मचलते हुए मैंने देखा

अन्जुम-ओ-माह कहाँ तक देखूँ
असर-ए-आह कहाँ तक देखूँ
कब तक आओगे ये मालूम तो हो
इस तरह राह कहाँ तक देखूँ

फूलों को महकते हुए पाया मैंने
बुलबुल को चहकते हुए पाया मैंने
जब आँख खुली तो सोज़-ए-उलफ़त
सीनों को दहकते हुए पाया मैंने

महन्दी रचे हाथ सुर्ख़ चूड़े की ख़नक
माथे पे हया के खिलते फूलों की दमक
गठजोड़ा किए खड़ी है गोरी जल में
कहती है ''रहे सुहाग, हूँ मैं जब तक''

पलकों के तवील और बोझल साए
नयनों के दियों से नूर हस्ती पाए
वो नर्म बदन का लमस वो हुस्न-ए-शबाब
सँगम की रवानियों को नींद आ जाए
मुफ़लसी का गिला करूँ, तौबा !
बेबसी का गिला करूँ, तौबा !
बेवतन हूँ, वतन से कोसों दूर
फिर किसी का गिला करूँ, तौबा !
मुरझाने को गुलशन में कली खिलती है
खोने को समुन्दर से नदी मिलती है
रोता हूँ तो होती है शगुफ़्ता ख़ातिर
हँसता हूँ तो कायनात-ए-दिल हिलती है
पसमुरदा गुलों से अपना दामन भर लूँ
बुलबुल की हसीं मौत का मातम कर लूँ
मैं दौर-ए-बहार को कर लूँ रुख़सत
फिर दौर-ए-ख़िज़ाँ को भी सर आँखों पर लूँ

दास्तान-ए-अलम सुना दूँगा
दाग़ हाए जिगर दिखा दूँगा
वक़्त का इन्तिज़ार है मुझ को
परदा-ए-राज़ ख़ुद उठा दूँगा

तक़दीर से तदबीर का सौदा कर लूँ
इन्सान की कुव्वतों को यकजा कर लूँ
ऐ नूर-ए-सहर, बढ़ते हुए सैल-ए-हयात
छुपते हुए तारों का तमाशा कर लूँ

बेख़ुदी में असीर रहता हूँ
ग़म को शादी समझ के सहता हूँ
लोग जिस को फ़िराक़ कहते हैं
मैं उसी को विसाल कहता हूँ

सर सब्ज़ है गुल्ज़ार-ए-जहाँ अब्र-ए-करम से
हर फूल यहाँ का है हसीं बाग़-ए-इरम से
बेजिस्म भी, बाजिस्म भी है, तेरी तजल्ली
ये राज़ खुला सैर-ए-कलीसा-ओ-हरम से

है इन्सान मुजस्सिम कमाल-ए-इलाही
अमीन-ए-सिफ़ात-ओ-जलाल-ए-इलाही
निगाह-ए-बसीरत से कर ग़ौर, ग़ाफ़िल !
तुझी में छुपा है जमाल-ए-इलाही

जिधर भी मोड़ दे रुख़ वक़्त की रफ़्तार का, बर हक़ है
यहाँ भीडें ही भीड़ेँ हैं, लकीरी की फ़क़ीरी है
मेरी आवारगी दरअसल है पैग़ाम-ए-आज़ादी
कि पाबन्दी उसूलों की बाअन्दाज़-ए-असीरी है

तदबीर से तक़दीर बनाने वाले
इन्साँ को नये मोड़ पे लाने वाले
रोंदे हुए ज़र्रों पे छिछलती-सी नज़र
तारों की तरफ़ पाँव बढ़ाने वाले

काम देती नहीं है कुछ तक़दीर
साथ जब तक न उसके हो तदबीर
है मेरा तजरबा कि दोनों
एक पर है, तो एक नोक-ए-तीर

मुझे दाद-ए-वफ़ा मिली यानी

कह दिया मुझको वेवफ़ा तूने

- ज़िया फ़तेहाबादी

किश्ती क्यूँ साहिल पर डूबी

मौजें होती, दरिया होता

– ज़िया फ़तेहाबादी

हुस्न की फ़ितनासाजियाँ न गईं
इश्क़ की ग़मनवाज़ियाँ न गईं

लाख रोका जतन किए लेकिन
दर्द की सरफ़राज़ियाँ न गईं

आदमी मुतमईन हुआ न कभी
दिल की शिकवातराज़ियाँ न गईं

न हुई दर्द में कमी न हुई
न गईं चारासाज़ियाँ न गईं

हम हुए मुनहरिफ़ मगर आक़ा
तेरी बन्दानवाज़ियाँ न गईं

न हुई ख़त्म ज़िन्दगी जब तक
मौत की हीलासाज़ियाँ न गईं

आशियाँ उजड़ा मुर्ग-ए-बिस्मिल की
ऐ ''ज़िया'' नग़मासाज़ियाँ न गईं

—

रस्म-ए-उलफ़त को तेरी आम किया दुनिया में
हाँ मुझे मेरे गुनाहों की सज़ा मिल जाए

—

इक क़यामत मेरी हयात बनी
गरमी-ए-बज़्म-ए-कायनात बनी

आशना-ए-सुकूँ थी लाइलमी
आगही फ़िक्र-ए-शशजिहात बनी

मौत ने जब फ़ना की दी तालीम
वो घड़ी मुश्दा-ए-हयात बनी

मौसम-ए-बरशिगाल ख़ूब आया
इक दुल्हन सारी कायनात बनी

दामन-ए-ज़ब्त में सुकूँ पाया
शोर-ओ-शेवन से जब न बात बनी

फिर वही रात सुबह बनती है
जो सहर शाम हो के रात बनी

जब्र का सब तिलिस्म टूट गया
जब इरादों की कायनात बनी

किस ज़मीं में ग़ज़ल कही है ''ज़िया''
कि बनाए से भी न बात बनी

—

दुनिया मुझे हर दौर में दुहराती रही है
मेरी ही कहानी है जो तारीख़ बनी है
क्या हस्ती-ए-फ़ानी से करूँ तर्क-ए-ताल्लुक़
मोहूम-सी उम्मीद-ए-हयात-ए-अबदी है
जिस शाख़ पे उम्मीद के गुल मैंने खिलाए
वो शाख़-ए-शजर टूट कर धरती पे गिरी है
सुनसान से माहौल में सरगोशियाँ कैसी
मैं चुप हूँ मगर मेरी अना बोल रही है
इस क़िला-ए-हस्ती से निकल जाना है मुश्किल
दीवार के पीछे भी तो दिवार खड़ी है
अब खोल भी दो खिड़की कि तपिश दिल की हो मध्धम
नमनाक हवा है कहीं बरसात हुई है
खाई है जहाँ राह-ए-वफ़ा में कोई ठोकर
आवाज़ मुझे मेरे ही माहौल ने दी है
तूमने भी तो बदली नहीं ख़ू अपनी अभी तक
मैं भी हूँ वही दिल भी वही ग़म भी वही है
ममनून-ए-करम क्यूँ न हों अहबाब का मुझ पर
अहसान नहीं कोई भी अहसान यही है
अहसास है तन्हाईयों का भीड़ में मुझको
ख़ुश हूँ कि ''ज़िया'' रोने को इक उम्र पड़ी है

—

निगाह-ए-शौक़, रुसवाई का डर है
चमन का गूँचा गूँचा ख़ुद नगर है
हुनर की ऐब जोई, अल्लाह अल्लाह
अजब कोताही-ए-अहल-ए-नज़र है
मैं तुम से दूर ही कितना हूँ, देखो
वो उन पेड़ों के पीछे मेरा घर है
गली के मोड़ पर मिलता है अकसर
वो दीवाना जो अपनी राह पर है
उफ़क से ता उफ़क रूदाद मेरी
मगर ये क़िस्सा कितना मुख़तसर है
उजाली हैं कई रातें इसी ने
''ज़िया''-ए-ख़स्ता अब शम्अ-ए-सहर है

बहकी बहकी है, निगाहों को न जाने क्या हुआ
खोई खोई-सी है, राहों को न जाने क्या हुआ
दिल की रग रग में रवाँ था जिन से ख़ून-ए-ज़िन्दगी
उन तमन्नाओं को, चाहों को न जाने क्या हुआ
नामुकम्मिल था फ़साना दहर का जिन के बग़ैर
उन गदाओं, बादशाहों को न जाने क्या हुआ
आस्माँ से वापस आईं, दिल में घुट कर रह गईं
क्या बताऊँ, मेरी आहों को न जाने क्या हुआ
मअबद-ए-हस्ती में था जिन को उबूदिय्यत पे नाज़
उन जबीनों, सजदागाहों को न जाने क्या हुआ
बन गई हैं दौर-ए-साग़र बज़्म-ए-रिन्दाँ में "ज़िया"
उनकी शरमीली निगाहों को न जाने क्या हुआ

—

दार-ओ-मदार-ए-ज़ीस्त इस उम्मीद पर है अब
होगी कभी तो सुबह शब-ए-इन्तिज़ार की
इन्सान बन के हिर्स का दामन हुआ दराज़
तकलीफ़ दी तुझे करम-ए-बेहिसाब की

—

सुबह ने रोशन तीर चलाए   शब का दर्पण टूटा जाए
मुझ को मिला वो दिवाना दिल   अश्कों से जो आग बुझाए
माथे पर बिन्दी का सूरज   आँखों में काजल के साए
बादल झूमे नील गगन पर   गोरी ने गेसू लहराए
आओ दिल की कलियाँ चटकीं   जीवन की बगिया मुस्काए
कोई लगाए आग दिलों में   कोई दिलों की आग बुझाए
हुस्न क़यामत ढ़ाने निकला   आँचल का परचम लहराए
क्या प्रीतम आने वाले हैं   कागा तू क्यूँ शोर मचाए
उस इन्साँ का जीना ही क्या   जो इन्साँ के काम न आए
हर ज़ररे में सूरज रोशन   धरती से आकाश लज्जाए
किस ने छेड़ा गीत ''ज़िया'' का
प्यार का सागर उमड़ा आए

—

सोते में तेरी यादें क्या क्या न दिखाती थीं
जब आँख खुली, मुझ को कुछ भी न नज़र आया

—

कामराँ हों न हों, ''ज़िया''! लेकिन
आरज़ू का फ़रेब खाऐंगे

—

हाल-ए-दिल उनसे किसी उनवाँ बयाँ कर देखते
अपनी रूदाद-ए-मुहब्बत, दास्ताँ कर देखते
देख लेते बर्क़-ए-सोज़ाँ में है कितना हौसला
हम भी शाख़-ए-गुल पे तामीर आशियाँ कर देखते
ज़ब्त अगर देता इजाज़त हमको ऐ पास-ए-वफ़ा
जोश-ए-ग़म में जुर्अत-ए-आह-ओ-फ़ूग़ाँ कर देखते
कब हमें इतनी ख़बर थी उनका मसकन है कहाँ
सर को महव-ए-सजदा-ए-हर आस्ताँ कर देखते
था मआल आगाज़ से रोशन अगर अहल-ए-वफ़ा
साथ अपने दोस्त का भी इम्तिहाँ कर देखते
पानी पानी संगदिल ख़ुद ही न हो जाता तो हम
सैल-ए-अश्क आँखों से शाम-ए-ग़म रवाँ कर देखते
ज़ब्त-ए-गिरिया, दावत-ए-मश्क़-ए-सितम, फिर ऐ ''ज़िया''
क्यूँ न वो आख़िर हमारा इम्तिहाँ कर देखते

—

यकायक बन्द हो जाए न धड़कन क़ल्ब-ए-मुज़तर की
मुझे फिर चाँदनी रातों में कोई याद आता है

—

तुम चले आए तो सारी बेकली जाती रही
ज़िन्दगी में थी जो यकगूना कमी जाती रही

दिल की धड़कन तेज़ हो जाती है जिस को देख कर
सुरमगीं आँखों की वो जादूगरी जाती रही

उन से हम और हम से वो कुछ इस तरह घुल मिल गए
दो मुलाक़ातों में सब बेगानगी जाती रही

दिल लगाते ही हुए रुख़सत क़रार-ओ-सब्र-ओ-होश
जो मय्यसर थी कभी आसूदगी जाती रही

उन के जलवों में कुछ ऐसे खो गये होश-ओ-हवास
आशिक़ी में फ़िक्र-ए-सुबह-ओ-शाम भी जाती रही

ख़ार-ए-इशरत में उलझ कर दामन-ए-दिल रह गया
थी जो लज़्ज़त इज़्तिराब-ए-रूह की जाती रही

वो तो रुख़सत हो गए, छा कर दिमाग़-ओ-क़ल्ब पर
याद उनकी दम-ब-दम आती रही जाती रही

रँग ले आई वफ़ाकोशी मेरी अन्जाम-ए-कार
मुझसे उनकी बेनियाज़ी बेरुखी जाती रही

दिल में रोशन शम्अ-ए-उलफ़त जब से की हमने ''ज़िया''
ख़ुदनुमाई, ख़ुदरवी, ख़ुदपरवरी जाती रही

—

मेरे जुनूँ में, मेरी वफ़ा में ख़ुलूस की जब कमी मिलेगी
चमन गिरफ़्त-ए-ख़िज़ाँ में होगा बहार उजड़ी हुई मिलेगी
जवाँ है हिम्मत, है अज़्म मोहकम, नज़र उठाऐं तोअहल-ए-दानिश
अलम की तारीक उफ़्क़ पे रोशन शुआ-ए-उम्मीद भी मिलेगी
तसव्वुर उस माहरू का होगा कभी तो दिल में ज़िया बदामन
कभी तो ज़ुल्मतकदे में हमको खिली हुई चाँदनी मिलेगी
मेरा पता पूछ कर न तोड़ो सुकूत मेरा, जुमूद मेरा
बुलन्द महलों में रहने वालो, कहाँ मेरी झोँपड़ी मिलेगी
ये कोरचश्मी का है तमाशा कि ज़ुल्मतों की तहें जमी हैं
नज़र से परदा हटा के देखें यहाँ वहाँ रोशनी मिलेगी
रिवायती पैकर-ए-ग़ज़ल में भरा है रँग-ए-जदीद मैंने
''ज़िया'' मेरे शेअर में मुहय्या कोई नई बात ही मिलेगी

—

दिलों की राह में सब कुछ रवा है
''ज़िया'' तेरी वफ़ा, उन की जफ़ा क्या

—

शब-ओ-रोज़ रोने से क्या फ़ायदा है

गरेबाँ भिगोने से क्या फ़ायदा है

जहाँ फूल ख़ुद ही करें कार-ए-निशतर

वहाँ ख़ार बोने से क्या फ़ायदा है

उजालों को ढूँढो, सहर को पुकारो

अन्धेरों में रोने से क्या फ़ायदा है

हमें मोड़ना है रुख़-ए-मौज-ए-दरिया

सफ़ीना डुबोने से क्या फ़ायदा है

तेरी याद से दिल को बहला रहा हूँ

मगर इस खिलौने से क्या फ़ायदा है

सितारों से नूर-ए-सहर छीन लो तुम

शब-ए-ग़म में रोने से क्या फ़ायदा है

परीशानियाँ हासिल-ए-ज़िन्दगी हैं

परीशान होने से क्या फ़ायदा है

वही तीरगी है अभी तक दिलों में

''ज़िया'' सुबह होने से क्या फ़ायदा है

—

आँख से आँसू ढ़लका होता
तो फिर सूरज उभरा होता

कहते कहते ग़म का फ़साना
कटती रात सवेरा होता

किश्ती क्यूँ साहिल पर डूबी
मौजें होतीं, दरिया होता

जो गरजा प्यासी धरती पर
काश वो बादल बरसा होता

फूलों में छुपने वालों को
काँटों में तो ढूँढा होता

तुझ को पाना सहल नहीं है
सहल जो होता तो क्या होता

अपने सौ बेगाने होते
एक यगाना अपना होता

पूछ "ज़िया" ये अहल-ए-दिल से
प्यार न होता तो क्या होता

—

मौज-ए-जज़्बात में जो बह न सके
उन से वो दिल का हाल कह न सके

हाल-ए-दिल कह दिया इशारों में
चुप रहे और चुप भी रह न सके

कह दिया उन से जो न कहना था
और कहना जो था वो कह न सके

रँग-ओ-बू से गुलों की थी तरकीब
रँग-ओ-बू के बग़ैर रह न सके

ज़िन्दगी के हज़ार वार सहे
मौत का एक वार सह न सके

वो भी क्या क़ुरबत-ए-मुहब्बत थी
दूर रह कर भी दूर रह न सके

अपनी रूदाद कह रहा था जहाँ
हम ही अपनी ज़ुबाँ से कह न सके

ऐ ''ज़िया'' दिन को दिन वो क्या कहते
रात को रात भी जो कह न सके

—

तारों को दरख़्शाँ देख चुके, ज़र्रों को दरख़्शाँ देखेंगे
ऐ सोज़-ए-मुहब्बत हम तुझ को, हर शय में नुमायाँ देखेंगे
जब काली घटाओं में गरदूँ छुप जाएगा, खो जाएगा
हम हुस्न के शानों पर नागिन ज़ुल्फ़ों को परीशाँ देखेंगे
हम पस्त-ओ-बुलन्द-ए-गुलशन का नज़्ज़ारा भी कर सकते हैं
फूलों को ख़न्दाँ देखेंगे, शबनम को गिरियाँ देखेंगे
उलफ़त का असर कुछ होने दो, नाज़ और नियाज़ में फ़र्क नहीं
वो हम को परीशाँ पाऐंगे हम उनको परीशाँ देखेंगे
अमवाज पे लरज़ा तारी है गिरदाब में हलचल पैदा है
साहिल की तमन्ना कौन करे अब ज़ोर-ए-तूफ़ाँ देखेंगे
आज़ाद फ़िज़ाओं में होंगे हम भी महव-ए-परवाज़ इक दिन
उजड़ा हुआ ज़िन्दाँ देखेंगे आबाद गुलिस्ताँ देखेंगे
तारों की चमक कलियों की चटक मौजों का तरन्नुम हुस्न-ए-जवाँ
हम तुझ को ''ज़िया'' उस आलम में मदहोश-ओ-ग़ज़लख़्वाँ देखेंगे

—

दिल की धड़कन से नुमायाँ हैं अगर तुम सुन लो
वो मुहब्बत के पयामात जो हम तक पहुँचे

—

देता है जल्वा आँख को दावत ही अब कहाँ
आती है लब पे दिल की हिकायत ही अब कहाँ

ये ग़लग़ला, ये शोर, ये हँगामा, शाम-ए-ग़म
है इन्तिज़ार-ए-सुबह-ए-क़यामत ही अब कहाँ

काँटे वही हैं, फूल वही, बुलबुलें वही
लेकिन अजूबाकारी-ए-वहशत ही अब कहाँ

क्या आँख खोलिए यहाँ, पहचानिए किसे
आइनाख़ाने में कोई सूरत ही अब कहाँ

इस कारोबार-ए-ज़ीस्त की मसरूफ़ियत न पूछ
इन्सान को है मरने की फ़ुरसत ही अब कहाँ

दिल के निहाँकदे में कोई जलवाबार है
परदे की रह गई है ज़रूरत ही अब कहाँ

कहने को तो ग़ज़ल है मगर इस में ऐ ''ज़िया''
शोख़ी ही अब कहाँ है शरारत ही अब कहाँ

—

अनादिल के रँगीन गीतों में अकसर
मैं अपना ही हुस्न-ए-बयाँ देखता हूँ

—

दिल के हर गोशे में हर सू
फैली है यादों की ख़ुशबू
इश्क़ की रुसवाई का बाइस
ठँडी आहें जलते आँसू
आमों के इक पेड़ पे बैठी
कोयल करती कूकू कूकू
गरदिश-ए-मेहर-ओ-माह न बदली
क्या बदलेगी मेरी भी ख़ू
आओ मिलकर ख़त्म ही कर दें
रोज़ की ये सब ''मैं मैं तू तू''
गरदिश-ए-रोज़-ओ-शब का हासिल
सुबह-ए- जबीं और शाम-ए-गेसू
कौन ''ज़िया'' से मिलने जाए
कमआमेज़ी है उसकी ख़ू

—

अफ़साना मेरे ग़म का अफ़साना-ए-इबरत है
जिसने भी सुना होगा दिल थाम लिया होगा

—

वो पाकबाज़ जो बादाकशी का दम भरते
न भूलकर भी कभी शेख़ जी का दम भरते

जियो, कि मौत को आना है आ ही जाएगी
अमर हुए जो मरे ज़िन्दगी का दम भरते

उठो कि दामन-ए-शब तारतार कर डालें
मिलेगा नूर कहाँ तीरगी का दम भरते

तेरी निगाह-ए-करम भी थी शामिल-ए-तख़लीक़
तो फिर फ़रिशते न क्यूँ आदमी का दम भरते

ये अहल-ए-इश्क़ की मस्ती कहाँ अमाँ पाती
जो अहल-ए-हुस्न फ़क़त होश ही का दम भरते

फ़रेब-ए-मँज़िल-ए-मक़सूद खुल गया होता
जो रहनुमा न मेरी गुमरही का दम भरते

नुजूम-ओ-माह ''ज़िया'' रह गये बहुत पीछे
हम आ गए हैं कहाँ रोशनी का दम भरते

—

राज़-ए-बक़ा समझ न सका जब बक़ैद-ए-ज़ीस्त
फ़रदा की इक उम्मीद पे इन्साँ फ़ना हुआ

—

हसरत-ए-दीद मुसीबत ही सही
हमें ग़म खाने की आदत ही सही
दश्त-ओ-सहरा कोई दोज़ख़ तो नहीं
तेरा कूचा मेरी जन्नत ही सही
बेअसर मेरी दुआएँ क्यूँ हों
लादवा दर्द-ए-मुहब्बत ही सही
ज़िन्दगी मौत से बहतर है मगर
दो घड़ी के लिए राहत ही सही
अम्न से बैर नहीं रखते हम
शोरिशें दाख़िल-ए-फ़ितरत ही सही
सर कटाने की मगर बात कहाँ
सर में सौदा-ए-शहादत ही सही
देख कर, इश्क़ ''ज़िया'' बढ़ता है
हुस्न तस्वीर-ए-नज़ाकत ही सही

—

परदा उठाके छीन लिए उसने अक़्ल-ओ-होश
मैं मोतक़िद हुआ था अभी मेहर-ओ-माह का

—

दीवाने मुहब्बत के अगर होश में आऐं
क़दमों पे ज़मीं के सर-ए-अफ़लाक झुकाऐं

यूँ भी तो बदल सकता है रुख़ सैल-ए-जुनूँ का
रिन्दान-ए-बलानोश ज़रा जाम उठाऐं

तदबीर मिली है हमें तक़दीर से हमदम
तदबीर से बिगड़ी हुई तक़दीर बनाऐं

तक़रीब-ए-मुहब्बत में हैं आँसू भी हँसी भी
कुछ उनकी ज़फाऐं हैं तो कुछ अपनी वफ़ाऐं

हम डूब गए अपनी ही आँखों की नमी में
उलफ़त का इशारा था कि तूफ़ान उठाऐं

दैर और हरम पे तो मुसल्लत है अँधेरा
अब आ तलब-ए-जलवा-ए-जानाँ कहाँ जाऐं

फ़ुरसत ग़म-ए-दौराँ से ''ज़िया'' उन को नहीं है
हम सोच रहे हैं कि ग़ज़ल किस को सुनाऐं

—

उस ने भुला दिया तुझे, थी ये भी मसलहत
लेकिन तू उसको भूल गया, ये बुरा हुआ

—

तेरे बग़ैर इक घड़ी मुझको नहीं क़रार देख
बैठा हूँ रहगुज़ार में ख़स्ता-ए-इन्तिज़ार देख
ऐ दिल-ए-दर्द आशना उजड़ी हुई बहार देख
बाग़-ए-ख़िज़ाँ शिकार में, फूल नहीं तो ख़ार देख
तूने कहा था ज़िन्दगी सिर्फ़ फ़रेब-ए-होश है
मुझको जहान-ए-ज़ीस्त पर आ गया एतबार देख
क्या है मआल-ए-जौक़-ए-इश्क़ हुस्न की कायनात में
ऐ दिल-ए-बेक़रार सोच, दीदा-ए-अश्कबार देख
तेरी हयात गोश-ओ-होश, मेरी हयात ख़ामुशी
ऐ मेरे राज़दार सुन, ऐ मेरे ग़मगुसार देख
गुलकदा-ए-हयात में आज ख़िज़ाँ का राज है
उसकी तरफ भी गाह गाह, फ़ितनागर-ए-बहार देख
तेरे बग़ैर ज़िन्दगी तिशनगी-ए-दवाम है
रूह भी बेक़रार है, दिल भी है सोगवार देख
आ ही गया फ़रेब में हुस्न के तू भी ऐ ''ज़िया''
सजदे में है सर-ए-नियाज़, अपना मआल-ए-कार देख

—

होश से करके बेख़बर होश में फिर न ला सके
ऐसे हुए वो परदापोश ख़्वाब में भी न आ सके
चाहिए मुझ को एक दिल और वो ऐसे ज़र्फ़ का
दर्द की सारी कायनात जिस में सिमट के आ सके
मेरी निगाह-ए-आशना जलवागह-ए-जमाल है
ग़ैर की क्या मजाल है मुझ से नज़र मिला सके
या मेरी ज़िन्दगी को दे अपनी निगाह में अमाँ
या मुझे इस तरह मिटा फिर न कोई मिटा सके
काश किसी का इल्तिफ़ात हो मेरे सोज़ की निजात
दिल में सुलग रही है आग कोई उसे बुझा सके

—

मेरा दामन भी भिगोया होता
मुझको अश्कों में डुबोया होता
किस तरह कोई जगाता उस को
खुली आँखों से जो सोया होता
ढूँढने वाले ने मँज़िल का निशाँ
पा के ख़ुद को कभी खोया होता
आबला पाई की लज़्ज़त तौबा
कोई काँटा ही चुभोया होता
बदगुमानी की भी हद होती है
काश कि आईना गोया होता
ऐ “ज़िया” मश्क़-ए-सुख़न में तूने
क़ीमती वक़्त न खोया होता

—

वो कोई नग़मा है जो ज़ख़्माज़न-ए-साज़ न हो
हौसला क्या है जो तहरीक-ए-तग-ओ-ताज़ न हो
साक़ी-ए-वक़्त तेरे रिन्द ग़म-ए-दौराँ से
मर ही जाऐं दर-ए-मयख़ाना अगर बाज़ न हो
वो मेरे दर्द की रूदाद है जिसका हमदम
कोई अन्जाम न हो कोई भी आग़ाज़ न हो
क्या क़यामत है कि इस बात की है हुस्न को ज़िद
सरफ़गन्दा ही रहे इश्क़ सरअफ़राज़ न हो
हाय उस मुर्ग़-ए-गिरफ़्तार की क़िस्मत जिस को
पर-ए-परवाज़ मिलें ताकत-ए-परवाज़ न हो
दिल-ए-महजूर, तेरी बज़्म में है छाई हुई
वो ख़ामोशी कि मैं चीखूँ भी तो आवाज़ न हो
वो फ़रिश्ता है, नहीं काम उसे दुनिया से ''ज़िया''
जो बशर बन्दा-ए-हिर्स-ओ-हवस-ओ-आज़ न हो

—

मेरी फ़िक्रों में हस्ती कारफ़रमा
मेरे शेअरों में इन्सानों की दुनिया

—

शोर महफ़िल में है वो आते हैं
होशियारों के होश जाते हैं
आ भी जाओ कि आ गई है बहार
बाग़ में फूल मुस्कराते हैं
कूचा-ए-यार आ गया वरना
क्यूँ मेरे पाँव डगमगाते हैं
देखते हैं हुजूम-ए-जलवा-ए-दोस्त
हम निगाहें जिधर उठाते हैं
ज़ुल्मत-ए-यास को ख़बर कर दो
शम्म-ए-उम्मीद हम जलाते हैं
चाँदनी ले के कौन आता है
शाम के साए थरथराते हैं
भूलने वाले याद करके तुझे
हम ज़माने के ग़म भुलाते हैं
गरदिश-ए-मेहर-ओ-माह रुक जाए
हम उन्हें हाल-ए-दिल सुनाते हैं
ऐ "ज़िया", है तुलू-ए-सुबह-ए-हयात
रात के साए ढ़लते जाते हैं

—

ना उमीदी की शिद्दत-ए-अहसास
चाँद बेनूर चाँदनी है उदास
तुम से कहनी है दिल की बात मुझे
दो घड़ी बैठ जाओ मेरे पास
ये रिहाई कोई रिहाई है
नहीं आब-ओ-हवा चमन की रास
चुपका बैठा हूँ याद-ए-यार न छेड़
मेरी दुखती हुई रग-ए-अहसास
ऐसे है जैसे सुबह का तारा
मौज-ए-उम्मीद में सफ़ीना-ए-यास
मीठी-मीठी सी दिल में ग़म की ख़लिश
खोए खोए से अक़्ल-ओ-होश-ओ-हवास
छेड़ मुतरिब ग़ज़ल ''ज़िया'' की कि है
शब-ए-ग़म की फ़िज़ा उदास उदास

—

जागी हुई थी सारी ख़ुदाई
सोया हुआ था मेरा ही रब क्या

—

दर-ए-दिल पर जो आ गया होगा
खो के ख़ुद को वो पा गया होगा

दश्त-ओ-सहरा में जश्न-ए-वहशत है
कोई दीवाना आ गया होगा

उमड़ आया है आँख में तूफ़ाँ
दिल को वो याद आ गया होगा

तेरा दीवाना जान दे कर भी
उम्र-ए-उलफ़त बढ़ा गया होगा

था जो सौदा दिमाग़-ए-वहशत में
आँधियों में समा गया होगा

सिम्त-ए-मयख़ाना उठ रहे हैं क़दम
अब्र गुलशन पे छा गया होगा

मस्तियों की तलाश में है''ज़िया''
होश से तँग आ गया होगा

—

कायनात आ गई ख़ुद सिमट के जाम में
मयकदे में क्या कोई होशियार आ गया

—

हवादिस की ऐसी चली तुन्द आँधी कमर झुक गई
गिराँबारी-ए-ज़ख़्महाए इबादत से दैर-ओ-हरम की कमर झुक गई
रोशनी बुझ गई और सहरा-ए-ज़ुल्मत के बे पेड साए में इँसान गुम हो गया
आँख हैरत के दरिया में डूबी थी डूबी रही कमर झुक गई
कली फूल बनने से पहले कटी शाख़ से काँटा बन कर गिरी ख़ाक पर
झपकती पलक पर दमकते हुए शबनमी आँसूओं की नज़र क्या उठी कमर झुक गई
हुजूम-ए-मसाइब ने हर जाम पर इस तरह रोका टोका
अभी तक न हो पाई थी जो सीधी कमर झुक गई

—

वो बदनसीब था, उसका कभी न बख़्त उगा
जो तेरे दर के मुक़ाबिल कोई दरख़्त उगा
हज़ारों चेहरे, मगर सबका एक ही चेहरा
शिकस्ता होके ही आईना लख़्त लख़्त उगा
य़कीन-ओ-अज़्म से होती है रहगुज़र हमवार
ज़मीं है नर्म बहुत, इस में संग-ए-सख़्त उगा
किसी को रहम की भीक इस दयार में न मिली
जो माँगना है तो लहजा ज़रा करख़्त उगा

—

यूँ हसरतों की गर्द में था दिल अटा हुआ
जैसे दरख़्त से कोई पत्ता गिरा हुआ
किस तरह मुझ को मिलता तेरे साए का सुराग
हर सिमत ज़ुल्मतों का था जँगल उगा हुआ
कल रात ख़्वाब में जो मुक़ाबिल था आईना
मेरा ही क़द मुझे नज़र आया बढ़ा हुआ
जाने भी दो वो हो ही नहीं सकता मेरा चाँद
पामाल-ए-आदमी जो हुआ चाँद क्या हुआ
बाहर के शोर-ओ-गुल ही से शायद वो बोल उठे
बैठा है कब से चुप कोई अन्दर छुपा हुआ
नाहक़ कुरेदते हो मेरे दिल की राख अब
ऐसा न हो भड़क उठे शोला दबा हुआ
इस इन्तिज़ार में हूँ कि उतरे तो कुछ कहूँ
जज़्बात-ए-हस्सियात का दरिया चढ़ा हुआ
पहचाने कौन ख़ुद को कि आईनाख़ाने में
हर चेहरे पर है दूसरा चेहरा लगा हुआ
पँछी उड़ा तो ख़त्म भी हो जाएगा ''ज़िया''
साँसों के आने जाने का ताँता बँधा हुआ

—

लब पर दिल की बात न आई   वापस बीती रात न आई

ख़ुश्क हुईं रो-रो कर आँखें   मधमाती बरसात न आई

मेरी शब की तारीकी में   तारों की सौग़ात न आई

मयख़ाने की मस्त फ़िज़ा भी   रास मुझे हैहात न आई

दिल तो उमड़ा, रो न सका मैं   छाई घटा, बरसात न आई

मेरा चाँद निकलने को था   शाम से पहले रात न आई

जिस पर महफ़िल लुट जाती है

तुझ को ''ज़िया'' वो बात न आई

—

आने जाने वाले लोग   सारे भोले भाले लोग

ख़ानों में बट कर ही रहे   भूरे गोरे काले लोग

दौड़े लेके हाथों में   पत्थर नेज़े भाले लोग

नाले ग़म के नग़मे हैं   क्यूँ न करें फिर नाले लोग

शोरिस्ताँ में ख़ामोशी   ताले लबों पर डाले लोग

थे जो उम्मीदों के अमीन   निकले वही जियाले लोग

महव-ए-फ़सानागोई ''ज़िया''

उनवानों के पाले लोग

—

चिमनियों से धुआँ निकलता है
दिल-ए-मज़दूर चुपका बैठा है
हिज्र का मारा भूक से डर कर
रात भर करवटें बदलता है
आ पड़ा काम क्यूँ मशीनों से
दिल-ए-आहन कहीं पिघलता है
पिघला सीसा है जिन में मय की जगह
उन पियालों का दौर चलता है
वक़्त बहरूपिया नहीं है तो क्यूँ
नये साँचों में रोज़ ढ़लता है
वही पाता है मँज़िल अपनी ''ज़िया''
जो ज़माने के साथ चलता है

—

जब तसव्वुर में किसी के कभी खो जाता हूँ
ज़िन्दगी के वही लम्हात हसीं होते हैं

—

चाँद भी कह के छुप गया शम्अ भी कह के बुझ गई
हुस्न-ए-अज़ल की दास्ताँ क़िस्सा-ए-नातमाम है

—

शोख़-ओ-गुस्ताख़ इस क़दर मख्खी
उड़के आ बैठी गाल पर मख्खी
हाय उनकी ये शान-ए-इसतग़ना
बैठने दें न नाक पर मख्खी
चारागर से गिला नहीं लेकिन
किसने निगली है देख कर मख्खी
मौसम-ए-बरशिगाल ही में क्यूँ
भिनभिनाती है बेशतर मख्खी
देखती रह गई लब-ए-शीरीं
उड़ती फिरती थी दर बदर मख्खी
कौन तक़लीद ऐ ''ज़िया'' करता
मारता कौन मख्खी पर मख्खी

—

मिल गया जो जिस की क़िस्मत में था आते ही बहार
ख़न्दा-ए-गुल बाग़ को और चाकदामानी मुझे

—

दौर-ए-मय रोक चाहता हूँ मैं
तबसरा हादसात-ए-आलम पर

—

ख़ुलूस-ओ-वफ़ा का सिला पाईएगा
हुजूम-ए-तमन्ना में खो जाईएगा
दिये जाएगा ग़म कहाँ तक ज़माना
कहाँ तक ज़माने का ग़म खाईएगा
जिसे दीजिएगा सबक़ डूबने का
उसे क़तरे क़तरे को तरसाईएगा
अँधेरों में दामन छुड़ाया है लेकिन
उजालों से बच कर कहाँ जाईएगा
बढ़ाए चला जा रहा हूँ पतँगें
न कब तक मेरे हाथ आप आईएगा
उधर हूर-ओ-कौसर इधर जाम-ओ-साक़ी
किसे खोईएगा, किसे पाईएगा
सहर ने रबाब-ए-रग-ए-गूँचा छेड़ा
''ज़िया'' की ग़ज़ल अब कोई गाईएगा

—

सुबह तक मेरे साथ साथ रहे
रात के साए महरबाँ निकले

—

ख़ुदसरी का भरम न खुल जाए
आदमी का भरम न खुल जाए
तीरगी का तिलिस्म टूट गया
रोशनी का भरम न खुल जाए
मौत का राज़ फ़ाश तो कर दूँ
ज़िन्दगी का भरम न खुल जाए
हुस्न मुख़तार और दिल मजबूर
आशिक़ी का भरम न खुल जाए
कौन दीवानगी को दे इलज़ाम
आगही का भरम न खुल जाए
कीजिए रहबरों का क्या शिकवा
गुमरही का भरम न खुल जाए
इम्तिहान-ए-वफ़ा दुरूस्त मगर,
जोर ही का भरम न खुल जाए
ऐ मुग़न्नी ग़जल ''ज़िया'' की न छेड़
शायरी का भरम न खुल जाए

—

ग़म-ए-उलफ़त में जान दी होती
ख़िज्र की उम्र मिल गई होती

ताक़त-ए-इन्तिज़ार थी कि न थी
जुर्अत-ए-इन्तिज़ार की होती

न हुआ हुस्न मुलतफ़ित, वरना
दिल की दुनिया बदल गई होती

ज़ब्त-ए-ग़म में लबों का हिलना क्या
बेज़ुबाँ आँख मुलतजी होती

मश्वरा तर्क-ए-मय का ठीक मगर
शेख़, तूने कभी तो पी होती

जान देते ख़ुशी से मौत अगर
काशिफ़-ए-राज़-ए-ज़िन्दगी होती

गुनगुनाता कोई ''ज़िया'' की ग़ज़ल
और फ़िज़ा साज़ छेड़ती होती

—

शम्अ हो जाएगी अपनी आग में जलकर ख़मोश
क़िस्सा-ए-तूलानी-ए-शब मुख़तसर हो जाएगा

—

पा शिकसता था ख़ामा मानी का
नक़्श अधूरा रहा जवानी का
ढूँढ ही लेंगे मेरे बाद अहबाब
कोई उनवाँ मेरी कहानी का
यास, हसरत, मलाल, नोमीदी
हाय अन्जाम शादमानी का
उस तरफ़ क्यूँ न मोड़ दूँ किश्ती
जिस तरफ हो बहाव पानी का
हादसात-ए-ज़माना ले भी चुका
इम्तिहाँ मेरी सख़्तजानी का
लफ़्ज़ से क्या बयाँ हो हाल-ए-दिल
लफ़्ज़ तो परदा है मआनी का
मुख़्तलिफ़ है मुक़ाबला न करें
नक़्श-ए-अव्वल से नक्श़-ए-सानी का
उन की महफ़िल में ज़िक्र चल निकला
ऐ ''ज़िया''! तेरी ख़ुशबयानी का

—

गुलों ने कह दिया सहन-ए-चमन से
फ़िज़ा रँगीं है काँटों की चुभन से
बतौर-ए-ख़ास लाए भी गए थे
निकाले भी गए हम अन्जुमन से
तबस्सुम की तवक़्क़ो है इलाही
ज़माने को असीरान-ए-मुहन से
फ़साना दिल का करता हूँ मुर्तब
गुलों के रँग-ओ-बू-ए-यासमिन से
मुझे दीवानगी का दर्स देकर
ख़फ़ा क्यूँ हो मेरे दीवानापन से
''ज़िया'' पलकों पे आँसू बन गए हैं
जो तूफ़ाँ आए थे गँग-ओ-जमुन से

—

वो इक रँगीन लम्हा तुम ने जब दिल को नवाज़ा था
उसी लम्हें को अपनी ज़ीस्त का हासिल समझा हूँ

—

रो ले ग़म-ए-बुताँ से लिपट कर शब-ए-फ़िराक़
दिल को ग़म-ए-हयात से फ़ुरसत अगर मिले

—

हुस्न के रुख़ पर आँख गड़ी है
छोटा मुँह और बात बड़ी है

नोटों के अम्बार लगे हैं
चाँदी की दीवार खड़ी है

कौन किसी का दुख बाँटेगा
सबको अपनी अपनी पड़ी है

तुमने मुझ से फेर ली आँखें
कैसा लम्हा कैसी घड़ी है

प्यासी धरती आग बुझा ले
मधमाती सावन की झड़ी है

नूर-ए-सहर का रस्ता रोके
सजधज कर क्यूँ रात खड़ी है

मसलूबी है जिस का हासिल
वही ''ज़िया'' अनमोल घड़ी है

—

फेर ली तूने निगाह-ए-इल्तिफ़ात
मेरी सारी मुश्किलें आसाँ हुईं

—

रात सोते में ख़्वाब क्या देखा
दिन में दुश्वार जागना भी हुआ

अपना मुँह देखने से डरता हूँ
कहीं हँस दे न मुझ पर आईना

जानता तो न माँग कर लेता
दिल में सारे जहाँ का ग़म होगा

आज रक़्साँ वहाँ बगूले हैं
कल जहाँ एक दरिया बहता था

बुलबुलें भी उसी की घात में थी
फूल जो मैंने शाख़ से तोड़ा

चाँदनी मुझ को नूर क्या देती
चाँद है ख़ुद गदाई सूरज का

वादियों से निकल के फैल गया
दूर तक सिलसिला पहाड़ों का

डूबनी ही थी एक दिन किश्ती
नाख़ुदा को समझ लिया था ख़ुदा

हो गया फ़ाश दिल का राज़ ''ज़िया''
शाइरी ने किया मुझे रुसवा

—

वो तसव्वुर में जो तस्वीर बना बैठा है
लगता है माथे की तहरीर बना बैठा है
करने जाता हूँ उसी से गिला-ए-बेताबी
मेरे ख़्वाबों की जो तामीर बना बैठा है
ख़त्म होता ही नहीं ये सफ़र-ए-मँज़िल-ए-शौक़
रास्ता पाँव की ज़न्जीर बना बैठा है
ऐ ‘‘ज़िया’’ बज़्म-ए-सुख़न में ये तमाशा देखा
कोई ‘‘ग़ालिब’’ तो कोई ‘‘मीर’’ बना बैठा है

—

बा मिक्दार-ए-वफ़ा ज़ब्त-ए-फ़ुग़ाँ है
गिले शिकवे की गुँजाइश कहाँ है
ख़ुशी तरक-ए-ताल्लुक़ की मुस्ल्लम
मगर ये ग़म कि उलफ़त दरमियाँ है
हुआ मालूम ये तूल-ए-अमल से
बहुत ही मुख़्तसर कार-ए-जहाँ है
कहाँ तक ऐ हुजूम-ए-नामुरादी
कहीं तो हद-ए-सई-ए-रायगाँ है
सुनाता हूँ कि मेरी आपबीती
बाउनवान-ए-हदीस-ए-दीगराँ है
जिसे मैं सींचता हूँ ख़ून-ए-दिल से
‘‘ज़िया’’ जज़्बा वही तो दास्ताँ है

—

दिलों में दर्द सरों में जो सौदा रखते थे
वही तो पास ज़्यादा वफ़ा का रखते थे

नक़ाब उठा के जो आए थे अन्जुमन में वही
हिजाबदार निगाहों का पर्दा रखते थे

सलीब-ओ-दार पे हैं उन के ख़ून के बोसे
ख़ुदा के बन्दे, भरोसा ख़ुदा का रखते थे

गली में, कूचे में, बाजार में थी बारिश-ए-नूर
हमीं तो घर में थे, जिनसे वो पर्दा रखते थे

बहार आने पे हम दे के अपना ख़ून-ए-जिगर
चमन की शाखों पे काँटों को ताज़ा रखते थे

न थी ख़बर कि दिल-ए-सँग कब धड़कने लगे
तवक़्क़ोआत का दामन कुशादा रखते थे

ज़मानासाज़ी-ए-दुनिया को जानकर भी तो हम
''ज़िया'' उम्मीद-ए-करम बेइरादा रखते थे

—

कौन खोलेगा गिरह जज़्बात की
बँद हैं जब तक दिलों की खिड़कियाँ

—

हाँ मुझी को हर जगह धोका लगा
ख़ुद को मैं हर हाल में टूटा लगा

आप की दीदावरी का शुक्रिया
था जवाँ मैं आपको बूढ़ा लगा

उस तरफ ही मुड़ गया मौजों का रुख़
जिस तरफ़ बहता हुआ दरिया लगा

जिस पे चेहरा और कोई भी न था
मुझको तो चेहरा वही अच्छा लगा

आ गया हूँ तोड़ कर ज़िन्दान-ए-जिस्म
अब बता ऐ ज़िन्दगी कैसा लगा

मैं तो देखूँ तू न देखे ऐसा भी
अपने दर पर अब कोई पर्दा लगा

डूबने वाले को काफ़ी है ''ज़िया''
कोई तिनका ही किनारे जा लगा

—

निगाहें जानिब-ए-दर, गोश बर आवाज़, दिल मुज़तर
ये किस आलम में तेरे तालिब-ए-दीदार बैठे हैं

—

दयार-ए-शौक़ में जो सर उठाए फिरते हैं
सरों पे अपने वो पत्थर उठाए फिरते हैं
न मयकदा है न साक़ी मगर ये तिशनालबी
कि रिन्द हाथों में साग़र, उठाए फिरते हैं
सुकूँ तलाशनेवाले हम ऐसे दीवाने
अज़ल से शोरिश-ए-महशर उठाए फिरते हैं
क़फ़स का रँग न उड़ जाए क्यूँकि मुर्ग-ए-असीर
दिल-ओ-दिमाग़ से हर डर उठाए फिरते हैं
कहाँ वो दर्द जो करता है आप अपनी दवा
कहाँ वो ज़ख़्म जो निशतर उठाए फिरते हैं
निकल के ख़ुल्द से क्या जाने किस लिए अब तक
हम आसमाँ को ज़मीं पर उठाए फिरते हैं
शदीदतर जिन्हें अहसास-ए-तिशनगी है ''ज़िया''
वो क़तरा क़तरा समुन्दर उठाए फिरते हैं

—

दस्तक दर-ए-हयात पे कल रात जिसने दी
वो तो हवा का झोंका था, क्यूँ आप डर गए

—

एक मँदिर जो दिल के अँदर है
किसी नटखट का ग़ालिबन घर है
मौत का ख़ौफ था कभी दिल में
रात दिन ज़िन्दगी का अब डर है
हरफ़-ए-मतलब को दुश्मनी लब से
कोई तो ज़ख़्म मेरे दिल पर है
पीटता है ढ़िन्ढोरा जो अपना
वही इस दौर का पैम्बर है
ख़ार-ओ-गुल में तमीज़ क्या कीजे
दिलशिकन भी है वो जो दिलबर है
वक़्त के हाथों उजड़ी बस्ती में
गिरती दीवार टूटता घर है
ऐ "ज़िया" सिरफिरों से कौन कहे
आदमी आदमी बराबर है

—

मेरे जाने का वक़्त आ पहुँचा
उन के आने में देर कितनी है

—

मैं अपने आप से हूँ महव-ए-गुफ़्तगू अब तक
मेरा ही चेहरा है बस मेरे रूबरू अब तक
न हाथ जामादरी से उठाए वहशत ने
न अपना चाक-ए-गरेबाँ हुआ रफ़ू अब तक
जमूद-ए-कुहनगी-ए-ख़ुमकदा, अरे तौबा !
वही है रिन्द, वही मय, वही सुबू अब तक
हुआ ज़माना कि दम भर को बर्क़ चमकी थी
कलीम-ओ-तूर की बाक़ी है गुफ़्तगू अब तक
हनूज़ मेरे तआक़्कुब में है ग़म-ए-दुनिया
हुई है ख़त्म कहाँ मेरी जुस्तजू अब तक
हुजूम-ए-यास ने कोशिश तो की, मगर न छुटा
ख़िज़ाँ के हाथ से दामान-ए-आरज़ू अब तक
ये किस बगूले के चक्कर में है दिल-ए-नादाँ
ख़राब-ए-दस्त ब उनवान-ए-जुस्तजू अब तक
जफ़ा-ओ-ज़ुल्म का अब अपने जायज़ा कर ले
न पूछ मुझसे, वफ़ा क्यूँ है मेरी ख़ू अब तक
हज़ारों साल से धड़कन हूँ तेरे दिल की मगर
समझ रहा है मुझे अजनबी ही तू अब तक
बदल चुका है ज़माना मगर ''ज़िया'' साहिब
न बदला आप का अन्दाज़-ए-गुफ़्तगू अब तक

—

पँछी बैठा है पर तोले   कोई आ कर पिँजरा खोले
जीना ही ठहरा तो ऐ दिल   सुबह नहीं तो शब का हो ले
किस को फ़ुरसत है दुनिया के   सरबस्ता राज़ों को खोले
अमृत में बिस घोल रहे हैं   कोई बिस अमृत में घोले
सूरज भी चुँधिया जाएगा   ज़र्रा अपनी आँख तो खोले

आती रहेगी मौत ''ज़िया'' तू
हस्ती के रस्ते पे हो ले

—

नाशनासाई का क्या उन से गिला
मैं तो ख़ुद नाआशना अपने से हूँ
बर्फ़ज़ारों में रहो यख़बस्ता तुम
मैं भी तपती धूप में जलता रहूँ
मक़सद-ए-हस्ती यही है रोज़-ओ-शब
तू मुझे और मैं तुझे देखा करूँ
ऐ मेरी मँज़िल, ज़रा आगे तो बढ़
और कितनी दूर मैं तनहा चलूँ

—

पा शिकस्ता रबाब है ख़ामोश
पर्दा पर्दा हिजाब है ख़ामोश
खुमकदे में सुकूत का आलम
ख़ाना-ए-आफ़ताब है ख़ामोश
थम गई कायनात की गरदिश
शोरिश-ए-इन्क़लाब है ख़ामोश
हादसों की ये ख़ुद पशेमानी
ख़लिश-ए-इज़्तिराब है ख़ामोश
बेसवाली दलील-ए-नाफ़हमी
आईना-ए-लाजवाब है ख़ामोश
मँज़िल-ए-रेगज़ार ख़ाक बसर
तिशनगी-ए-शराब है ख़ामोश
ऐ ग़म-ए-दिल न शोर-ए-हश्र उठा
ज़िन्दगी महव-ए-ख़्वाब है ख़ामोश
बेकराँ दश्त-ए-बेकसी में ''ज़िया''
दिल-ए-ख़ानाख़राब है ख़ामोश

—

कल का बन्दा है आज बन्दा नवाज़
मिट चुका इम्तियाज़-ए-नाज़-ओ-नियाज़

कैसी उल्टी हवा चली कि हुआ
मुर्ग-ए-परबस्ता माइल-ए-परवाज़

तुम तो अहल-ए-नज़र हो कर दोगे
मेरी कोताहियाँ नज़रअन्दाज़

अब तो पहचानते हैं लाला-ओ-गुल
मेरी आवाज़ से तेरी आवाज़

एक ही घूँट में अरे तौबा
आ गया लब पे दर्द-ए-दिल का राज़

जानता हूँ मआल-ए-किस्सा-ए-ग़म
करता हूँ अपने नाम से आग़ाज़

ऐ ''ज़िया'' ये सितम ज़रीफ़ी-ए-वक़्त
मुख़तसर उम्र दास्तान दराज़

—

लो खुल ही गया राज़, ग़ज़ल सुन के ''ज़िया'' की
दिल में जो न उतरें तो वो अशआर नहीं हैं

—

यारब, शब-ए-हयात की क्या है सहर कहीं
मैं थक गया हूँ, ख़त्म भी हो अब सफ़र कहीं
पाए अगर जगह तो मिले दिल को कुछ सुकून
आग़ोश-ए-गुल में बुलबुल-ए-शोरीदासर कहीं
शिकवा सरा-ए-पैच-ओ-ख़म-ए-राह ख़बर भी है
मँज़िल कहीं है ढूँढ रही है नज़र कहीं
ये होश-ओ-आगही की घुटन दम निकल न जाय
ले चल हवा-ए-मौसम-ए-दीवानागर कहीं
क्या दूँ दिल-ए-हज़ीं को तसल्ली हुआ भी है
ऐ चारासाज़ चारा-ए-दर्द-ए-जिगर कहीं
धड़कन भी दिल की बन्द हुई अश्क़ भी रुके
लेकिन थमी न गरदिश-ए-शाम-ओ-सहर कहीं
आग़ाज-ओ-इन्तेहा की है बात और ऐ ''ज़िया''
है दास्ताँ तवील कहीं मुख़तसर कहीं

—

काश, दिल को मेरे मिली होती
तुझ को पाने की ये लगन तनहा

—

पाँव रखता हूँ सँभल कर राह में
रस्सियाँ बैठी हैं जल कर राह में

ठोकरें मारो कि सीने से लगाओ
आ गया फिर से निकल कर राह में

जाने क्यूँ दस्त-ए-सबा ने फेंक दीं
पत्तियाँ गुल की मसल कर राह में

ख़ाक-ए-नक़्श-ए-पा से थी निसबत कोई
गिर पड़े आँसू मचल कर राह में

मँज़िलें रहती कुँवारी ही अगर
बैठ जाते दिल दहल कर राह में

रात की चीखों के पैकर बन न जाएं
शाम के कुछ साए ढ़ल कर राह में

सामने आते हैं क्यूँ हर गाम पर
ऐ ''ज़िया'' मन्ज़र बदल कर राह में

—

आज सुन कर ऐ ''ज़िया'' तेरी ग़ज़ल
शेअर की क़ुदरत का अन्दाज़ा हुआ

—

कश्मकश में हस्ती की कब से मुबतिला हूँ मैं
दिल की आरज़ूओं का ख़ून कर रहा हूँ मैं
ग़म ने इस क़दर मेरे दिल पे पा लिया क़ाबू
अपनी हर तमन्ना को तर्क कर चुका हूँ मैं
डूबना ही जब ठहरा क्या ख़ुदा को दूँ तकलीफ़
अपने दिल की किश्ती का ख़ुद ही नाख़ुदा हूँ मैं
हुस्न मेरी नज़रों में इक फ़रेब-ए-रँगीं है
फ़ितरत-ए-मुहब्बत से ख़ूब आशना हूँ मैं
देखना है तू मुझको ताबके नहीं मिलता
अपने आप को खोकर तुझ को ढूँढ़ता हूँ मैं
मेरे चारासाज़ों से काश कोई यह कह दे
आप ज़ख़्म हूँ अपना आप ही दवा हूँ मैं
काम क्या ‘‘ज़िया’’ मुझ को फ़िक्र-ए-बज़्म-ए-इम्काँ का
सरहद-ए-तमन्ना से आगे बढ़ गया हूँ मैं

—

मैंने उसी के सामने इश्क़ का राज़ कह दिया
मुझ से ये भूल हो गई आलम-ए-इज़्तरार में

—

अजनबी दुनिया में तेरा आशना मैं ही तो था
दी सज़ा तूने जिसे वो बेख़ता मैं ही तो था
मैं जो टूटा हो गया हँगामा-ए-महशर बपा
तार-ए-साज़-ए-बेसदा-ओ-बेनवा मैं ही तो था
नाख़ुदा-ओ-मौज-ए-तूफ़ाँ की शिकायत क्या करूँ
जिस ने ख़ुद किश्ती डूबो दी ऐ ख़ुदा मैं ही तो था
उस को बाहर ला के रुसवा कर दिया बाज़ार में
जो मुझे अँदर से देता था सदा मैं ही तो था
ता अबद करना पड़ेगा सुबह-ए-नौ का इन्तिज़ार
मुन्तज़िर रोज़-ए-अज़ल से शाम का मैं ही तो था
हो गया मसरूर बुत अपनी अना को तोड़ कर
दरमियान-ए-मा-ओ-तू इक फासला मैं ही तो था
था ''ज़िया'' अहसास-ए-तनहाई भरी महफ़िल में भी
मुझ से रह कर भी जुदा जो था मेरा मैं ही तो था

—

मुमकिन नहीं कि हुस्न न ले इश्क़ से असर
वो सामने तो आऐं, ज़रा गुफ़तगू करें

—

ख़ूबसूरत फ़रेब शादी है
फ़ितरत-ए-ग़म ही मुस्करा दी है
हम ने छेड़ा है जब भी साज़-ए- जुनूँ
तीरगी शब की गुनगुना दी है
आलम-ए-वज्द-ओ-बेख़ुदी में तुझे
हम ने आवाज़ बारहा दी है
ऐ ज़मीं हम ने तेरे क़दमों पर
आस्माँ की जबीं झुका दी है
हम ने तुफ़ान-ए-शोर-ओ-शेवन से
किश्ती-ए-जब्र डगमगा दी है
कोशिश-ए-अम्न तो बजा है मगर
आदमी फ़ितरतन फ़सादी है
ऐ ख़ुदा तूने अपने बन्दों को
ज़िन्दगी की कड़ी सज़ा दी है
ऐ "ज़िया" क़लब-ए-इश्क़ परवर में
हुस्न ने आग-सी लगा दी है

—

नाला-ए-नारसा नहीं कुछ भी   अब मुझे आसरा नहीं कुछ भी
पूछते हैं वो क्या नहीं कुछ भी   क्या कहूँ हौसला नहीं कुछ भी
हो वफ़ा या जफ़ा, मुहब्बत की   इब्तदा, एन्तेहा नहीं कुछ भी
मैं हूँ, किश्ती है, मौज-ए-तूफ़ाँ है   साहिल, ऐ नाख़ुदा नहीं कुछ भी
रोज़ करते हैं यूँ जफ़ा मुझ पर   जैसे मेरी वफ़ा नहीं कुछ भी
गुफ़्ता-ए-अक़्ल कुछ तो है वरना   जो जुनूँ ने कहा नहीं कुछ भी
कट गई उम्र पा-ए-साक़ी पर   तलख़ियों का गिला नहीं कुछ भी
हो मेरी ख़ामुशी पे चींबजबीं   अभी मैंने कहा नहीं कुछ भी
आज़माईश अगर वफ़ा की न हो   इम्तिहान-ए-वफ़ा नहीं कुछ भी
मेरी दुनिया में क्यूँ सिवाए अजल   ज़िन्दगी का सिला नहीं कुछ भी
वादी-ए-ग़म में ला के छोड़ दिया   अब खुला, रहनुमा नहीं कुछ भी
ऐ ''ज़िया'' इन बुतों के इश्क़ में क्यूँ
नारवा और रवा नहीं कुछ भी

—

न मिलती हो शराब-ए-ज़िन्दगी की तलख़ियाँ जिन में
सुना ये है ''ज़िया'' के दिल से ऐसे शेअर कम निकले

—

पर्दा चेहरे से उठा रक्खा है
खुली आँखों पे गिरा रक्खा है

वो दिलों में है न बाज़ारों में
नाम जिस शय का वफ़ा रक्खा है

मेरी आँखों में भी आँखें डालो
आइनाख़ानों में क्या रक्खा है

आमद-ए-हश्र है क्या आँगन में
शोर कव्वों ने मचा रक्खा है

झूट के शहर की ख़ुशफ़हमी ने
सच को सूली पे चढ़ा रक्खा है

कौन पहचाने किसे सब ने यहाँ
चेहरा चेहरे पे लगा रक्खा है

इन धड़कते हुए शेअरों में ‘‘ज़िया’’
और क्या दिल के सिवा रक्खा है

—

ओ बेनियाज़ तूने ये सोचा भी है कभी
निकले जो तेरी बज़्म से फिर वो कहाँ रहे

—

बेवफ़ा कहिए मुझे या बावफ़ा कहिए मुझे
अपने ही दर का गदा-ए-बेनवा कहिए मुझे
पहले रोअब-ए-हुस्न से कर दीजिए मुझ को ख़मोश
फिर भरी महफ़िल में साज़-ए-बेसदा कहिए मुझे
कुछ कहे दुनिया मगर ऐ बन्दा परवर आप तो
पासबान-ए-ग़म, नगहबार-ए-वफ़ा कहिए मुझे
आपका सौदाई कहता है मुझे सारा जहाँ
आपसे मैं क्या कहूँ अब आप क्या कहिए मुझे
मैं ही दरिया, मैं ही साहिल, मैं ही तूफ़ाँ, मैं ही मोज
बादबाँ, चप्पू, सफ़ीना, नाख़ुदा कहिए मुझे
जाने कोई राम कब आकर मुझे भी दे निजात
ठोकरों में एक पत्थर राह का कहिए मुझे
ज़ुल्मतों का नाम तक बाक़ी न होगा बाद अज़ाँ
रात बन कर ही ज़रा अपना ''ज़िया'' कहिए मुझे

—

मेरे जुनूँ ने तेरी सादगी से पैदा की
वो बात जिसको न समझा हूँ मैं न तू समझे

—

मौज-ए-ग़म गुल कतर गई होगी
नद्दी चढ़ कर उतर गई होगी
ग़र्क़ होना था जिस को वो किश्ती
साहिलों से गुज़र गई होगी
हम ज़मींवालों की जो पहले पहल
आस्माँ पर नज़र गई होगी
आइनाख़ाने में बा हर सूरत
आब-ओ-ताब-ए-गुहर गई होगी
हादसों आफ़तों मसाइब से
ज़िन्दगी क्या जो डर गई होगी
उस सफ़र में ख़लाओं के ता दूर
हसरत-ए-बाल-ओ-पर गई होगी
ऐ ''ज़िया'' बात अक़्ल-ओ-दानिश की
दिल का नुक़सान कर गई होगी

—

तारे मेरी तरह हैं जिगर सोज़-ओ-बेक़रार
तारों को माँगता हूँ शब-ए-रूसियाह से

—

अभी उम्मीद-ए-क़रार-ओ-सुकूँ कहाँ मुझको
अभी तो इश्क़ के देने हैं इम्तिहाँ मुझ को
कभी गुलों कभी मौजों कभी सितारों में
तलाश-ए-हुस्न तो रखती है सरगराँ मुझको
न दैर में न हरम में झुकी जबीन-ए-नियाज़
कहीं तो मिलता तेरा सँग-ए-आस्ताँ मुझको
अज़ल में जब हुई तक़सीम-ए-आलम-ए-फ़ानी
बतौर-ए-ख़ास मिला सोज़-ए-जाविदाँ मुझको
मेरे बग़ैर ''ज़िया'' कारवाँ रवाना हुआ
मिली अमाँ तो तह-ए-गरद-ए-कारवाँ मुझको

—

अहसास को ज़ुबाँ न मिली किस तरह कहूँ
कैफ़ियत-ए-लतीफ़ जो रँज-ओ-मुहन में है
शरह-ओ-बयान-ए-ग़म की इजाज़त मिली मगर
अपनी ख़बर ही किस को तेरी अन्जुमन में है
ताब-ए-नज़र अगर हो तमाशा करें कलीम
अब हर तरफ़ ज़िया ही ''ज़िया'' अन्जुमन में है

चाक-ए-दामन का भरम रख लिया रुसवाई ने
ओड़ ली ग़म की रिदा दर्द के शेदाई ने

शौक़ के जादा-ए-पुरपेच को ऐ पा-ए-जुनूँ
किया हमवार तेरी हौसलाअफ़ज़ाई ने

शबनमी क़तरों का ये रक़्स हरे पत्तों पर
दिल के ज़ख़्मों को न भरने दिया पुरवाई ने

दम-बा-दम बढ़ती हुई भीड़ में रहने न दिया
ग़म-ए-तनहाई का अहसास भी तनहाई ने

हाय कब खोले हैं यादों के दरीचे दिल में
अजनबी गाँव की बजती हुई शहनाई ने

सिलवटें बिस्तर-ए-राहत की बनीं निशतर-ए-ग़म
दिया पैग़ाम-ए-सहर रात की अन्गड़ाई ने

आड़े आई है तेरी मश्क़-ए-सुख़न वरना ''ज़िया''
कहलवाई है ग़ज़ल काफ़िया पैमाई ने

—

दम तोड़ती मौजें क्या साहिल का पता देंगी
ठहरी हुई किश्ती है ख़ामोश है तूफ़ाँ भी

—

रात कहती थी दिल से आँसू पी
यूँ ही उम्मीद में सहर के जी

जगमगाए चिराग़ ज़र्रों के
पड़ गई माँद शम्एं तारों की

गुल-ए-नरगिस है महव-ए-आईना
वाह रे आलम-ए-दूरूँबीनी

वो तो मैं ही था बारहा जिस ने
ज़िन्दा रहने को ख़ुदकुशी कर ली

किसे अहसास था असीरी का
बँद खिड़की अगर नहीं खुलती

जल बुझा जो पतँगा उस की ख़बर
आग की तरह शहर में फैली

शेअर कहते रहो ''ज़िया'' साहिब
ख़िदमत-ए-उर्दू और क्या होगी

—

सुख़नगोई ''ज़िया'' नाज़ाँ न मेरे शेअर पर क्यूँ हो
मिला है हज़रत-ए-सीमाब सा उस्ताद क़िस्मत से

—

देर कितनी अभी उन के आने में है
ज़िन्दगी अपनी हीले बहाने में है

मैं कहूँ, तुम सुनो तो कोई बात हो
वरना क्या बात दिल के फ़साने में है

बीते लम्हे हसीं, उन की यादें जवाँ
सहर ही सहर गुज़रे ज़माने में है

पाई दिल दे के दीवाना-ए-इश्क़ ने
वो मुसर्रत जो आँसू बहाने में है

यास की रात का आलम-ए-जाँकनी
शम्अ उम्मीद के झिलमिलाने में है

राख कर दे जला कर न सैय्याद को
वो जो बिजली मेरे आशियाने में है

ऐ "ज़िया" ज़िन्दगी, बन्दगी, आशिक़ी
जोर सहने में है, नाज़ उठाने में है

—

ग़म-ए-बुताँ में कटी उम्र और अब दिल को
शिकायत-ए-ग़म-ए-दुनिया है देखिए क्या हो

—

दुख दर्द सह   चुप फिर भी रह
साहिल से डर   मौजों में बह
सुन लें जिसे   वो बात कह
उलफ़त निबाह   हर ज़ुल्म सह
मेरी भी सुन   अपनी भी कह
सब चोर हैं   हुशियार रह
अब ऐ ‘‘ज़िया’’
कुछ भी न कह

—

जहाँ मेरी जबीन-ए-शौक़ बेताबाना झुकती है
वहीं होगा यक़ीनन तेरा सँग-ए-आस्ताँ पैदा
ख़िजाँ का वक़्त-ए-रुख़सत है, बहार आने के दिन आए
क़फ़स वालों के दिल में है जुनून-ए-आशियाँ पैदा
करूँगा नज़्म जब तेरी मुहब्बत का कोई जज़्बा
मेरे हर शेअर से होगी निशात-ए-जाँविदाँ पैदा
‘‘ज़िया’’‘‘सीमाब’’ को रोएगी दुनिया-ए-सुख़न बरसों
नहीं मुमकिन हो फिर ऐसा अमीर-ए-कारवाँ पैदा

—

शाख़ अरमानों की हरी ही नहीं
आँसूओं की झड़ी लगी ही नहीं

साया-ए-आफ़ताब में ऐ रिन्द
तीरगी भी है रोशनी ही नहीं

क़ैद-ए-हस्ती से किस तरह छूटें
राह कोई फ़रार की ही नहीं

मेरे शेअरों में ज़िन्दगी की है
वो हक़ीक़त जो शाइरी ही नहीं

वो हुनर आदमी की फ़ितरत है
जो हुनर ऐब से बरी ही नहीं

धर्म आदमगरी सिखाता है
सिर्फ़ तक़सीम-ए-आदमी ही नहीं

गिनता हूँ दिल की घड़कनें कि अब
तूने आवाज़ मुझ को दी ही नहीं

उसे इरफ़ान-ए-ज़ुहद क्या हो ''ज़िया''
मस्त आँखों से जिसने पी ही नहीं

—

ज़र्रों से हुस्न-ओ-नूर जहाँ आशकार है
इरफ़ाँ मगर उसी को है जो राज़दार है

ऐसा न हो कि तेरी ख़िज़ाँ हो मेरी ख़िज़ाँ
मेरी ख़िज़ाँ तो वो है जो तेरी बहार है

तय कर चुका हूँ मँज़िलें आग़ाज-ए-शौक़ की
अब इन्तिज़ार है न शब-ए-इन्तिज़ार है

ख़लवत में शाम-ए-हिज्र की तनहा नहीं हूँ मैं
है राज़ राज़दार तो ग़म ग़मगुसार है

ये मयकदा है मिम्बर-औ-मेहराब तो नहीं
जो होश में नहीं है वही होशियार है

वादा वफ़ा हुआ है न होगा कभी मगर
आँखों को सुबह-ओ-शाम तेरा इन्तिज़ार है

दस्तूर-ए-आशिक़ी है जहाँ से अलग ''ज़िया''
नाकाम-ओ-नामुराद फ़क़त कामगार है

—

पलकों पे मेरी ख़्वाब सजा कर तमाम रात
कहता है मुझ से जो मेरा अफ़साना कौन है

—

टूट कर आईना लगे है मुझे
वो जो बन्दा ख़ुदा लगे है मुझे

मैं भले को बुरा कहूँ क्यूँ कर
है बुरा जो भला लगे है मुझे

ठीक ही तो पता बताया था
फिर भी कुछ ढूँढता लगे है मुझे

किसी आँगन में बजती शहनाई
क्या बताऊँ कि क्या लगे है मुझे

रात भर नाचता नचाता रहा
वो मेरा साँवला लगे है मुझे

माँग कर दिल हुआ शिकार-ए-ख़िरद
ये तो मेरी ख़ता लगे है मुझे

ये जो बैठा है हुजरा-ए-दिल में
मैं नहीं दूसरा लगे है मुझे

कमसुख़न कमनिगाह कमआमेज़
कोई शाइर ''ज़िया'' लगे है मुझे

—

आँख कहती है हिजाब-ए-रुख-ए-ज़ेबा क्या है
हुस्न कहता है कि तूने अभी देखा क्या है

जश्न-ए-मस्ती है कहीं मातम-ए-हस्ती है कहीं
रात दिन सोच रहा हूँ कि ये होता क्या है

परवरिश ख़ार की आग़ोश में गुल पाते हैं
ऐ निज़ाम-ए-चमनिस्ताँ ये तमाशा क्या है

लोग कहते हैं कि मैं भूल गया हूँ तुझको
चाँद को ता बा सहर देखते रहना क्या है

किसी नाकाम-ए-तमन्ना ही से चल कर पूछें
मुद्दआ-ए-दिल-ए-नाकाम-ए-तमन्ना क्या है

रोना इस बात पे आता है कि सोचा क्या था
और इस बात पे हँसता हूँ कि होता क्या है

आँखें उन की हैं मेरा दिल भी उन्हीं का है ''ज़िया''
मुझे अपना न कहें वो मेरा अपना क्या है

—

शब-ए-फ़िराक़ की बढ़ती हुई सियाही में
ख़ुदा को मैंने पुकारा है देखिए क्या हो

—

तमाशा है सब कुछ मगर कुछ नहीं
सिवाए फ़रेब-ए-नज़र कुछ नहीं
ज़माना ये है रक़्स-ए-ज़र्रात का
हिकायात-ए-शम्स-ओ-क़मर कुछ नहीं
सितारों से आगे मेरी मँज़िलें
बला से अगर बाल-ओ-पर कुछ नहीं
मुहब्बत की ये महवीयत क्या कहूँ
वो आए तो अपनी ख़बर कुछ नहीं
मेरा शौक़-ए-मँजिल है साबित क़दम
कोई रहज़न-ओ-राहबर कुछ नहीं
मुहब्बत है इन्सान की आबरू
बग़ैर-ए-मुहब्बत बशर कुछ नहीं
''ज़िया'' तो मरीज़-ए-ग़म-ए-इश्क़ है
इलाज इसका ऐ चारागर कुछ नहीं

—

मुद्दत हुई चाहा था तुझे मुझ से अभी तक
लेता है ज़माना उसी तक़सीर के बदले

—

पर-ए-हुमा इक महान पर है
परिन्दा ऊँची उड़ान पर है

ज़मीं को पामाल करने वाला
दिमाग़ जो आसमान पर है

उतर के धरती पे आ न जाए
वो धूप जो सायबान पर है

कभी तो आएगी मेरे लब पर
वो बात जो हर ज़ुबान पर है

बिगड़ के जब से गया है कोई
बनी हुई दिल पे जान पर है

क़दम हद-ए-लामकाँ में लेकिन
नज़र अभी तक मकान पर है

समुन्दरों से कहाँ बुझेगी
वो तिशनगी जो उठान पर है

''ज़िया'' ये कैसी है बदगुमानी
शक उस को मेरे गुमान पर है

—

दुनिया मेरी नज़र से तुझे देखती रही
फ़िर मेरे देखने में बता क्या कमी रही

क्या ग़म अगर क़रार-ओ-सुकूँ की कमी रही
ख़ुश हूँ कि कामयाब मेरी ज़िन्दगी रही

इक दर्द था जिगर में जो उठता रहा मुदाम
इक आग थी कि दिल में बराबर लगी रही

दामन दरीदा लब पे फ़ुग़ाँ आँख ख़ूँचकाँ
गिरकर तेरी नज़र से मेरी बेकसी रही

आई बहार जाम चले मय लुटी मगर
जो तिशनगी थी मुझको वही तिशनगी रही

खोई हुई थी तेरी तजल्ली में कायनात
फिर भी मेरी निगाह तुझे ढूँढती रही

जलती रहीं उमीद की शम्ऐं तमाम रात
मायूस दिल में कुछ तो ''ज़िया'' रोशनी रही

—

खिड़की से झाँक कर ज़रा बाहर तो देख लूँ
क्या वक़्त का भरोसा अभी है अभी नहीं

—

हलका-ए-दाग़-ए-इश्क़ दिल पर फेंक
सर उठाता हूँ कोई पत्थर फेंक
मैं जिसे ख़ून-ए-दिल से लिखता रहा
वही नग़मा इधर नवागर फेंक
मेहर-ओ-माह बह गये लहू हो कर
अपने हाथों से तू भी ख़न्जर फेंक
जन्म पाती है इन से नातहज़ीब
गन्दे अण्डों को घर से बाहर फेंक
शबनमिस्ताँ सजा के पलकों पर
नाविका-ए-गमज़ा दिल के अँदर फेँक
सतह-ए-दरिया पे मुस्तक़िल हलचल
तुझको किसने कहा था कँकर फेंक
मेरी तरदामनी की शर्म ज़रा
अब इधर भी कोई गुल-ए-तर फेँक
तुझे दो रोज़ जीना है तो ''ज़िया''
छील कर दिल से मौत का डर फेंक
—

एक दो घूँट मय जो पी मैंने   सारी मस्ती सिमेट ली मैंने
तेरी दुनिया सँवारने के लिए   अपनी दुनिया उजाड़ दी मैंने
बिगड़े बैठे हैं, मानते ही नहीं   बात ऐसी भी क्या कही मैंने
ख़ुद ही आवाज़ मौत को दी है   माँग कर तुझ से ज़िन्दगी मैंने
भीक ग़म की जो तेरे दर से मिली   अहल-ए-दिल में वो बाँट दी मैंने
क्या कहूँ, किस नज़र से देखी है   शाम से राह सुबह की मैंने
फिर भी पाया न अपने घर का पता   छान मारी गली गली मैंने
जान में क्या रखा था ग़म के सिवा   जान दे दी ख़ुशी ख़ुशी मैंने
ग़ैर मानूस सी लगी मुझको   अपनी आवाज़ जब सुनी मैंने
साँस लेने को रुक गया दम भर   पाई खिड़की कोई खुली मैंने
की अँधेरों में ऐ ‘‘ज़िया’’ अकसर
दिल जला कर ही रोशनी मैंने

—

बसे दिल में आँखों से मस्तूर होकर
क़रीब और भी आ गये दूर हो कर
तेरा बन्दा ए ख़ालिक़-ए-होश-ओ-मस्ती
तेरा नाम लेता है मजबूर होकर
सुकूँ ज़हन-ओ-ख़ातिर का भी तूने खोया
‘‘ज़िया’’ क्या मिला तुझको मशहूर होकर

—

अश्क पलकों पे फिर सजाऊँ क्या ?
फिर मुहब्बत के गीत गाऊँ क्या ?
दिल ही जब बुझ गया तो ऐ शब-ए-ग़म
आँधियों में दिये जलाऊँ क्या ?
आफ़तें हैं तो ज़िन्दगी भी है
आफ़तों से निजात पाऊँ क्या ?
राज़दार-ए-अलम, शरीक-ए-ग़म
दर-ओ-दीवार को बनाऊँ क्या ?
तीरह-ओ-तार है मेरी दुनिया
मेहर-ओ-माह का फ़रेब खाऊँ क्या ?
लाख परदे, हज़ार चेहरे हैं
ऐ ''ज़िया'' अब नज़र हटाऊँ क्या ?

—

दिल की धड़कन को मिली दर्द की सौग़ात नई
खिँच गई ज़हन में तस्वीर-ए-ख्य़ालात नई
फिर शब-ए-वादा के क़दमों की सदा आती है
दिल में पैदा हुई फिर शोरिश-ए-जज़्बात नई
आज ही पुरसिश-ए-अहवाल को वो आए हैं
आज ही कहने को कोई भी नहीं बात नई

—

ग़म-ए-अन्जाम-ए-शादमानी से
दिल हिरासाँ है कामरानी से
निकहत-ओ-रँग-ए-गुल को क्या निसबत
मेरे ग़म से तेरी जवानी से
कारोबार-ए-हवस चला क्या क्या
जिन्स-ए-इख़लास की गिरानी से
हुआ हमवार जादा-ए-मँज़िल
पा-ए-हिम्मत की सख़्तजानी से
सोज़ भी अश्क-ए-ग़म में शामिल है
आग का मेल और पानी से ?
क्यूँ मेरा दिल धड़कने लगता है
क़ैस-ओ-फ़रहाद की कहानी से
सीख ली बुलबुलों ने नग़मागरी
ऐ ''ज़िया'' तेरी ख़ुशबयानी से

—

मुझे धोका दिया मेरी नज़र ने
करूँ तुझ से शिकायत क्या, गिला क्या

—

दिल-ए-आदम को वहशत है ज़मीं से
हवा आई कोई ख़ुल्द-ए-बरीं से
जो निकली थी दिल-ए-अन्दोहगीं से
जली बिजली उस आह-ए-आतिशीं से
हुई तैयारियाँ दार-ओ-रसन की
अनालहक़ की सदा आई कहीं से
जहाँ से क़हक़हे उठे थे शायद
मेरे आँसू भी आए हैं वहीं से
चली दुनिया में रस्म-ए-सजदारेज़ी
कुछ उनके दर से कुछ मेरी जबीं से
यकीं के पाँव में लग़ज़ीश न आए
बदल जाती है तक़दीरें यकीं से
मुहब्बत की ''ज़िया'' सरशारियाँ हैं
नहीं मुझ को ग़रज़ दुनिया-ओ-दीं से

—

तुम ने अब ख़ार समझ कर तो निकाला है मुझे
और जो महसूस हुई ताज़ा चुभन मेरे बाद

—

गीत तेरे हुस्न के गाता हूँ मैं

चाँद की किरणों को तड़पाता हूँ मैं

मँज़िल-ए-मक़सूद होती है क़रीब

रास्ते में जब भटक जाता हूँ मैं

दे रहा हूँ रात दिन ग़म को फ़रेब

दिल को उम्मीदों से बहलाता हूँ मैं

मेरे इस्तक़बाल को साक़ी उठे

मयकदे में झूमता आता हूँ मैं

उसके दिल में भी है दाग़-ए-सोज़-ए-इश्क़

चाँद को हमदास्ताँ पाता हूँ मैं

छेड़ती है सुबह जब साज़-ए-हयात

वज्द में आकर ग़ज़ल गाता हूँ मैं

ख़ुद तड़पता हूँ तड़प कर ऐ ''ज़िया''

अहल-ए-महफ़िल को भी तड़पाता हूँ मैं

—

अजब दायरा है मुहब्बत की दुनिया

चले थे जहाँ से वहीं आ गये हम

—

तन बदन में लगी है आग ही आग
मैं न कहता था रोशनी से भाग
शोरिशों में सुकूँ के ख़्वाब न देख
आ गया सर पे सूरज अब तो जाग
अब ख़्याल उन का दिल में आता है
जैसे फूँकारता हुआ कोई नाग
अलअमाँ सर्द मेहरी-ए-दुनिया
मुतरिबा छेड़ कोई दीपक राग
रात की गोद हो गई सूनी
जँगलों में लगाई किस ने आग
कारगाह-ए-हयात के दो रुख़
अक़्ल का शाईबा और दिल का विभाग
ली ''ज़िया'' दर्द ने फिर अँगड़ाई
हुए बेदार दिल के सोए भाग

—

उभरने दो अदब को ऐ ''ज़िया'' ज़ुल्मात-ए-पस्ती से
सितारा बन के चमकेगा यही रोशन कलाम अपना

—

वो मुसाफिर जो थक गया होगा
रास्ते से भटक गया होगा
गूँचा गूँचा चटक गया होगा
गोशा गोशा महक गया होगा
आहटें नर्म नर्म पत्तों की
पेड़ पर आम पक गया होगा
डाल कर फन्दा अपनी गरदन में
कोई छत से लटक गया होगा
मुड़ के देखा जो तूने लोगों को
मेरी नज़रों पे शक गया होगा
उसकी उँगुली पकड़ के चलता था
हाथ मेरा झटक गया होगा
अरे अहसास-ए-तिशनगी तौबा
कोई साग़र ख़नक गया होगा
गिरता पड़ता ये जादा-ए-पुरपेच
ऐ ''ज़िया'' दूर तक गया होगा

—

सेहत अलफ़ाज़ की बीमार किताबों में न ढूँढ
जो सवालों में नहीं बात जवाबों में न ढूँढ
चार दीवारी के अँदर है तसव्वुर घर का
जज़्बा–ए–हुब्ब–ए–वतन ख़ानाख़राबों में न ढूँढ
जलवा–ए–ज़ीस्त के हर मोड़ पे है लग़जिश–ए–पा
दिल की तसकीन का सामान अज़ाबों में न ढूँढ
वा दरीचों से चली आती है। घुसपेठ हवाएँ
बू–ए–इख़लास नज़रबन्द गुलाबों में न ढूँढ
डालकर रक्खे हैं जो आँखों पे हटा दे पर्दे
खुले बाज़ार में तू ख़ुद को हिजाबों में न ढूँढ
वजह रुसवाई तेरा शेअर भी हो कोई ''ज़िया''
इक झलक नूर सियाहपोश निसाबों में न ढूँढ

—

मँज़िल–ए–होश में कुछ भी तो नहीं ग़म के सिवा
रास्ता कोई दिखा दे मुझे मयख़ाने का

—

पूछते हैं वो के ग़म क्या चीज़ है
ख़ुद नहीं समझे उन्हें समझाएं क्या

—

साँचे में जुनूँ के दिल को ढ़ालें
होश और ख़िरद का भेद पा लें

रुख़ से जो नक़ाब वो उठा लें
हम ज़ौक़-ए-नज़र को आज़मा लें

ऐ अक़्ल न दे फ़रेब हम को
खोए हुए हैं कि उन को पा लें

हस्ती इक राग है अधूरा
इस की न गतें हैं और न तालें

पिनहाँ वो यहीं कहीं तो होंगे
हर शय को बग़ौर देखें भालें

हम चलते हैं तेरे साथ ऐ मौत
अन्जाम-ए-हयात तो सुना लें

हर सिमत है कहकहों की झँकार
क्या हम भी ज़रा-सा मुस्कुरा लें

जी में है ''ज़िया'' कि अपने दिल को
बेगाना-ए-आरज़ू बना लें

—

ज़ीस्त ग़म में खो गई ताबनाक हो गई
आँसूओं की गोद में दिल की राख सो गई
शोरिशों के राग में कायनात खो गई
गेसूओं के साए में रात मस्त हो गई
क्या पलट के आएगी रात ग़म की जो गई
याद इन्तिज़ार में निश्तरें चुभो गई

—

गिरता पड़ता ही किसी दिन तो सँभल जाऊँगा
चाँद तारों से बहुत दूर निकल जाऊँगा

मुतमईन हैं वो मुझे दे के उम्मीदों के चिराग़
तिफ़्ल-ए-मक्तब हूँ, खिलौनों से बहल जाऊँगा

इस भरी बज़्म में है कौन जिसे अपना कहूँ
मुशतइल आग में तनहाई की जल जाऊँगा

कोई दीवाना करेगा न उधर का फिर रुख़
जब तेरे शहर की गलियों से निकल जाऊँगा

महफ़िल-ए-शौक़ में आया हूँ ''ज़िया'' मुहर-ब-लब
गुनगुनाता हुआ पुरसोज़ ग़ज़ल जाऊँगा

—

लूट लिया दिल इक गोरी ने पनघट पर
चोंक उठता हूँ सोते में हर आहट पर
शम्अ लहद का किसने पिघलना देखा है
जलती चिताऐं सब ने देखीं मरघट पर
साग़र में भर कर मयख़ाना पी गए लोग
टाल दिया साक़ी ने हमको तलझट पर
बूढ़ा सूरज ताक लगाए बैठा है
तारों के इक नन्हें मुन्ने झुरमट पर
आज भी टकराता है दिल से वही नग़मा
छेड़ दिया था तुमने जिसे कल पनघट पर
डूबी जब मन्झधार में मेरी नाव ''ज़िया''
मैं बैठा तकता था दरिया के तट पर

—

रोऐं हम और मुस्कराऐं आप   इश्क़ अगर है यही तो जाऐं आप
हम पे चश्म-ए-करम न हो लेकिन   हमें महफ़िल से क्यूँ उठाऐं आप
छेड़ कर साज़-ए-दिल के तारों को   नग़मा-ए-नौ कोई सुनाऐं आप
कह के लाया हूँ मैं ''ज़िया'' वो ग़ज़ल   सुन के हर शेअर झूम जाऐं आप

—

थपेड़े हम अमवाज के सहते सहते
किनारे पहुँच जाऐंगे बहते बहते
चलो अब नई दुनिया आबाद कर लें
कि जी भर गया है यहाँ रहते रहते
फ़रेब-ए-तलाश-ए-निशात-ए-सुकूँ में
कटी उम्र रन्ज-ओ-अल्म सहते सहते
किसी रोज़ दुनिया से उठ जाऐंगे हम
फ़साना ग़म-ए-इश्क का कहते कहते
मुसर्रत का एहसास भी अब नहीं है
हुआ हाल दिल का ये ग़म सहते-सहते
हमें आख़िर-ए-कार नींद आ चली थी
वो क्यूँ रुक गए दास्ताँ कहते-कहते
तरसती हैं अब क़तरा-ए-ख़ूँ को आँखें
‘‘ज़िया’’ ख़ुश्क दरिया हुआ बहते बहते

—

जब मेरा साथ मुझ से छूट गया
तू भी मेरा हुआ हुआ न हुआ

—

ये एक दिल में हज़ारों कुदूरतें कैसी

है एक जान पर सदहा मुसीबतें कैसी

मेरे ही घर पे है क्यूँ बर्क़-ओ-बाद की नज़रें

मेरे ही सहन में उतरी हैं आफतें कैसी

बदलते वक़्त में भी बन्दा-ए-ख़ुदा अब तक

बदल सका न जिन्हें हैं वो आदतें कैसी

हमारे इश्क़ की रुसवाईयाँ माआज़ अल्लाह

तुम्हारे हुस्न की फैली हैं शुहरतें कैसी

कोई तो फूलों से कह दो कि अब्र-ए-बाराँ ने

दिलों में काँटों के रख दी हैं हसरतें कैसी

सिमट के पर्दा-ए-शेअर-ए-ग़ज़ल में बैठी हुई

मेरे सहीफ़ा-ए-दिल की हैं आयतें कैसी

तेरे कलाम का ये हुस्न है ''ज़िया''वरना

जदीदियत के सहारे क़दामतें कैसी

—

अब मुझे दो भी मुहब्बत की सजा

ले लिया इलज़ाम अपने सर खुला

—

बीते हुए दिनों की यादें सजा रहे हैं
जो पा के खो चुके थे, वो खो के पा रहे हैं
इक हम कि बदली बदली आँसू बहा रहे हैं
इक वो कि बिजली बिजली शम्एं जला रहे हैं
नादाँ हैं कितने भौ।रे, फूलों की जुस्तजू में
काँटों से अपना दामन नाहक़ बचा रहे हैं
क्या जाने रात गुज़री क्या शाख़-ए-आशियाँ पर
ख़ामोश बुलबुलें हैं, गुल गुनगुना रहे हैं
मुँह अपना देखते हैं जो दिल के आईने में
बेचेहरा ज़िन्दगी से परदा उठा रहे हैं
कैफ़िय्यत अपने दिल की समझा न कोई अब तक
हम शहर-ए-आरज़ू में बेमुद्दआ रहे हैं
ख़्वाबों में रहने वाले कैसे हैं, जो ज़मीं से
बस एक जस्त ही में गरदुँ पे जा रहे हैं
कासा तही है लेकिन बे दस्त-ओ-पा नहीं हम
तदबीर के धनी हैं, बिगड़ी बना रहे हैं
उनकी ''ज़िया'' है कैसी फ़िक्र-ए-ख़ुदाशनासी
जो अपने आप से भी नाआशना रहे हैं
—

शब-ए-ग़म है मेरी तारीक बहुत
हो न हो सुबह है नज़दीक बहुत

उन से मैं दूर हुआ ख़ूब हुआ
आ गए वो मेरे नज़दीक बहुत

ग़म-ए-जानाँ मेरे दिल से न गया
की ग़म-ए-दहर ने तहरीक बहुत

मिल गई मर के हयात-ए-जावेद
तेरे बीमार हुए ठीक बहुत

कम से कम हुस्न की रुसवाई में
थी ग़म-ए-इश्क़ की तज़्हीक बहुत

रहनवर्दान-ए-जुनूँ बैठ गए
मँज़िल-ए-शौक़ थी नज़दीक बहुत

ऐ ''ज़िया'' हमको दर-ए-साक़ी से
कम सही फिर भी मिली भीक बहुत

—

आदमी है मगर अधूरा है
पारसा के सिवा कुछ और नहीं

—

रह-ए-वफ़ा में ज़रर सूदमन्द है यारो
है दर्द अपनी दवा ज़हर कन्द है यारो

घटा बढ़ा के भी देखा मगर न बात बनी
ग़ज़ल का रूप रिवायत पसन्द है यारो

खुला जिसे ग़लती से मैं छोड़ आया था
मेरे लिए वही दरवाज़ा बन्द है यारो

ग़ज़लसराई थी जिसके लिए बग़ैर उस के
गुलों का ख़न्दा -ए-लब ज़हरख़न्द है यारो

मुझे खबर है कि अपनी खबर नहीं मुझको
मेरे सिवा भी कोई होशमन्द है यारो

मिले जो दस्त-ए-तमन्ना से क्यूँ न पी जाऊँ
वो ज़हर भी तो मेरे हक़ में क़न्द है यारो

न जाने तोड़ के उड़ जाएगी कहाँ इक दिन
हिसार-ए-जिस्म में जो रूह बन्द है यारो

ज़मीं पे रहता है उड़ता है आसमानों पर
''ज़िया''की पस्ती भी कितनी बुलन्द है यारो

—

साए बढ़ कर आशियाँ तक आ चुके
दिन बहारों के चमन से जा चुके
काफ़िलेवालो ज़रा सुस्ता भी लो
रास्तों की ठोकरें तो खा चुके
है यही आलम तो लफ़्ज़ों का लिबास
दिल के अरमानों को हम पहना चुके
काम आया बे पर -ओ-बाली का ग़म
इस तरफ़ गरदूँ से उड़कर आ चुके
रँग लाए दो दिलों के फ़ासले
दरमियाँ दीवार थी जो ढ़ा चके
तेरी दुनिया में जिन्हें जीना पड़ा
वो तेरी रहमत पे ईमाँ ला चुके
ऐ ''ज़िया'' तू उड़ती बातों पर न जा
लोग अफ़वाहें बहुत फैला चुके

—

माँगने पर नहीं देता है जो मेरा भी पता
वही बिन माँगे मुझे सारी ख़ुदाई दे है

—

दिन के पीछे रात लगी है रात के पीछे दिन
सूरज को भी सर पे उठा ले तू भी तारे गिन
जीवन पा कर नाहक़ तूने खोया है सुख चैन
थे तुझ बिन भी चाँद सितारे होंगे भी तुझ बिन
आधी रात की सहमी ज़ुल्मत बैठी सर लटकाए
सड़ती गलती लाशों पर रक़्साँ है भूत और जिन
नोमीदी क्या फैलाती है काले डरावने जाल
बूढ़े शहर में अरमानों के दिल हैं अभी कमसिन
मुस्तक़बिल रोशन है अपना उक़बा की क्या फिक्र
रातों का जब ख़ौफ़ न होगा आते हैं वो दिन
जोर-ए-ज़माना दर्द-ए-मुहब्बत दूरी महरूमी
मैं सब का ममनून-ए-करम हूँ सब हैं मेरे मोहसिन
फ़ाँसी पर चढ़ना ही होगा बात ''ज़िया'' ये है
जुर्म-ए-वफ़ा में पकड़े गए हैं कोई नहीं ज़ामीन

—

ख़ैर हो जाएगा इक रोज़ उन्हें ख़ुद मालूम
वो जो कहते हैं ''तेरी आह में तासीर नहीं''

—

वा मेरा दीदा–ए–बीना है तो
मैंने दुनिया तुझे देखा है तो
इक नई कहकशाँ का मन्जर
मैंने पलकों पे सजाया है तो
आईना देख के मालूम हुआ
कोई दीवाना भी मुझ–सा है तो
पा बा जौलाँ रहे क़तरा क़तरा
लम्हे लम्हे का तकाज़ा है तो
कई सदियों से जुड़ा हूँ अब तक
मेरा मैं टूट के बिखरा है तो
अक़्स ही अक़्स हैं लेकिन हर अक़्स
आइनाख़ाने में तनहा है तो
ऐ ''ज़िया'' तू भी किसी का हो जा
कोई दुनिया में किसी का है तो

—

मेरे सिवा है यहाँ कौन दार का शायाँ
कुलाह–ओ–ताज पे मैंने ही हाथ डाले हैं

—

तेरे ग़म से सीखा है दिल ने यही ना
मुहब्बत की दुनिया में मर मर के जीना
उसे डूबना मौज-ए-तूफ़ाँ में ठहरा
कहाँ सू-ए-साहिल चला हे सफ़ीना
मेरे दिल में उभरा जो दाग़-ए-मुहब्बत
वो चमका अँगूठी में बन कर नगीना
ये मीना ये साग़र ये ख़ुम तोड़ डालो
कि रिन्दी है साक़ी की आँखों से पीना
वो मेरी ग़ज़ल झूम कर गा रहे हैं
मुझे शाइरी रास आ ही गई ना
लब-ए-बाम शानों पे लहराई ज़ुल्फ़ें
वो काली घटाओं को आया पसीना
दिल-ओ-रूह में मस्तियाँ भर गया है
वो साग़र जो साक़ी से था मैंने छीना
''ज़िया'' मेरा मज़हब तो इन्सानियत है
बनारस है दिल में नज़र में मदीना

—

हवा ज़न्जीरों में जकड़ी गई है
बड़ी आवारा थी पकड़ी गई है

परिन्दे भी दरिन्दे भी परीशाँ
कहाँ जँगलात की लकड़ी गई है

दर-ओ-दीवार पर बुनती थी जाले
न जाने वो कहाँ मकड़ी गई है

हवा अब जेल की खानी पड़ेगी
हमारी चोरी तो पकड़ी गई है

बदलते मौसमों से कोई पूछे
कब आम आया है कब ककड़ी गई है

कलाई तक पहुँच जाए सलामत
बहन की भाई को रखड़ी गई है

अज़ल में जो उठाई थी ''ज़िया'' ने
उतर कर सर से वो गठड़ी गई है

—

हम पे तरदामनी का है इलज़ाम
अपना दामन ज़रा बचाऐं तो

—

बाद-ए-ख़िज़ाँ न जाने क्या राज़ खोलती है

फूलों की पत्तियों को मिट्टी में रोलती है

बेचारा मर चुका है हस्ती के ग़मकदे में

अब याद-ए-यार नाहक़ दिल को टटोलती है

ऐ फ़ितरत-ए-गुलिस्ताँ तेरी सितम ज़रीफ़ी

कलियों की मुस्कराहट काँटों में तोलती है

तकमील-ए-इश्क़ ऐ दिल कहते हैं क्या इसी को

ख़ामोश हम हैं, उन की तस्वीर बोलती है

ऐ मेरी चश्म-ए-गिरियाँ आँसू हैं तेरी दौलत

नायाब गौहरों को मिट्टी में रोलती है

बुलबुल के दिल से पूछो, वो आलम-ए-तबाही

नौरस कली चमन में जब आँख खोलती है

दीवानगी पे क़ाबू पा ही लिया ''ज़िया'' ने

हर जुँबिश उस के लब की अब राज़ खोलती है

—

कसक जिगर में, ख़लिश दिल में, अश्क आँखों में

वो याद आए हैं मुझ को किस एहतमाम के साथ

—

ग़म तेरी मुहब्बत का जब दिल को मिला होगा
अहसास-ए-वफ़ा सारी दुनिया को हुआ होगा
कुछ मस्ती-ए-बादा थी शामिल मेरी वहशत में
कुछ काम निगाहों से साक़ी ने लिया होगा
जिन के लिए दुनिया है मजबूर वफ़ाओं पर
यारब कभी उन को भी अहसास-ए-वफ़ा होगा
दिल जिसका रहा होगा महरूम मुहब्बत से
दुनिया में कोई ऐसा इन्साँ न हुआ होगा
किरणों से सँवारेगा जब चाँद गुलिस्ताँ को
मख़मूर फ़िज़ा होगी, दिल नग़मासरा होगा
अफ़साना मेरे ग़म का अफ़साना-ए-इबरत है
जिसने भी सुना होगा दिल थाम लिया होगा
कल रात जो टपका था जुँबिश से सितारों की
पैग़ाम-ए-मुहब्बत वो तुमने भी सुना होगा
साहिल पे ''ज़िया'' डूबी किश्ती मेरे अरमाँ की
मैंने तो यह सोचा था मेरा भी ख़ुदा होगा

—

राहज़न राहनुमा हो जैसे नाख़ुदा मौज-ए-बला हो जैसे
महफ़िल-ए-शेअर में पड़ जाती है जान दाद भी कोई दवा हो जैसे
फेर ली आँख भरी महफ़िल में मैंने कुछ माँग लिया हो जैसे
फिर दिल-ए-सोख़्ता मेरा शब भर सिफ़त-ए-शम्अ जला हो जैसे
देख कर भी नहीं देखा उनको परदा आँखों पे पड़ा हो जैसे
गलियों, कूचों में कोई फिरता है खो के दिल ढूँढ रहा हो जैसे
दिल शिकसता हूँ, कोई टूट के फिर शाख़ से पत्ता गिरा हो जैसे
याद करता हूँ तुझे शाम-ओ-सहर तू मुझे भूल गया हो जैसे
चलता बाज़ार में देखा है ''ज़िया''
खोटा सिक्का भी खरा हो जैसे

—

हम को तुमसे, तुम को हम से काम है
कार-ए-दुनिया तो बराए नाम है
ये जो पैहम गरदिश-ए-अय्याम है
इक मुसलसल कोशिश-ए-नाकाम है
परशिकसता ताइरों की बेहिसी
खौफ़-ए-ज़िन्दाँ है, न फ़िक्र-ए-दाम है
ख़ास है गो दस्त-ए-साक़ी का करम
चश्म-ए-साक़ी की इनायत आम है
जाने क्यूँ वो रँग-ए-मयख़ाना नहीं
रिन्द है, साक़ी है, मय है, जाम है
ये ''ज़िया'', ये बन्दा -ए-सिदक़-ओ-सफ़ा
बद नहीं, लेकिन बहुत बदनाम है

—

तड़प सजदों की है हर दर के पीछे
कभी इस दर कभी उस दर के पीछे
ज़माना कारवाँ बनता गया है
किसी रहज़न किसी रहबर के पीछे
ख़लल ख़्वाबों में कैसा आ गया है
बगूले उठ रहे हैं घर के पीछे
फ़सील-ए-शहर तक ले आया था अज़्म
पलटते भी तो क्या हम डर के पीछे
न जाने क्यूँ तआक़ुब में अभी तक
अँधेरे हैं शह-ए-अनवर के पीछे
यक़ीन-ए-आबलापाई सलामत
फिर उग आए हैं काँटे घर के पीछे
''ज़िया'' साहिब! चलोगे बच के कब तक
खड़ी है मौत हर पत्थर के पीछे

—

तुम्हारे नक़्श-ए-पा पर गामज़न हूँ
मगर ये राह जाती है कहाँ तक

—

वो एक पत्ता जो शाख़-ए-शजर पे तनहा है
उसी के क़दमों पे सर आँधियों का झुकता है

हिसार-ए-जिस्म से बाहर निकल के देखा है
ये आब-ओ-ख़ाक का पैकर अजब तमाशा है

तमाम मन्ज़र-ए-आलम निगाह का है फ़रेब
ज़मीं भी वहम है और आस्माँ भी धोका है

उसी को मैं लिए बैठा हूँ बन्द मुट्ठी में
हवा का झोंका जो घर में मेरे दर आया है

कोई मसीहा, न मन्सूर है ज़माने में
सलीब-ओ-दार का लेकिन हनोज़ चरचा है

मैं अपनी लाश लिए दर-ब-दर फिरा तो मगर
किसी ने पूछा न तेरा भी क्या इरादा है

कहाँ अँधेरे में खो जाता है न जाने ''ज़िया''
जो साया धूप में हर लहज़ा साथ रहता है

—

मुझे हयात है महबूब, क्या करूँ लेकिन
तेरे बग़ैर जब ऐ मर्ग-ए-नागहाँ न बने

—

रात को जब तारे अपने रोशन गीत सुनाऐंगे
हम भी दिल की गरमी से दुनिया को गरमाऐंगे
फ़ूल ज़रा खिल जाने दे सहन-ए-गुलशन में साक़ी
इक पैमाना चीज़ है क्या, मयख़ाना पी जाऐंगे
साक़ी को बेदार करो, मयख़ाना क्यूँ सूना है
बादल तो घिर आए है।, मयकश भी आ जाऐंगे
उनसे कहने जाते हैं बेताबी अपने दिल की
वो रूदाद-ए-ग़म सुनकर देखें क्या फ़रमाऐंगे
फ़ूलो तुम महफ़ूज रहो बाद-ए-ख़िज़ाँ के झोंकों से
अब हम रुख़सत होते हैं, इक दिन फिर भी आऐंगे
सावन की बरसातों में तेरा मलहारें गाना
ये लम्हे याद आऐंगे, याद आ कर तड़पाऐंगे
वो सोते हैं सोने दो, वा है आग़ोश-ए-उलफ़त
कहते कहते अफ़साना हम भी तो सो जाऐंगे
बाक़ी इक रह जाएगा नक़्श ''ज़िया''-ए-उलफ़त का
दुनिया भी मिट जाएगी और हम भी मिट जाऐंगे

—

जिस्म पा के उठते हैं
कायनात में नग़मे
– ज़िया फ़तेहाबादी

क़िस्सा मेरी हयात का, वाक़ेआ तेरी ज़ात का
राज़ है कायनात का, लब पे किसी के आए क्यूँ
– ज़िया फ़तेहाबादी

शाइर सजदे में

ऐ ज़मीं, ऐ आस्माँ, ऐ ज़िन्दगी, ऐ कायनात
ऐ हवा, ऐ मौज-ए-दरिया, ऐ निशात-ए-बेसिबात
ऐ पहाड़ों की बुलन्दी, ऐ सरूद-ए-आबशार
ऐ घटा झूमी हुई, ऐ नग़मा बरलब जूएबार
ऐ मुसर्रतख़ेज वादी, ऐ फ़िज़ा-ए-कैफ़रेज़
ऐ दिल-ए-आबाद-ए-वहशत, ऐ रगों के ख़ून-ए-तेज़
ऐ बिसात-ए-रेग-ए-सहरा बेकस-ओ-बेख़ानुमाँ !
ऐ बगूलों के मुसलसल रक़्स, ऐ सैल-ए-रवाँ
ऐ समुन्दर हर तरफ़ आग़ोश फैलाए हुए !
ऐ हवादिस के थपेड़े रोज़-ओ-शब खाए हुए
ऐ बहार-ए-सहन-ए-गुलशन, ऐ निज़ाम-ए-रँग-ओ-बू
ऐ गुलों की सादगी, ऐ बुलबुलों की आरज़ू
ऐ फलों के बोझ से सरबर ज़मीं शाख़-ए-शजर
ऐ परीशाँ ज़ुल्फ़-ए-सुँबल, चश्म-ए-नरगीस बेबसर

ऐ उरूस-ए-सुबह-ए-मस्ती शाम-ए-बज़्म-ए-मयकदा
ऐ जवानी की नज़र, दुज़दीदा-ओ-होशआज़मा
ऐ सितारों की चमक, ऐ गरदिश-ए-ख़ुरशीद-ओ-माह
ऐ सरूर-ए-बेगुनाही, ऐ तकाज़ा-ए-गुनाह
ऐ दिल-ए-बेताब, ऐ मोहूम उम्मीद-ए-सुक़ूँ
ऐ सुकूत-ए-यास, ऐ तूफ़ान-ए-अमवाज-ए-जुनूँ
ऐ वक़ार-ए-हुस्न, बज़्म-ए-ज़ीस्त पर छाए हुए
ऐ जुनून-ए-इश्क़ सर्द आहों से गरमाए हुए
ऐ निगाह-ए-मस्त-ओ-बेख़ुद, माइल-ए-तख़रीब-ए-होश!
ऐ नियाज़-ए-मयकशान-ए-ज़ीस्त, नाज़-ए-मयफ़रोश
ऐ चिराग़-ए-आरज़ू, ऐ बज़्म-ए-हस्ती के शबाब
ऐ पर-ए-परवाना, ऐ रक़्स-ए-निशात-ए-कामयाब
ऐ हरम, ऐ दैर, ऐ मज़हब के अन्दाज़-ए-हसीं
ऐ तख़य्युल की बुलन्दी के फ़रेब-ए-बहतरीं
ऐ फ़लक पर उड़नेवाले ताइरान-ए-ख़ुशजमाल
ऐ ज़मीं पर रेंगनेवाले वुजूद-ए-बेमक़ाल

ऐ कफ़स में पलने वाले, बेज़ुबान-ओ-बेअमाँ
ऐ असीरान-ए-मुहन, मुफ़लिस, ग़रीब-ओ-नातवाँ
ऐ ग़म-ए-अय्याम, ऐ फ़िक्र-ए-हुसूल-ए-रोज़गार !
ऐ ख़ियाबान-ए-अमल, ऐ बाज़ू-ए-मसरूफ़-ए-कार
ऐ ख़ुमार-ए-बादा-ए-दौलत में बेहोश-ओ-हवास
ऐ कि तुम से ज़र्रा ज़र्रा ज़िन्दगी का है उदास!
बेनियाज़-ए-मस्ती-ओ-जाम-ओ-सुबू कर दो मुझे
अपने कैफ़-ए-मुस्तक़िल से इस तरह भर दो मुझे
मैं तुम्हारा बन के सोज़-ओ-साज़ का माहिर बनूँ
दिल से वो नग़मे उठें, जिन के लिए शाइर बनूँ

—

चाँदनी रात कितनी दिलकश है
गुनगुनाते हैं आस्माँ पे नुजूम
जैसे आँचल से हुस्न छनता है
जैसे ख़्वाबों का किस्सा-ए-मन्ज़ूम

—

अज़ाइम

नहीं है मेरे लिए कोई काम नामुमकिन
फ़लक से चाँद सितारों को तोड़ लाऊँगा
नवीद-ए-नग़माज़नी दूँगा अन्दलीबों को
कली कली को चमनज़ार में हँसाऊँगा
करूँगा रस्म-ए-मुहब्बत को आम दुनिया में
हर एक ख़ार को तर्ज़-ए-वफ़ा सिखाऊँगा
ज़मीं पे होगी नुमूदार सुबह-ए-रोज़-ए-उमीद
हयात-ए-ताज़ा के पुरकैफ़ गीत गाऊँगा

—

ऐ हम ......

मैंने अपने मैं से पूछा एक दिन
कोई बाइस तेरी ख़ुशनूदी का है
बोला, हैरत है, नहीं तुझ को ख़बर
राज़ इसी में तेरी बहबूदी का है
मैं ख़लाओं की हूँ लामहदूदियत
और तुझे अहसास महदूदी का है
तू तो है तार-ए-शिकसता की सदा
साज़ तेरा लहन-ए-दाऊदी का है
मैं तेरा मैं हूँ, न तू ठुकरा मुझे
मैं ही सच्चाई हूँ, कर सजदा मुझे

—

मैं

जब तख़य्युल में सुकूँ का शायबा पाता हूँ मैं

आतिश-ए-नग़मात की तख़लीक़ फ़रमाता हूँ मैं

क़ल्ब-ऐ-गीती में जलाकर शम्अ-ए-सोज़-ए-आरज़ू

ज़ीस्त की रग-रग में ख़ून-ए-गर्म दौड़ाता हूँ मैं

बेख़ुदी में जब ख़ुदी का राज़ हो जाता है फ़ाश

कुल फ़िज़ा-ए-आलम-ए-इम्काँ पे छा जाता हूँ मैं

ख़ुद पे कर लेता हूँ तारी आलम-ए-दीवानगी

इस तरह खोकर ही अपने आप को पाता हूँ मैं

दिल की धड़कन इन्तेहा-ए-ग़म से हो जाती है तेज़

डूब कर अहसास में ताज़ा ग़ज़ल गाता हूँ मैं

मैं ही मैं हूँ इस जहाँ में, कुछ नहीं मेरे सिवा

ढूँढती है और किस को अब ज़मीं मेरे सिवा

—

जिस्म

जिस्म एक परदा है
रूह अपना नँगापन जिस से ढ़ाँप लेती है

जिस्म है लिबास ऐसा
आत्मा पहन कर जो फिर उतार लेती है

जिस्म एक धोका है
जिस के जाल में फँस कर ज़िन्दगी पनपती है

जिस्म पा के उठते हैं
कायनात में नग़मे

—

अन्जुमिस्ताँ

तारे चमक रहे हैं, शम्एं सी जल रही हैं
या ज़ुल्मतों की हूरें मोती उगल रही हैं
या उड़ के आस्माँ पर पहुँचे हुए हैं गेसू
या फूल रोशनी के बिखरे हुए हैं हर सू

—

बुलन्द–ओ–पस्त

चली जो तुन्द हवा हादसात–ए–आलम की
तो ताब ला न सकी गुल हुआ कँवल का चिराग़
न वो तराना–ए–बुलबुल, न वो तबस्सुम–ए–गुल
हुआ है जब्र–ए–ख़िजाँ से उदास मन्ज़र–ए–बाग़
मगर ये राज़ भी अहल–ए–नज़र पे रोशन है
बुलन्द–ओ–पस्त–ए–जहाँ से नहीं नज़र को फ़राग़

—

सोच का सफ़र

मुझे क्या ख़बर

इब्तदा कब हुआ

सफ़र सोच का-

मुझे क्या ख़बर

क्यूँ है जारी अभी तक

सफ़र सोच का-

अब बता दो कोई

ख़त्म होगा कहाँ, किस तरह और कब

ये सफ़र सोच का-

जानता हूँ मगर

इब्तदा है अज़ल

इन्तेहा है अबद

है अज़ल की तलाश-ए-अबद का सिला

ये सफ़र सोच का

—

वक्त वक्त की बात

मैं एक सदियों पुराने

कुहन साल दरख़्त के नीचे

गहरे, बहते पानी में जाल फैलाए

मछलियाँ पकड़ रहा था

और–उस सदियों पुराने

कुहन साल दरख़्त की टुन्ड मुन्ड टहनी पर

कृष्ण कन्हैया

गोपियों के रँग बिरँगे वस्त्र लिए

बाँसुरी की उदास तानों से

पानी की ख़ामोश सतह पर

एक नये युग का

ख़्वाब बुन रहा था

—

ख़लिश-ए-वक़्त

वक़्त की लँबी,ख़त्म न होने वाली डगर पर
चलते चलते, खोया खोया
किरणों के रोशन घोड़े पर बैठा
बूढ़ा सूरज सोच रहा है
देख रहा है
कल का क़तरा, आज है दरिया
सहरा का हर ज़र्रा ज़र्रा
जोश-ए-नमू से तँगी-ए-दामाँ का शाकी है
फैल के, बढ़ कर, कोह-ए-गिराँ बनता जाता है
और ये बूढ़ा सूरज कब तक
अपनी आग में जलता रहेगा
कब तक नन्हे, दमकते तारे
उसकी पूजा करते रहेंगे
कब तक ख़ुद सूरज न बनेंगे ? —

बूढ़ा सूरज सोच रहा है

—

ख़ुशफ़हमी-ए-शब

शब के ख़लवतकदा-ए-ज़ुल्मत में
आज भी टूटता है आइना-ए-करब-ए-सुकूँ,
आज भी करते हैं सरगोशियाँ चुप सन्नाटे,
सालहासाल से जलते हुए सूरज की ये आग-
हसद-ओ-रश्क़ की ये आग,
आग जो ज़ीस्त के हँगामों को देती है हवा,
कभी बनती है चिता-
जलते जलते यूँ ही हो जाएगी इक दिन ठँडी-

और रह जाएगा फिर
वही सन्नाटा
वही सिलसिला-ए-ज़ुल्मत-ए-शब
हाय, ख़ुशफ़हमी-ए-शब

—

शिकस्त-ए-शब

रात गई, तारीकी सिमटी

अपनी दुकाँ साक़ी ने बढ़ाई

जाम-ओ-सुराही औ।दे पड़े हैं

चेहरा-ए-मय पर छाई है ज़रदी

दाग़-बा-दिल,इक शम्अ-ए-फ़सुरदा सोच रही हैः

रिन्द कहाँ हैं,

जो महफ़िल को गरमाती थीं, वो आवाज़ें कौन सुनेगा

जिन पर हस्ती इतराती थी, उन ख़्वाबों को कौन बुनेगा?

सूरज की पहली ही किरण ने

सारा अफ़सूँ तोड़ दिया है

दिन के हँगामों की लगन में

इन्साँ ख़ुद को भूल गया है

—

शाम

उजाला सू-ए-मग़रीब जा रहा है तेज़गामी से
नक़ूश-ए-पा सुनहरी बदलियों पर रक़्सफ़रमा हैं
शुआ-ए-आख़िरी होती है रुख़सत कोहसारों से गले मिल कर
फ़लक-सा ऊँचे मीनारों पे अक्स-ए-मेहर-ए-ताबाँ है
बढ़े जाते हैं साए
रफ़्ता रफ़्ता रू-ए-आलम पर अँधेरा छाता जाता है

बिखेरे काली ज़ुल्फ़ें आ रही है रात की देवी
लब-ए-शीरीं से ख़्वाबआवर तराने गाती आती है
जबीन-ए-तीरगी पर झिलमिलाते हैं सितारे नन्हे नन्हे से
मुरत्तब हो रहा है ख़्वाब का अफ़साना-ए-रँगीं

हुआ दिन ख़त्म-

अब ऐ ज़िन्दगी की कश्मकश रुख़सत

मुसाफ़िर थक गया है बैठ जाने दे सर-ए-राहे

नहीं मालूम कितनी दूर है मँजिल अभी इस को

कि है रोज़-ए-अज़ल से जुस्तजू बातिल अभी इस को

ज़रा ये ताज़ा दम हो ले

नुमूद-ए-सुबह अज़्न-ए-कूच फिर देने को है इस को

—

है सुबह, नहीं रात, ज़रा आँख उठा

उठते हैं हिजाबात, ज़रा आँख उठा

इन्साँ की ख़ुदाई का ज़माना आया

क्या बात है क्या बात, ज़रा आँख उठा

—

अँगड़ाई

गुदगुदी दिल में हुई,
वलवले जाग उठे,
आरज़ूओं के शगूफ़े फूटे,
उफ़क-ए-यास से पैदा हुई उम्मीद की बेताब किरण,
शबनमिस्तान-ए-तमन्ना में हर एक सिमत उजाला फैला,
खोल दी देर से सोए हुए जज़्बात ने आँख
ख़िरमन-ए-दिल में फिर इक आग-सी भड़की, चमकी,
इक तड़प एक शरार-

इस पे है अन्जुमन-ए-दहर की गरमी का मदार,
ख़ून रग रग में रवाँ,
इस से हरकत में है आलम का निज़ाम!

—

तुलू–ए–सहर

हुआ तुलू उफ़क पर सितारा–ए–सहरी
मिली तमाम जहाँ को नवीद–ए–जलवागरी
सफ़र का हुक्म मिला कारवान–ए–अन्जुम को
सवारी–ए–सहर आती है राह साफ़ करो
ग़ुबार–ए–ज़ुल्मत–ए–शब ले उड़ी नसीम–ए–सहर
कली चमन में हुई बाइस–ए–शगुफ़त–ए–नज़र
चटक के गूँचे ने आवाज़ दी कि ऐ गुलचीं
झुका भी दे दर–ए–फ़ितरत पर आज अपनी जबीं
गुलों ने बुलबुल–ए–शैदा से मुस्करा के कहा
ख़मोश किस लिए बैठी है छेड़ गीत नया
फ़िजाऐं गूँज उठीं दिल नवाज़ नग़मों से
हुई बुलन्द सदा–ए–रबाब पत्तों से
चमन में जाग उठे अशजार ले कर अँगड़ाई
बिसात–ए–ख़ाक पर इक मौज–ए–नूर लहराई

तड़प के लहर ने दरिया से यूँ ख़िताब किया
‘‘तेरी ख़मोशरवी ने मुझे ख़राब किया’’
ख़मोशियाँ हुईं रुख़सत कि दौर-ए-नौ आया
रगों में ख़ून नया दौड़ता बा ज़ोर आया
किसान बैल लिए दूर झोंपड़े से चला
सहर के नश्शे में मख़मूर, झोंपड़े से चला
हुई बुलन्द सदा मँदिरों से घँटों की
अज़ान मोमिन-ए-मस्जिद ने दी, फ़िज़ा जागी
इबादत-ए-सहरी में झुका दिल-ए-शाइर
अब एक वज्द की मँज़िल है मँज़िल-ए-शाइर
ख़याल ले के उड़ाता बा चर्ख़-ए-नीली फ़ाम
सहर की पहली किरण ने दिया उसे पैग़ाम
‘‘कि तुझ में मुझ में कोई फ़र्क-ओ-इम्तियाज़ नहीं ’’
‘‘हमारा नग़मा-ए-नौ है, सहर का साज़ नहीं ’’
‘‘तेरे कलाम में मेरा ही तो गुदाज़ है ये’’
‘‘नुमूद-ए-सुबह नहीं ज़िन्दगी का राज़ है ये’’

—

किरण

जब उभरता है उफ़क़ की सुरखियों से आफ़ताब
खेलता है सरमदी नग़मों से फ़ितरत का रबाब
दौड़ती है पैकर-ए-आलम में जब रूह-ए-शबाब
कैफ़ में डूबी हुई होती है चश्म-ए-नीमख़्वाब
आस्माँ की रिफ़अतों को छोड़कर आती है तू
तीरगी के आइनों को तोड़कर आती है तू

तू बज़ाहिर इक किरण है बेसिबात-ओ-बेवक़ार
तेरी आमद है फ़क़त ख़ुरशीद का इक इश्तिहार
हर रविश से तेरी ज़ाहिर है मज़ाक-ए-इज़्तरार
तू भी फ़ानी है, तेरा जलवा भी है नापायदार
मुन्तज़िर तेरा अगर हरदम कली का सीना है
तेरे ही जलवों से पुरअनवार ये आईना है

अजनबी हूँ मुतलक़न मैं शबिस्तान-ए-दहर में
सब से पीछे हूँ अभी तक रहरवान-ए-दहर में
कामयाब अब तक नहीं हूँ इम्तिहान-ए-दहर में
मेरा दिल भी इक कली है गुलिस्तान-ए-दहर में
इस कली को भी तबस्सुम की कभी तालीम दे
मेरे अवराक़-ए-परीशाँ को नई तनज़ीम दे

ऐ किरण, मुझको अता कर एक शोला नूर का
दे मेरे ज़ौक़-ए-नज़र को ज़र्फ़ कोह-ए-तूर का
मेरा दिल मरकज़ बने कैफ़ियत-ए-मसरूर का
राज़ सारा खोल दूँ मैं नाज़िर-ओ-मन्ज़ूर का
माद्दियत से मुतमईन हो रूह तो क्या चीज़ है
मैं बता दूँगा कि सब नाचीज़ है नाचीज़ है

—

अँधेरे महाफ़िल-ए-हस्ती के क्या मुझको डराऐंगे
मुन्नव्वर तेरे जलवों से दिमाग़-ओ-दिल की बातें हैं
रह-ए-पुरख़ार-ओ-बाद-ए-तुँद-ओ हैबतनाक ख़ामोशी
दिल-ए-नादाँ, यही तो क़ुरबत-ए-मँज़िल की बातें है।

—

नई सुबह

बहुत जा चुकी है शब-ए-तीरह सामाँ
उजालों के साए उफ़क पर हैं रक़्साँ
वो तारा, यही तो है तारा सहर का
यक़ीनन नहीं इस में धोका नज़र का
बहुत सो चुका मैं, बहुत हो चुका गुम
मुझे लोरियाँ अब हवाओ न दो तुम
मुझे नींद कुछ रास आई नहीं हैं
कि राहत मेरे पास आई नहीं है
बड़े ज़ब्त से ग़म उठाया है मैंने
अँधेरों में सब कुछ लुटाया है मैंने
उम्मीद-ए-तुलू-ए-सहर के सहारे
हवादिस के तूफ़ाँ है सर से गुज़ारे
मगर सब्र का जाम अब भर चुका है
उम्मीदों का जादू असर कर चुका है

मैं तख़रीब की कुव्वतों से लड़ूँगा
ज़माने को तामीर का दर्स दूँगा
उठाऊँगा सर पर फ़लक को फ़ुग़ाँ से
ज़मीं पर गिरेंगे ये महल आस्माँ के
पुराने बुतान-ए-हरम तोड़ दूँगा
मैं तहज़ीब-ए-इन्साँ का रुख़ मोड दूँगा
ख़ुदा का भरम खोल दूँगा जहाँ पर
यक़ीं काँप जाएगा मेरे गुमाँ पर
ये ज़र्रे जो सदियों से रौ।दे गए हैं
हिक़ायत की नज़रों से देखे गए हैं
नए आफ़ताबों को फिर जन्म देंगे
लूटेरों से फिर अपना हक़ छीन लेंगे
ये ज़ुल्मत की हैबत दिलों से मिटेगी
ज़माने को करवट बदलनी पड़ेगी
नहीं दूर अब तो नज़र आ रही है
उठो, दोस्तो वो सहर आ रही है
—

ऊषा

वो ऊषा की देवी आई, किरणों का परचम लहराती
जीवन की सुँदर बगिया में आशा की कलियाँ महकाती
रैन अँधेरे भागे भागे
सोनेवाले जागे जागे
ऊषा आई, ऊषा आई

तू भी जाग ओ नींद के माते जाग उजाले की पूजा कर
सोए हुए देवों को जगा दे घँटे और घड़ियाल बजाकर
खोल दिए क़ुदरत ने ख़ज़ाने
छेड़ दिए चिड़ियों ने तराने
ऊषा आई ऊषा आई

कलियाँ चटकीं, सब्ज़ा लहका, गुलशन महका, जीवन दहका
सपनों में गुम रहने वाला भी इस दोराहे पर बहका
धरती ने ली इक मस्त अँगड़ाई
हलचल उम्मीदों ने मचाई
ऊषा आई, ऊषा आई

—

परिवर्तन

अँधियारे के बाद उजाला रोशन रूप दिखाए
दुख की काली रैन कटे तो सुख का दिन आजाए
नील गगन से मधमाती बदली अमृत बरसाए
बिरहन के मृग नयनन में आस अपनी जोत जगाए
बैठा इक मुंडेर पे कागा ''का-का'' शोर मचाए
होले होले पगडँडी पर राही पाँव बढ़ाए
हरियाली की सुँदर देवी खेतों में मुस्काए
अम्बर नाचे, धरती झूमे, गीत जवानी गाए
पनघट की गौरी गगरी से अमृत जल छलकाए
धीमी धीमी बहती नदी, लहराए, बल खाए
प्यार की बातें, प्रीत की घातें समझे और समझाए
साजन के स्वागत को सजनी जाए कमर लचकाए
ख़त्म हुई बिपता की घड़ियाँ, सुख के लम्हे आए

—

सोच

एक गोशे में जल रहा है चिराग़
रोशनी हो रही है कमरे में
दर-ओ-दीवार-ओ-बाम मुहर बलब
ज़िन्दगी सो रही है कमरे में

और बाहर है ज़ुल्मतों का हुजुम
घिर के आई है मस्त काली घटा
आँधियों की ये तुन्दी-ओ-तेज़ी
शोरिशों का है एक हश्र बपा

मुँह लपेटे हुए पड़ा हूँ मैं
सुन रहा हूँ तराना-ए-तूफ़ाँ
जब गरज बादलों की होती है
काँपता है मेरा दिल-ए-नादाँ

सोचता हूँ उरूस-ए-फितरत को
इबन-ए-आदम से क्या अदावत है
है बशर को सुकून-ए-दिल की तलाश
ख़ूगर-ए-इज़्तिराब-ए-फ़ितरत है —

(सानेट)

इज़्तिराब

सितारे आस्माँ पर मुज़्तरीब हैं ख़ाक पर ज़र्रे
न उनको चैन हासिल है न इनको चैन हासिल है
फ़िज़ाँ लरज़ाँ हवा बेकल सुकूँ ना आशना पत्ते
परीशाँ बहर में मौजें हैं और बेताब साहिल है
गुल-ओ-लाला है सीना चाक बैचैनी का मातम है
फ़िज़ा में थरथरातीं हैं नवाऐं अन्दलीबों की
असीर-ए-इज़्तिराब-ओ-दर्द-ओ-ग़म ये बज़्म-ए-आलम है
तमन्नाओं से टकराती हैं आहें नाशकीबों की
मुझे भी फ़ितरत-ए-सीमाब ने बख़्शी है इक दौलत
मेरा दिल भी किसी की याद में बेताब रहता है
हकीक़त में यही बेचैनियाँ हैं बाइस-ए-राहत
इसी तसकीं की मौजों में मेरा हर शेअर बहता है
शबाब-ओ-इज़्तिराब-ओ-इश्क़ से तख़लीक़-ए-हस्ती है
इसी तसलीस पर क़ायम निज़ाम-ए-कैफ़-ओ-मस्ती है

—

चुप

कली से यूँ कहा बाद-ए-सहर ने
तुझे पाला है आग़ोश-ए-क़मर ने
सितारे रात भर गाते रहे हैं
तुझे गीतों से बहलाते रहे हैं
घटा तेरे लिए पैमाना बरकफ़
तू ख़ुद इक साक़ी-ए-मयख़ाना बरकफ़
बहारें जिस पे नाज़ाँ हैं वो तू है
गुलिस्ताँ जिस से ख़न्दाँ है वो तू है
कली ने जब सुनी तारीफ़ अपनी
तो वो बाद-ए-सहरगाही से बोली
है बिल्कुल ठीक जो तू कह रही है
लबों से तेरे गँगा बह रही है
चमन की ज़िन्दगी हूँ, जान हूँ मैं
चमनवालों का दीन ईमान हूँ मैं
कली ये कहते कहते हो गई चुप
नसीम-ए-सुबह ने भी साध ली चुप

—

गुल-ए-नौशगुफ़्ता

नौशगुफ़्ता फूल, तेरा मुस्कराना है बजा
बुलबुलों के गीत सुनकर झूम जाना है बजा
रँग-ए-जोर-ए-गुलिस्ताँ देखा नहीं तूने हनूज़
जब्र-ए-दौर-ए-आस्माँ देखा नहीं तूने हनूज़
तू अभी ना आशना है इन्क़लाब-ए-दहर से
तू अभी वाकिफ़ नहीं राज़-ए-सराब-ए-दहर से
तू नसीम-ए-सुबह की आग़ोश का पाला हुआ
रँग-ओ-बू के दिलनशीं साँचे में है ढ़ाला हुआ
नाचती है तेरे ऐवान-ए-तसव्वुर में बहार
बज रहा है पत्तियों का दिलकश-ओ-रँगी सितार
तेरे कानों तक ख़िज़ाँ का नाम भी पहुँचा नहीं
तुझ को कैफ़-ए-हाल में अँदेशा-ए-फ़रदा नहीं

मुँह धुलाती है उरूस-ए-सुबह शबनम से तेरा
शीशा-ए-दिल पाक है आलाइश-ए-ग़म से तेरा
ज़हन में तेरे नहीं है सूरत-ए-गुलचीं अभी
तूने समझे ही नहीं अन्दाज-ए-बुग़ज-ओ-कीं अभी
तू है इक जाम-ए-शगुफ़्ता चश्म-ए-ज़ाहिर के लिए
और इलहाम-ए-मुजस्सिम क़ल्ब-ए-शाइर के लिए

—

फूल बनने से पेशतर जो कली
ताब-ए-हस्ती न ला के मुरझाई
वो भी गुलशन की ख़ाक-ए-रँगीं पर
अपना नन्हा निशान छोड़ गई

—

ऐ गुल

ऐ गुल-ए-नौ वारद-ए अक़्लीम-ए-हुस्न

सोज़ की लज़्ज़त से तू वाकिफ़ नहीं

मस्त तू अपने ही रँग-ओ-बू से है

हुस्न की फ़ितरत से तू वाकिफ़ नहीं

है तबस्सुमरेज़ हर शाम-ओ सहर

गर्दिश-ए-क़िस्मत से तू वाकिफ़ नहीं

राह-ए-तसकीं पर है सरगरम-ए-सफ़र

मँज़िल-ए-वहशत से तू वाकिफ़ नहीं

ख़ुदनुमाई, ख़ुदपरस्ती, ख़ुदरवी

दूसरों की मत से तू वाकिफ़ नहीं

है असीर-ए-तँगनाए नाज़-ए-हुस्न

इश्क़ की वुसअत से तू वाकिफ़ नहीं

दिल तेरा आलाईश-ए-ग़म से है पाक

यास और हसरत से तू वाकिफ़ नहीं

इज़्तिराब-ए-दिल तेरे नज़दीक हैच
हासिल-ए-कुलफ़त से तू वाकिफ़ नहीं
ख़ुद ही साक़ी, ख़ुद ही मयख़ाना है तू
ख़ुद ही बादा ख़ुद ही पैमाना है तू
देख वो मशरिक़ से निकला आफ़ताब
नूर रेज़-ओ-नूर पाश-ओ-नूर बार
लेकर अँगड़ाई उठा गुलशन तमाम
ख़्वाब-ए-ग़फ़लत से हो तू भी होशियार
देख दुनिया की फ़ना अन्जामियाँ
जाविदानी ये नहीं तेरी बहार
हर बहार-ए-रा ख़िजाँ ने लाज़िम अस्त
ज़िन्दगी का किस तरह हो एतबार
आ गया है क्यूँ फ़रेब-ए-हुस्न में
हुस्न पर नादाँ है किसको इख़्तियार
फूल लाखों और भी हैं बाग़ में
ये हक़ीक़त है निहायत नागवार!

ये तबस्सुम, ये मुसर्रत, सब ग़लत
तू तो है परवरदा-ए-आग़ोश-ए-ख़ार
अन्दलीबान-ए-चमन के गीत सुन
कर जिगर के पैरहन को तार तार
पी शराब-ए-कुहना-ए-इश्क़-ओ-जुनूँ
जाविदानी कैफ़ से हो हमकिनार
दिल में कर महमान अपने, सोज़ को
भूल जा फ़रदा को और इमरोज़ को
सोज़ है मिज़राब-ए-साज़-ए-ज़िन्दगी
सूरत-ए-नग़मा बग़ैर इस के कहाँ
सोज़ से रोशन है बज़्म-ए-कायनात
गोद में इस की हुई दुनिया जवाँ
सोज़ से हर दिल हरारत आशना
आरज़ू का ख़ून रग रग में रवाँ
साक़ी-ए-मयख़ाना-ए-हस्ती है सोज़
इस की नज़रों में शराब-ए-अरग़वाँ

दास्तान-ए-सोज़ के उनवाँ हैं सब

आफ़ताब और चाँद, तारे, कहकशाँ

वो हक़ीक़त दर हक़ीक़त सोज़ है

जिस से है ये रब्त-ए-बाग़-ओ-बाग़बाँ

दिल बग़ेर-ए-सोज़ दिल होता नहीं

सोज़ ही है सिर्फ दिल का राज़दाँ

है यही सई-ए-मुसलसल का सबब

सोज़ से होता है इन्साँ कामराँ

कारवान-ए-ज़ीस्त की मँजिल है सोज़

सोज़ है अस्ल-ए-निशात-ए-जाविदाँ

मयकशान-ए-दर्द का साक़ी है सोज़

हुस्न फ़ानी है मगर बाक़ी है सोज़

—

नागुज़ीर

बीती कल पर मूर्ख़ नाहक़ अँसुवन नीर बहाए
बीत गई जो बीत गई, वो लौट कभी न आए
आने वाली कल आएगी, जागेगा सँसार
आशाओं की जोत में करवट बदलेगा सँसार
होने वाला हो के रहेगा, रोक सकेगा कौन
बढ़ती हुई बिफ़री मौजों को टोक सकेगा कौन
कौन है जो आगे बढ़ कर माज़ी को दे आवाज़
कौन है जो फिर छेड़े, दुखती रग का भयानक साज़
कोई नहीं जो खेल सके अब इन्सानों के खेल
कोई नहीं जो होने न दे ऊँच और नीच का मेल
कोई नहीं जो गिरती दीवारों को थामे आज
कोई नहीं जो तख़्त पे बैठे सर पर पहने ताज
टूटेंगे सब झूटे बन्धन टूटेगी ज़न्जीर
इन्साँ उठ कर आप सँवारेगा अपनी तक़दीर

—

तीन दौर

मैं उम्र-ए-रफ़्ता को अपनी पुकार सकता हूँ
मैं उम्र-ए-रफ़्ता को अपनी पुकार लूँ हमदम
मैं अपनी ज़ीस्त के गेसू सँवार सकता हूँ
मैं अपनी ज़ीस्त के गेसू सँवार लूँ हमदम

मगर ये हाल मेरे ज़हन पर सवार है क्यूँ
ये मेरी मँज़िल-ए-मक़सूद का निशाँ तो नहीं
क़रार है मेरे दिल को न रूह को है सुकूँ
ज़मीं जिसे मैं समझता हूँ आस्माँ तो नहीं

वो दूर साए उफ़क़ पर उभरते आते हैं
कोई हसीना-ए-कमसिन है मुँह छुपाए हुए
महीन रेश्मी आँचल में सरसराते हैं
नक़ूश चेहरा-ए-फ़रदा के तमतमाए हुए

—

ख़ूबसूरत इरादे

जब घटाऐं आस्माँ पर चार जानिब छाऐंगी
बादा-ए-तसनीम-ओ-कोसर ख़ाक पर बरसाऐंगी
मुझ को तड़पाऐंगी लेकिन तुझको भी तड़पाऐंगी
तू मुझे याद आएगी और मैं तुझे याद आऊँगा!
जब चमन में मुनअक़िद होगी गुलों की अन्जुमन
रक़्स पर आमादाह होगी अन्दलीब-ए-नग़माज़न
हर कली के लब पे होगा, नारा-ए-तौबा शिकन
दिल मुझे तड़पाएगा और दिल को मैं तड़पाऊँगा
जब मेरा साक़ी मुझे भर भर के देगा जाम-ए-मय
भूल जाऊँगा कि दुनिया में कोई शय ग़म भी है
साज़-ए-हस्ती से करूँगा इक नई ईजाद ने
और उसी से मैं नई मस्ती के नग़मे गाऊँगा

तूर का रूमान फिर दुनिया में होगा जलवागर
नूर से भर कर छलक जाएगा हर जाम-ए-नज़र
मुन्तज़िर गुल होंगे आग़ोश-ए-मुसररत खोलकर
मैं भी अपने बाज़ूओं को दूर तक फैलाऊँगा

जब मह-ओ-ख़ुरशीद हो जाऐंगे बेनूर-ओ-ज़िया
हर तरफ़ छा जाएगा जब ज़ुल्मतों का सिलसिला
रहनुमा को भी न होगा राह-ए-मँज़िल का पता!
ख़ुद ही बहकूँगा, ज़माने को भी मैं बहकाऊँगा

जब ख़ुदी को भूल कर हो जाएगी दुनिया तबाह
हर दिल-ए-नाकाम से निकलेगी इक पुरसोज़ आह
दीन-ओ-दुनिया में किसी सूरत न होगा जब निबाह
मैं ही फिर भटके हुओं को रास्ते पर लाऊँगा

जब तिलिस्म-ए-रँग-ओ-बू को तोड़ कर निकलूँगा मैं
गुलशन-ए-हस्ती का भाँडा फोड़ कर निकलूँगा मैं
शोरिश आबाद-ए-जहाँ की छोड़ कर निकलूँगा मैं
अपने माज़ी पर नज़र डालूँगा और पछताऊँगा

जब सुकूँ की गोद में मदहोश होगी कायनात
नग़माज़ारों में सरापागोश होगी कायनात
सूरत-ए-हँगामा-ए-ख़ामोश होगी कायनात
मैं उठूँगा और सुकूँ पर बिजलियाँ चमकाऊँगा
जब नहीं होगा बुलन्द-ओ-पस्त में कुछ इम्तियाज़
नेकियाँ होंगी निगूँसर, ऐब होंगे सरफ़राज़
भूल जाएगा ज़माना जब हक़-ओ-बातिल का राज़
फिर वही दौर-ए-शऊर-ओ-अक़्ल वापस लाऊँगा
जब ख़िज़ाँ बेकैफ़ियों को साथ लेकर आएगी
जब गुल-ओ-लाला के चेहरे पर उदासी छाएगी
जब बिसात-ए-बादा गुलशन से उठा ली जाएगी
खो के इस दुनिया को फिर मैं आप भी खो जाऊँगा

—

शाहकार-ए-फ़ितरत

एक दिन आदम ने फ़ितरत से कहा
मुझ से मुश्किल है तेरी मदह-ओ-सना
ख़ाक से मुझको बनाया आदमी
आदमी को दौलत-ए-अहसास दी
रोशनी से मैं तेरी ताबिन्दा हूँ
तेरे ज़िल्ल-ए-आतफ़त में ज़िन्दा हूँ
हुक्म से तेरे फ़रिशतों ने मुझे
सर झुका कर शौक़ से सजदे किए
मेरे ख़ातिर तूने ऐ दर्द आशना
बज़्म से इबलीस को बाहर किया
वक़्फ़ जन्नत को किया मेरे लिए
जाम-ए-कौसर भर दिया मेरे लिए
जानता हूँ मैं कि है ऐ बेख़बर
मेरी राहत ही तेरे मद्द-ए-नज़र

कुछ पहुँच सकता नहीं मुझको गज़न्द
हूँ दिल-ओ-जाँ से तेरा अहसानमन्द
मेरी गुस्ताख़ी अगर कर दे मुआफ़
बात दिल की तुझ से कह दूँ साफ़-साफ़
सब मुहय्या है यहाँ सामान-ए-ऐश
इस क़दर होंगे कहाँ सामान-ए-ऐश
लेकिन इन हुस्नआफ़रीं नज़्ज़ारों में
कैफ़बाराँ नुक़रई फ़व्वारों में
निकहत-ए-गुल हाय दिल अफ़रोज़ में
जुरआ-ए-सहबा-ए-वज्द आमोज़ में
ये हक़ीक़त है कि दिलचस्पी नहीं
राहत-ओ-तसकीं मेरे दिल को नहीं
दिल में उठता है मेरे इक दर्द-सा
जिससे हो जाता है चेहरा ज़र्द-सा
चाहता हूँ क्या, बता सकता नहीं
चीर कर सीना दिखा सकता नहीं

सुन के ये फ़ितरत को भी सदमा हुआ
सतह-ए-आलम पर अँधेरा छा गया
आदम उस को जान-ओ-दिल से था अज़ीज़
उस के आगे हेच थी हर एक चीज़
देख सकती थी कब अपनी आँख से
उस का बन्दा और रँज-ओ-ग़म सहे?
महव-ए-हैरत थी कि है वो दर्द क्या
जिस में दम आदम का है अटका हुआ
मश्वरा उसने फ़रिश्तों से किया
उक़दा-ए-मुश्किल न लेकिन हल हुआ
हो के फ़ितरत इस तरह नाकामयाब
हो गई ख़लवत में महव-ए-इज़्तिराब
आ गया उसको यकायक इक ख़याल
मिट गये चेहरे से आसार-ए-मलाल
कामयाबी का वसीला मिल गया
राहत-ए-आदम का हीला मिल गया

आब-ए-कौसर से रवानी माँग ली
बाग़-ए-जन्नत से जवानी माँग ली
ली गुलों से निकहत-ए-जानआफ़रीं
बुलबुलों से नग़माहा-ए-दिलनशीं
माँग ली नरगिस से चश्म-ए-नीमबाज़
शाख़-ए-तौबा से अदा-ए-दिलनवाज़
मौज-ए-बाद-ए-सुबह से रफ़्तार ली
सोसन-ए-ख़ामोश से गुफ़्तार ली
ज़ुल्फ़-ए-सुँबल से दराज़ी माँग ली
सर्द से फिर सरफ़राज़ी माँग ली
गूँचाहा-ए-नौ से ली मासूमियत
ली फ़िज़ा-ए-जाँफ़िज़ा से इतरियत
लाला-ए-सहरा से सुरख़ी माँग ली
बादा-ए-कौसर से मस्ती माँग ली
अन्जुम-ए-ताबाँ से लीं ताबानियाँ
माह के आईने से हैरानियाँ

मेहर-ए-रोशन से शुआओं को लिया
इक़्तिबास-ए-जलवा-ए-सोज़ाँ किया
लीं फ़रिशतों से सुकूँ आमेज़ियाँ
मौज-ए-ग़म से इज़्तिराब अन्गेज़ियाँ
ली कशिश की ताब मक़्नातीस से
और माँगी सरकशी इबलीस से
सब को फ़ित़रत ने बहम यकजा किया
और उसको नाम ''औरत'' का दिया
शाहकार - ए - फ़ितरत - ए- हुस्नआफ़रीं
किस क़दर है ख़ूबसूरत और हसीं
इस के जलवे से है रोशन कायनात
हर नफ़स इस का है दुनिया की निजात
आदम-ए-बेताब को चैन आ गया
एक रँगीं कैफ़ उस पर छा गया

—

(सानेट)

ईज़ा तलबी

तुझ को देखा तो थी नज़र की ख़ता
आह खींची तो बेक़रार था दिल
नामुराद और सोगवार था दिल
जो हुआ जोश-ए-बेख़ुदी में हुआ
याद आती रही तेरी शोख़ी
भूल कर भी तुझे भुला न सका
बात बिगड़ी हुई बना न सका
रोज़-ओ-शब दिल की बेकली न गई
राज़-ए-वहशत सबा ने ताड़ लिया
गुल-ओ-बुलबुल से कह दिया जा कर
अहल-ए-गुलशन ने वज्द में आ कर
कह दिया तुझ से माजरा सारा
डर है, अब तू ख़फ़ा न हो जाए
दर्द दिल की दवा न हो जाए

—

(सानेट)

देवी

तुझे देवी बनाकर पूजता हूँ दिल के मँदिर की
तेरे ही गीत साज़-ए-दो जहाँ पर गाता रहता हूँ
जबीन-ए-शौक़ झुक कर तेरे क़दमों से नहीं उठती
उम्मीदों से दिल-ए-मासूम को बहलाता रहता हूँ
पुजारी बन के तेरा, बेनियाज़-ए-दीन-ओ-दुनिया हूँ
ताल्लुक़ अब ख़ुदा-ओ-हश्र से कुछ भी नहीं मुझको
चमन में रह के भी अहल-ए-चमन से दूर रहता हूँ
कि हरदम देखता हूँ मैं गुलों के रूप में तुझको
पुजारी और देवी देखने में हस्तियाँ दो हैं
मगर दोनों की रूहें एक हैं कैफ़-ए-मुहब्बत में
नियाज़-ए-इश्क़-ओ-नाज़-ए-हुस्न यूँ तो मस्तियाँ दो हैं
मगर दिल पर असर है एक दोनों का हक़ीक़त में
ये तकमील-ए-जुनूँ है, हासिल-ए-सद बेक़रारी है
पुजारी है कभी देवी, कभी देवी पुजारी है

—

सँगीत

झन झनन झनन झँकार उठी
नागिन कोई फुँकार उठी
कानों ने सुना, दिल ने समझा
जीवन में इक तुफ़ान उठा
मलती हुई आँखें जाग उठी
फिर ले बैठी दिल की किश्ती
हस्ती ने अपना रुख़ बदला
इक नूर का दरिया बह निकला
माज़ी के ख़जानों के मोती
और ज़हन में वो अहद-ए-मस्ती
वो इश्क़-ओ-मुहब्बत की घातें
वो कैफ़ में ग़लतीदा रातें
माज़ी के हर वीराने पर
दिल में दिल के समझाने पर

तारों की मुसलसल जुँबिश से
ज़हरीले, नशीले बल खा के
आँखों ने सुनहरे जाल बुने
उम्मीदों के तेवर बदले
रँगीन अफ़सानों की रानी
बहर-ए-जज्ब़ात की तुग़यानी
ग़म इशरत में गुम हो ही गया
और तारीकी में खो ही गया
चमके दुनिया को चमकाया
फिर अपने आप उभर आया
वो हुस्न-ओ-अदा की रानाई
फिर बीती जवानी याद आई
तामीर-ए-फ़रदा होने लगी
उम्मीदें पैदा होने लगी

—

शीरीं तलख़ी

इस से पहले भी कहीं मैंने तुझे देखा है
है मेरे ज़हन के गोशे में अभी तक महफ़ूज़
धुँदला धुँदला-सा तसव्वुर तेरे रुख़सारों का-
लज़्ज़त-ए-गरमी-ए-आग़ोश-ए-जवाँ से अब तक
आलम-ए-रक़्स में है रूह मेरी,
हाँ, तुझे मैने कहीं देखा है!!

किस लिए मेरे शबिस्ताँ में चली आई है
शब-ए-तारीक के सन्नाटे में?
क्या तेरे दिल में कोई ख़ौफ़ नहीं?
देख ले कोई जो इस वक़्त यहाँ पर तुझको?
मेरी शुहरत मेरी इज़्ज़त का नहीं तुझ को ख़याल
तेरे हाथों में चमकती हुई ये चीज़ है क्या?
चाह-ए-ज़िल्लत में तेरे साथ न कूदूँगा कभी,
हुर्रिया इश्क़ भी बेकार-सा है!

तेरा इक़्दाम ये तहज़ीब-ओ-तमद्दुन के ख़िलाफ़
नामुवाफ़िक़ भी है नाक़ाबिल-ए-तसलीम भी है-

मैं गुनाहगार नहीं-मुझको नताइज से गरज़ ?
तू गुनाहगार है, फल भी तुझे तनहा ही भुगतना होगा!
मैंने तुझ को कभी देखा ही नहीं,
किस लिए मेरे शबिस्ताँ में चली आई है?
लौट जा नींद न कर मेरी उचाट
सुबह आफ़िस भी मुझे जाना है-

—

ऐ दोस्त, बताऐं क्या, कहाँ हम पहुँचे
पहुँचा न कोई वहाँ, जहाँ हम पहुँचे
सोते में कभी जहाँ पहुँचता था ख़याल
बेदार हुए जब तो वहाँ हम पहुँचे

—

फ़रार

झन्झोड़ कर ये किसने ख़्वाब-ए-नाज़ से जगा दिया?
मैं सो रहा था गहरी नींद बेख़बर मआल से
न इब्तदा का अक्स था ख़याल की निगाह में,
मैं पी रहा था पे-ब-पे
उन्ढ़ेल कर शराब-ए-हाल वक़्त के पियाले में,
हयात-ए-मुख़तसर मेरे लिए प्याम-ए-ऐश थी-
शबाब-ओ-हुस्न की लज़ीज़ चुटकियों से गुदगुदी थी क़ल्ब में
सजी सजाई इक उरूस-ए-नौ की तरह दिलनशीं
बहार गूँचाहा-ए-आरज़ू को थी निखारती,
भँवर में वलवलों के फँस गई थी किश्ती-ए-जुनूँ!

तह-ए-ज़मीं मुहीब गड़गड़ाता ज़लज़ला गया,
लरज़ उठी तमाम कायनात, आँख खुल गई
खुली जो आँख तीरगी ही तीरगी थी हर तरफ़
शबाब-ओ-हुस्न और बहार में से कोई भी न था
रबाब-ओ-चँग भी न थे-

दिल–ओ–दिमाग़ पर तिलिस्म–ए–इन्क़लाब छा गया
उतर गया ख़ुमार–ए–बादा–ए–फ़सून–ए–इम्बिसात–
निगाह रफ़ता रफ़ता तीरगी से आशना हुई
नकूश हल्के हल्के आ गए उभर के सामने,
वो सूरतें जिन्हें में जानता था, जानता न था
जो मेरे ज़हन–ओ–फ़िक्र के हदूद से भी दूर थीं
नक़ाब उठा के जलवागर थीं अपने असली रूप में–
निढ़ाल और मुज़महिल–
कहीं रगों में ख़ून–ए–गर्म का निशान तक न था–
पिचक गए थे गाल और लबों पे थीं सियाहियाँ
सियाहियों से हमकिनार ज़रदियाँ थीं मौत की

ये तिशनगी, ये भूक, जिस की इन्तेहा कोई नहीं,
ये जागते हुओं के ख़ौफ़नाक लरज़ाख़ेज़ ख़्वाब,
ये चींखती हुई फ़िजा–ए–रोज़–ओ–शब हयात की,
ये बिलबिलाती आरज़ूएँ क़ल्ब के मज़ार पर
सुकूँ का ख़ून बेक़रारियों की माँग का सुहाग
ये वहशियाना कोशिशें हुसूल–ए–मुद्दआ से तँग

फ़रेब-ओ-मक्र के बिछे हुए हर एक सिम्त जाल
यक़ीं के पाँव और बदगुमानियों की बेड़ियों,
अज़ल से आदमी इसी तरह असीर-ए-ज़ीस्त है!!

तमाम परदे एक एक करके ख़ुद सरक गए
हक़ीक़तें जो रोशनी में आँख से छुपी रहीं-
वो ज़ुल्मतों का सीना चाक कर के जगमगा उठीं
खुला जो राज़-ए-कायनात, दिल में एक दर्द उठा
फ़रार की तलाश रेंगने लगी दिमाग़ में
मैं सोना चाहता हूँ फ़िर-

—

घिर के आता है, बरसता है, चला जाता है अब्र
और पहरों आस्माँ को देखता रहता हूँ मैं
मेरी परवाज़-ए-तख़ैय्युल है अभी वुसअत तलब
तँगी-ए-कोन-ओ मकाँ को देखता रहता हूँ मैं

—

फ़साना

हुस्न दम साज़-ए-ग़म-ए-इश्क अगर हो न सका
मैं ग़म-ए-इश्क़ को सीने में दबा ही लूँगा
अपनी नाकाम ख़िरामी का करूँगा न गिला
खोके ख़ुद मँज़िल-ए-मक़सूद को पा ही लूँगा

हुस्न आवाज़-ए-ग़म-ए- इश्क़ अगर हो न सका
तोड़ ही दूँगा मैं हर तार-ए-रबाब-ए हस्ती
अहल-ए-आलम की निगाहों से उतर जाएगा
गुल-ए-पज़मुर्दा के मानिन्द शबाब-ए-हस्ती

और मैं ये भी अगर कर न सका दुनिया में
तो मेरी मौत पे आँसू न बहाना, हमदम
ये समझ लेना कि आया ही न था दुनिया में
ये समझ लेना कि था मैं भी फ़साना हमदम

—

चाँदनी रात

मेरे महबूब, तूझे हुस्न-ओ-जवानी की क़सम
मेरी पाकीज़ा मुहब्बत को न रुसवा करना
परवरिश पाई अँधेरों ही में अब तक मैंने
चाँदनी रात की मुझ से न तमन्ना करना
मैं अभी रस्म-ओ रिवायात का पाबन्द तो हूँ
नँग-ओ-नामूस की फ़िक्रों से नहीं हूँ आज़ाद
दर्द-ओ-आलाम के सहने की मुझे आदत है
लब पर आती ही नहीं जोर-ओ-जफ़ा की फ़रियाद
शब के पुरहौल अँधेरों की मुलाक़तों पर
मैंने तामीर किया है जो मुहब्बत का महल
रोशनी की कोई उस पर न किरण पड़ जाए
सर्द पड़ जाऐं न दहके हुए जज़्बों के कँवल
मेरे महबूब, मुहब्बत का तकाज़ा है यही
दिल के जलते हुए दाग़ों से उजाला करना
चाँदनी रात में मिलने की तमन्ना है ग़लत
चाँदनी रात की हरगिज़ न तमन्ना करना

—

दवामी तनहाई

रात के काले सन्नाटे में कोई नहीं जो आकर अब
चुपके से मेरे कानों में अमृत की वर्षा कर दे
मुद्दत से जो बन्द पड़े हैं दिल के बूढ़े दरवाज़े
नन्हे कोमल क़दमों की ठोकर से उन को वा कर दे
कोई नहीं जो सुन ले मेरे ग़मपरवर दिल की बातें
आकर मुझसे पूछे तनहाई अच्छी लगती है क्यूँ
सूरज से क्यूँ बैर है मुझको, चँदा से क्यूँ प्यार नहीं
मौत-सी वहशत दुनिया पर छाई अच्छी लगती है क्यूँ
ये बस्ती है या वीराना, शहर है या कोई मरघट
अनजानों की बात नहीं है, अपने भी बेगाने हैं
ज़हर-ए-हलाहल रग रग फैला, मौत के बस में है हस्ती
इक दीवाना मैं ही नहीं हूँ, सारे यहाँ दीवाने हैं
तनहा आए, तनहा जाए, रीत है ये इस महफ़िल की
भरी पुरी होकर भी सूनी, जीत है ये इस महफ़िल की
जिसे जिलाए उसे ही मारे, प्रीत है ये इस महाफ़िल की
तनहाई से नफरत कैसी, मीत है ये इस महाफ़िल की

—

आवाज़ों का शहर

साज़ टूटे हुए, मुतरिब ख़ामोश,
गीत मक़तूल तो नग़मे बिस्मिल,
ठुमरियाँ बैठी हैं सर लटकाए,
पायलें बे हिस–ओ–हरकत, मज़लूम,
थाप बिन तबला, वुजूद–ए–बेसुद,
कुलकुल–ए–मीना कहीं खोई हुई,
गुम फ़िजाओं में खनक साग़र की,
नहीं कलियों के चटकने की सदा,
बुलबुलें मुहर–ब–लब,महव–ए–सुकूत,
चलती है डरती दबे पाँव नसीम,
किसी मस्जिद से नहीं उठती अज़ाँ की आवाज़,
शोर–ए–नाकूस भी मँदिर में नहीं,
सीटियाँ, हार्न, बिगुल, चुप साधे,
मोटरें चलने की आवाज़ नहीं,

हादसे, फ़ितने सरअफ़राज़ नहीं,

और क्या है ये अगर राज़ नहीं-

कोई बोले तो मैं उस से पूछूँ

क्या यही शहर है आवाज़ों का?

मुझे तनहाई कहाँ ले आई,

एक सन्नाटा है तारी हर सू,

मेरी आवाज़ डराती है मुझे,

खिड़कियाँ बँद पड़ी हैं कब से,

अपना बेगाना यहाँ कोई नहीं

क्यूँ न अब ख़ुद ही पुकारूँ ख़ुद को

कोई आवाज़ तो कानों में पड़े

ये मेरा शहर है आवाज़ों का

—

महमान

दस्तक

वाहमा ये तो नहीं

आ गए हैं वो यक़ीनन अब तो

ढूँढता फिरता रहा हूँ जिन को

आ गए हैं ये वही

ऐ दिल!

खट खट

खोलता हूँ मैं अभी

बँद दरवाज़ा किया था किसने

यूँ उन्हें छीन लिया था किसने

सोच में डूब गया

ऐ दिल!

हर सू

ख़ामोशी छाई हुई

फिर ये दरवाज़े पे आया था कौन

रूह में मेरी समाया था कौन

हो नहीं सकती हवा

ऐ दिल!

—

शाम से सुबह तक

फिर तेरे दर पे जबींसाई को लौट आया हूँ
तूने ठुकरा भी दिया मुझको तो जाऊँगा न मैं
इक नया गीत, नया सोज़-ए-जुनूँ लाया हूँ
ताबके मँज़िल-ए-मक़सूद को पाऊँगा न मैं

लाश पे माज़ी-ए-नाकाम की रोया हूँ बहुत
दिल को दाग़ों से सजाया है अभी तक मैंने
सब्र और ज़ब्त के सहराओं में खोया हूँ बहुत
ग़म को तसकीन बनाया है अभी तक मैंने

शब-ए-तारीक में ख़ामोश उदास आहों ने
बारहा ख़्वाब दिखाए हैं उजालों के मुझे
ऊँघती, डूबती और खोई हुई राहों ने
दिए बरहम से जवाबात सवालों के मुझे

आ गया हूँ दर-ओ-दीवार को ठुकराता हुआ
अब तेरा दर ही मेरी जन्नत-ए-गुमगश्ता है
आ गया हूँ ग़म-ओ-अफ़कार को ठुकराता हुआ
अब तेरा कर्ब, मुझे हौसला-ए-फ़रदा है
मैं उभारूँगा तेरे नक़्श, निखारूँगा जमाल
क़ुव्वत-ए-फ़िक्र पे खोलूँगा नई राह-ए-निजात
अपने नग़मों के शरारों से सँवारूँगा जमाल
कोह बन जाएगा, इस वक़्त जो है काह-ए-हयात
एक तूफ़ाँ जो सिमेटे हुए सीने में हूँ मैं
मौज-ओ-साहिल के तफ़ावुत को मिटा सकता है
कौन कहता है शिक़सता से सफ़ीने में हूँ मैं
कौन अब मेरे इरादों को दबा सकता है
सुरख़ियाँ फैलती आती है उफ़क कर पैहम
आने वाली सहर-ए-नौ का पयाम-ए-ख़ामोश
ज़ुल्मतें लरज़ा बर अन्दाम-ओ-गुरेज़ाँ हरदम
डबडबाते हुए तारों का सलाम-ए-ख़ामोश

—

(सानेट)

दिल

दिल बज़ाहिर ख़ून का इक क़तरा-ए-नाचीज़ है
इस में लरज़ाँ है मगर मौज-ए-शराब-ए-ज़िन्दगी
इस के आगे जलवा-ए-रँग-ए-शफ़क़ क्या चीज़ है
मुनहसिर इस की नमू पर है शबाब-ए-ज़िन्दगी
जैसे रोशन हो फ़लक पर आफ़ताब-ए-ज़रनिगार
इस तरह दिल ख़ाकदान-ए-दहर में है नूर पाश
अक़्ल का रहता नहीं अहसास पर जब इख़्तियार
दिल ही करता है फ़रेब-ए-रँग-ओ-बू का राज़ फ़ाश
दिल और उलफ़त, लफ़्ज़ तो दो हैं मगर मतलब है एक
मुनसलिक दोनों अज़ल से एक ही रिश्ते में हैं
जिस तरह आग़ाज-ओ-अन्जाम-ए-मह-ओ-कोकब है एक
एक ही मँजिल है इन की एक ही जादे में हैं
आदमी को आशना-ए-ग़म बना देता है दिल
इशरत-ए-जावेद का महरम बना देता है दिल

—

(सानेट)

डुबकनी

पस-ए-परदा किसी ने मेरे अरमानों की महफ़िल को
कुछ इस अन्दाज़ से देखा, कुछ ऐसे तौर से देखा
ग़ुबार-ए-आह से देकर जिला आईना-ए-दिल को
हर इक सूरत को मैंने ख़ूब देखा, ग़ौर से देखा
नज़र आई न वो सूरत, मुझे जिसकी तमन्ना थी
बहुत ढूँढा किया गुलशन में, वीराने में, बस्ती में
मुन्नव्वर शम्अ-ए-मेहर-ओ-माह से दिन रात दुनिया थी
मगर चारों तरफ़ था घुप अँधेरा मेरी हस्ती में
दिल-ए-मजबूर को मजरूह-ए-उलफ़त कर दिया किसने
मेरे अहसास की गहराईयों में है चुभन ग़म की
मिटा कर जिस्म, मेरी रूह को अपना लिया किसने
जवानी बन गई आमाजगाह सदमात-ए-पैहम की
हिजाबात-ए-नज़र का सिलसिला तोड़ और आ भी जा
मुझे इक बार अपना जलवा-ए-रँगीं दिखा भी जा

—

आ जाओ

आ जाओ हुस्न-ओ-नूर की दुनिया लिए हुए
कैफ़ियत-ओ-सरूर की दुनिया लिए हुए
आ जाओ बिजलियों को छुपाए निगाह में
जेर-ए-नक़ाब तूर की दुनिया लिए हुए
आ जाओ हश्र ख़ेज अदा-ए-ख़िराम से
रफ़तार में ग़ुरूर की दुनिया लिए हुए

आ जाओ इज़्तिराब की दुनिया लिए हुए
रँगीनी-ओ-शबाब की दुनिया लिए हुए
आ जाओ छेड़ती हुई साज-ए-सरूर-औ-कैफ़
मयख़ाना-ओ-शराब की दुनिया लिए हुए
आ जाओ फिर झुकाए हुए चश्म-ए-नीमबाज़
नज़रों में इक हिजाब की दुनिया लिए हुए

आ जाओ सोज़-ओ-साज़ की दुनिया लिए हुए
राज़-ओ-नियाज़-ओ-नाज़ की दुनिया लिए हुए
आ जाओ मुस्कराती हुई सादगी के साथ
होठों में इक मजाज़ की दुनिया लिए हुए
आ जाओ दिल को देती हुई दर्द का पयाम
हुस्न-ए-ज़ुनूँ नवाज़ की दुनिया लिए हुए

आ जाओ अब कि दिल को नहीं ताब-ए-इन्तिज़ार
हद से गुज़र चुका है निगाहों का इज़्तरार
आदाब-ए-इश्क़ से नहीं वाकिफ़ अगर चे मैं
फिर भी मुझे है हुस्न के वादों का एतबार
तुम भी ज़रूर आओगी, मुझ को यकीन है
आई हुई है आज चमनज़ार में बहार

—

शिकस्त

मुझसे तुम रूठ के गई हो क्यूँ हिज्र का दाग़ दे गई हो क्यूँ
यूँ सुकूँ दिल का ले गई हो क्यूँ चाँद की सिम्त देखना है गुनाह
चाँद की सिम्त मैं न देखूँगा
कैफ-ए-जज़्बात में कुछ ऐसा बहा दीन-ओ-दुनिया का होश ही न रहा
जो कहा बेख़ुदी में झूट कहा चाँद की सिम्त देखना है गुनाह
चाँद की सिमत मैं न देखूँगा
चाँद को देखकर हुआ मैं तबाह खो गए रहनुमा-ओ-मँज़िल-ओ-राह
मिट गई मेरे दिल से चाँद की चाह चाँद की सिम्त देखना है गुनाह
चाँद की सिम्त मैं न देखूँगा
दिल-ए-महजूर को न तड़पाओ मैं पशेमाँ हूँ मान भी जाओ
मुस्कराती हुई चली आओ चाँद की सिम्त देखना है गुनाह
चाँद की सिम्त मैं न देखूँगा

—

(सानेट)

अपनी ‘‘मीरा’’ से

कहूँ मैं आह क्यूँकर, मुझ को तुझ से प्यार है ‘‘मीरा’’
तसव्वुर से तेरे दिन रात हमआग़ोश रहता हूँ
कुछ ऐसा कैफ़परवर इश्क़ का आज़ार है ‘‘मीरा’’
कि इस नश्शे में हरदम बेख़ुद-ओ-मदहोश रहता हूँ
न दुनिया की ख़बर मुझ को न अपना होश है मुझ को
बस इतना जानता हूँ, तू है, तेरी याद है ‘‘मीरा’’
न फ़िक्र-ए-आलम-ए-फ़रदा, न रँज-ए-दोश है मुझ को
मुहब्बत वाक़अई हर क़ैद से आज़ाद है ‘‘मीरा’’
मैं कह तो दूँ मगर मेरा दिल-ए-मजबूर डरता है
कि ये जुर्रत न बाइस हो परीशानी-ओ-वहशत का
यही ग़म मेरी उम्मीदों में रँग-ए-यास भरता है
यही ग़म राहबर है मँज़िल-ए-दर्द-ए-मुहब्बत का
तुझे मालूम ही है मेरे दिल पर क्या गुज़रती है
तो फिर क्यूँ इम्तिहाँ ले कर मुझे नाकाम करती है

—

नाक़ाबिल-ए-फ़रामोश

दिल को दीवाना बनाना याद है

मस्तियाँ हर सू लूटाना याद है

सहन-ए-गुलशन में बसद हुस्न-ओ-जमाल

रोज़ ताज़ा गुल खिलाना याद है

मुस्कुरा कर देखना मेरी तरफ़

देखकर फिर मुस्कराना याद है

मुझ से रफ़ता रफ़ता वो खुलना तेरा

नीची नज़रों को उठाना याद है

कर गए हैं दिल में घर कुछ इस तरह

मैं वो बीते दिन भूला दूँ किस तरह

—

इन्क़लाब-ए-बहार

मुज़्दा-ए-दिल, फिर गुलिस्ताँ में बहार आने को है
अज़ सर-ए-नौ लाला-ओ-गुल पर निखार आने को है
भीगी भीगी हैं हवाऐं रूहपरवर है फ़िज़ा
फिर कोई काली घटा दीवानावार आने को है
इन्क़लाबी सूर फूँका जा रहा है दहर में
ग़मज़दों को इशरत-ए-ग़म साज़गार आने को है
चाँदनी सोई हुई है वादी-ए-गुलपोश में
कोह से गाता हुआ कोई आबशार आने को है
ग़र्क़-ए-मय होने को है फिर आलम-ए-इम्काँ तमाम
साक़ी-ए-मख़मूर सू-ए-जूएबार आने को है
गूँजते हैं साज-ए-पैमाना पे नग़मात-ए-शराब
मयकदे की सिमत हर परहेज़गार आने को है
फिर नज़र के सामने है जलवाज़ार-ए-रू-ए-दोस्त
रूह को आराम और दिल को क़रार आने को है
दिल से दाग़-ए-सोज़-ए-नाकामी फना हो जाएगा
अब बहार आती है, आलम गुलक़दा हो जाएगा

—

हुस्न-ए-आमद

वो इठलाती हुई आई, वो बल खाती हुई आई
लुटाती मस्तियाँ, पैमाने छलकाती हुई आई
लचकती, झूमती, महशर को ठुकराती हुई आई
ब सद अन्दाज़ आई, बर्क़ लहराती हुई आई
महकती, झिलमिलाती, नाचती, गाती हुई आई
नसीम-ए-सुबह की मानिन्द इतराती हुई आई
अदा-ओ-नाज़-ओ-शोख़ी, मुस्कराहट, बाँकपन, जोबन
हज़ारों बिजलियाँ महफ़िल में चमकाती हुई आई
शबाब-ओ-शेअर की तकमील का इक पैकर-ए-रँगीं
ख़याल-ओ-ज़हन-ए-शाइर पर सितम ढ़ाती हुई आई
सहर की ताज़गी में नौशगुफ़्ता फूल की सूरत
चमनवालों में हँसती और इतराती हुई आई

सियाह गेसू, जबीं रोशन, नज़र तीखी, लब-ए-लालीं
हज़ारों तीर अहल-ए-दिल पे बरसाती हुई आई
नकूश-ए-पा से लाखों गुल कतरती राह-ए-उलफ़त में
लज्जाती, मुस्कराती, नूर बरसाती हुई आई
लिए गँग-ओ-जमन अपनी नशीली मस्त आँखों में
घटा बन कर दिमाग़-ओ-रूह पर छाती हुई आई
दिलों में हश्र-ए-अहसासात बरपा क्यूँ न हो जाता
रगों में ज़िन्दगी की बर्क़ दौड़ाती हुई आई

—

सितारे नींद से महरूम सीने चाक फूलों के
दिल अपनी दास्तान-ए-बेकसी किसको सुनाता है

—

मिल गया जो जिस की क़िस्मत में था आते ही बहार
ख़िन्दा-ए-गुल बाग़ को और चाकदामानी मुझे

—

त्याग

शीशमहल से राजकुमारी प्रेम कुटी में आई
जँगल की सुनसान फ़िज़ा ने ली इक मस्त अँगड़ाई
डाली डाली झूम उठी, पत्ती पत्ती लहराई
सुँदर आशाओं की दुनिया हृदय में मुस्काई
आँखें मनमोहन, मधमाती, मतवाली, दीवानी
सुँदर पेशानी पर बल यूँ जैसे हो अभिमानी
काँधों पर गेसू लहराए, मुख में सुँदर बानी
जाग उठी कुटिया की क़िस्मत दूर हुआ अँधियारा
फैल गया कोने कोने में दर्शन का उजियारा
जँगल में मँगल हो जैसे कोई नहीं दुखियारा
प्रेम कुटी के हर ज़र्रे पर छाई है मदहोशी
साक़ी की आमद पर जैसे रिन्दों की मयनोशी
दिल में इक जज़्बात का तूफ़ाँ होंठों पर ख़ामोशी

क्यूँकर इस्तिक़बाल करूँ मैं कौन-से नग़में गा़ऊँ

और तो कुछ भी पास नहीं है जीवन भेंट चढ़ाऊँ

मैं तो ख़ुद हूँ प्रेम पुजारी, प्रेम की भिक्षा पाऊँ

शीशमहल का, प्रेम कुटी का सारा भेद मिटाऊँ

ऐसे आलम में खो जाऊँ, महव इतना हो जाऊँ

शीशमहल से राजकुमारी प्रेमकुटी में आई

—

हँगाम-ए-सहर रात के साए सिमटे

नूर-और-ज़िया के चश्मे फूटे, फैले

रक़्क़ासा-ए-जी़स्त लेकर अँगड़ाई उठी

नग़मों ने मचाई धूम, गूँचे चटके

—

मँज़िल-ए-होश में कुछ भी तो नहीं गम के सिवा

रास्ता कोई दिखा दे मुझे मयखा़ने का

आइने के सामने

तुम्हारे रुख़सार रँग-ओ-नूर-ए-शबाब से जगमगा रहे हैं
तुम्हारे रँगीन होंठ साज़-ए-बहार में मुस्करा रहे हैं
तुम्हारे शबगूँ सियाह गेसू, हवास-ए-आलम उड़ा रहे हैं
तुम्हारी आँखों में मस्तियाँ हैं
कि मस्तियों की ये बस्तियाँ हैं
यहाँ फ़क़त मय परस्तियाँ हैं
तुम्हारी रोशन जबीं में तारे निशात के झिलमिला रहे हैं

तुम आइने में सँवर रही हो

कहीं कहीं बादलों के टुकड़े बिसात-ए-गरदूँ पे जलवागर हैं
ये आलम-ए-जज़्ब-ओ-बेख़ुदी है कि फ़र्ज से अपने बेख़बर हैं
ये जाते ख़ुरशींद की शुआऐं निढ़ाल होकर भी शोख़तर हैं
तुम्हें दरीचे से झाँकती हैं
तजल्लियाँ नज़्र कर रही हैं
तुम्हीं पे गोया मिटी हुई हैं
सरूर-ए-नज़्ज़ारा-ए-जमाल-ओ-निशात-ए-रँगी से कैफ़ पर हैं!
तुम आइने में सँवर रही हो
मेरे दिल-ए-पुर उम्मीद में आरज़ूऐं करवट बदल रही हैं
वो आरज़ूऐं जो मेरे सीने से आह बनकर निकल रही हैं
वो आरज़ूऐं जो मेरे होंठों पे खेलने को मचल रही हैं
बना हुआ हूँ नज़र सरापा !
है खुश्क अब आँसूओं का दरिया
तुम्हारा चेहरा है कितना प्यारा
बर आऐंगी अब वो सब उम्मीदें जो दिल में बरसों से पल रही हैं
तुम आइने में सँवर चुकी हो

—

तस्वीर

तेरी तस्वीर से पैदा कमाल-ए-हुस्न-ओ-शोख़ी है
निशात-ए-रूह तनवीर-ए-जमाल-ए-हुस्न-ओ-शोख़ी है
निगाह-ए-शोक़ सामाँ पायमाल-ए-हुस्न-ओ-शोख़ी है

बरसती है तेरी चश्म-ए-फ़सूँगर से नई मस्ती
वो मस्ती मुनहसिर जिस पर है कैफ़-ए-आलम-ए-हस्ती
वो मस्ती जिससे है मदहोश हर वीराना हर बस्ती

तेरे रुख़सार-ए-रँगी पर गुमाँ है सुबह-ए-गुलशन का
तेरे अनवार पर होता है धोका बर्क़-ए-ख़िरमन का
चिराग़-ए-तूर है गोया सितारा तेरे दामन का

तेरे जलवों का है ममनूँ उजाला महफ़िल-ए-दिल का
नहीं ख़ुरशीद को ताब-ए-रुख-ए-पुरनूर का यारा
ज़िया-ए-हुस्न-ए-आलमगीर से रोशन है कुल दुनिया

तेरी तस्वीर से वाबस्ता है रँगीनी-ए-आलम
तेरी तस्वीर है पैग़ाम-ए-तसकीन-ए-दिल-ए-पुरग़म
मगर दिल में मेरे क्यूँ बढ़ रही है बेकली हरदम

सितारे रात को जब आस्माँ पर जगमगाते हैं
शुआओं का ख़जाना ज़ुल्मतस्ताँ में लुटाते हैं
तेरी तस्वीर के आगे मुझे सजदे में पाते हैं

मुनादी सुबह की करता है अब ख़ुरशीद मशरिक़ से
हुवैदा सब पे कर देता है धोके ख़्वाब-ए-ग़फ़लत के
मुझे सजदे में पाता है तेरी तस्वीर के आगे

बहार आती है जब लेकर चमन में लाला-ओ-गुल को
सिखा देती है फ़िरदौसी तराने लहन-ए-बुलबुल को
मेरा मसजूद पाती है तेरी तस्वीर-ए-काकुल को

तेरी तस्वीर से मैं दास्तान-ए-शौक़ कहता हूँ
उम्मीद-ए-साहिल-ए-मक़सूद की मौजों में बहता हूँ
फ़रेब-ए-आरज़ू की अपने दिल पर चोट सहता हूँ

सहारा है यही तूफ़ान-ए-अमवाज-ए-तमन्ना में
इसी से रोशनी होती है पैदा चश्म-ए-बीना में
झलकता है इसी का रँग-ए-मस्ती जाम-ए-सहबा में

भरोसे पर तेरी तस्वीर के ज़िन्दा हूँ मैं अब तक
सितम सहता हूँ दुनिया के वफ़ा करता हूँ मैं अब तक
तुझी से हमकलाम-ओ-हम सुख़न गोया हूँ मैं अब तक

—

दाद-ए-वफ़ा मिले न मिले ऐ ख़ुदा-ए-इश्क़
इतना तो हो कि हम पे जफ़ा भी न हो सके
जान-ए-अज़ीज़ तू हमें कितनी अज़ीज़ थी
हम आशियाँ के साथ फ़ना भी न हो सके

—

क़ौस-ए-क़ुज़ाह

मेहर-ए-रोशन की आख़िरी किरणें

रक़्स करती है काले बादल में

उन शुआओं से रँग गिरते हैं

और दोश-ए-हवा पे फिरते हैं

और बनाते हैं आस्माँ पे कमाँ

रँगज़ा, रँगबार-ओ-रँगअफ़्शाँ

उस कमाँ से वो तीर आते हैं

जो नज़र की ख़लिश मिटाते हैं

—

मैं उन से भी नहीं कहता हूँ वजह-ए-इज़्तराब-ए-दिल

ज़माने पर कहीं राज़-ए-निहाँ ज़ाहिर न हो जाए

—

घटाऐं

काफ़िर घटाऐं   ठँडी हवाऐं
जलवा नुमा हैं   राहतफ़ज़ा हैं
रँगीनियों का   तूफ़ाँ है बरपा
हुस्न – औ – लताफ़त   ऐश और नुज़हत
आलम पे तारी   जारी – ओ – सारी
दामन में भरकर   लाई हैं कौसर
मयख़्वार आऐं   हुशियार आऐं
बेताब आऐं   बेख़्वाब आऐं
आऐं हसीं भी   अन्दोहगीं भी
दैर – ओ – हरम के   आऐं फ़रिशते
मुफ़लिस तवँगर   सब आऐं मिलकर
साग़र भरे हैं   कौसर भरे हैं
मयकश उठा लें   पी लें, पिला लें
है आम रहमत   हँगाम – ए – इशरत
खाली न जाऐं
काली घटाऐं

—

बून्दों का साज़

निशात अफ़रोज़ शाम-ए-रँगीं लताफ़तों को बढ़ा रही है
लिए हुए साज़ बदलियों का शबाब के गीत गा रही है
दिलों में बेताब वलवले हैं, दिमाग़ और होश खो चले हैं
निगाह के सामने तजल्ली बहार की जगमगा रही है
अगरचे ख़ुरशीद छुप गया है मगर अभी तक शुआ-ए-आख़िर
कहीं कहीं बादलों में मन्ज़र हसीन-ओ-दिलकश बना रही है
निशात तक़सीम हो रही है, चमन चमन जन्नतें बनेंगी
टपक रही है जो बून्द रस की फ़लक से, गूँचे खिला रही है
दिलों में वहशत, सरों में सोदा, निगाह मुज़तर, हवास, ग़ायब
गरज गरज कर सियाह बदली हज़ार फ़ितने जगा रही है
हवा भी रँगीं, फ़िज़ा भी रँगीं, जमीं भी रँगीं फ़लक भी रँगीं
ग़ुरूब-ए-ख़ुरशीद भी है रँगीं तुलू-ए-शब की झलक भी रँगीं

वो पैकर-ए-हुस्न जिस ने मेरे दिमाग़ को जज़्ब कर लिया है
निसार क़दमों पे जिसके , मुद्दत हुई, दिल-ए-ज़ार हो चुका है
मेरे तसव्वुर के आइने में है जिस का परतौ जमाल-ए-ऐमन
जो मेरे टूटे हुए सफ़ीने का बहर-ए-हस्ती में नाख़ुदा है
जो मेरी आँखों की रोशनी है, जो मेरे दिल का क़रार-ए-मुतलक़
जिसे मेरा हर नफ़स, समझकर ख़ुदा का अवतार पूजता है
सिमट के जिस में समा रही हैं तमाम ताबानियाँ जहाँ की
ग़लत सरासर ग़लत जो मैं ये कहूँ कि वो माहताब सा है
कि उस का दोनों जहाँ में सानी नहीं है कोई नहीं है कोई
वो आप ही है नज़ीर अपनी, वो आप ही अपना दूसरा है
वो सुन रही है मैं दास्ताँ उस को अपने दिल की सुना रहा हूँ
जो साज़ बून्दों का बज रहा है उसी पे मैं गीत गा रहा हूँ
न ख़त्म हो गीत ये अबद तक, ये कैफ़ यूँ ही रहे इलाही
रहे हमेशा मुहीत-ए-आलम ये शाम की पुरसुकूँ सियाही

ठहर अभी आफ़ताब-ए-रोशन न डूब मग़रिब की पस्तियों में
कि अहद-ए-उलफ़त की मेरे देनी पड़ेगी इक दिन तुझे गवाही
घटाओ! तुम आज ख़ूब बरसो उछाल दो कुल समुन्दरों को
महल-ओ-मौक़े से बेतअल्लुक़ है अब तुम्हारी ये कमनिगाही
वो सुन रही है फ़साना-ए-शौक़ मेरा और मुस्करा रही है
ख़मोशी-ए-हुस्न फिर है आमादा-ए-सितम, माइल-ए-तबाही
ये बन्दगान-ए-गुनाह-ओ-इसियाँ हवस समझते हैं इश्क़ को भी
ख़टक रही है तमाम दुनिया की आँख में मेरी बेगुनाही
हवा ज़माने की है मुख़ालिफ़, ख़ुदा मुझे कामयाब कर दे
यहीं ठहर जाए तौसन-ए-वक़्त ये दुआ मुस्तजाब कर दे

—

मुझे धोखा दिया मेरी नज़र ने
करूँ तुझ से शिकायत क्या, गिला क्या

—

अब्र-ए-बहार

अब्र-ए-बहार आया दीवानवार आया
बेइख़्तियार आया
उड़ता हुआ हवा पर गाता हुआ फ़िज़ा पर
दुनिया-ओ-मासिवा पर
अँगड़ाई ली चमन ने नरगिस ने, यासमन ने
मुरग़ान-ए-नग़माज़न ने
बदला निज़ाम-ए-आलम रूपोश हो गया ग़म
उठा ख़िज़ाँ का परचम
हर सिमत नूर फैला कैफ़-ओ-सरूर फैला
नज़दीक-ओ-दूर फैला
परवाने रक़्स में हैं पैमाने रक़्स में हैं
दीवाने रक़्स में है
हर रूह मस्त-ओ-बेख़ुद बादा परस्त-ओ बेख़ुद
कौसर बदस्त-ओ -बेख़ुद
बादा बदोश साक़ी मस्ती फ़रोश साक़ी
है नश्शाकोश साक़ी

इस दौर-ए-अँबरी में
इस फ़सल-ए-दिलनशीं में
इस मौसम-ए-हसीं में
फ़ितरत परस्त शाइर
जज़्बात का मुसव्विर
हालात का मुबस्सिर
सब कुछ भुला चुका है
तख़ैय्युल आज़मा है
तख़लीक़ कर रहा है
नज़रें हैं कहकशाँ पर
उड़ता है आस्माँ पर
पहुँचा है ये कहाँ पर
याद आ रहे है उसको
तड़पा रहे हैं उसको
बहका रहे है उसको
भूले हुए फ़साने
गुज़रे हुए ज़माने
गाए हुए तराने
कुछ गुनगुना रहा है
गोया कि गा रहा है
और मुस्करा रहा है
उनवान-ए-नज़्म-ए-शाइर
''अब्र-ए-बहार-ए-हस्ती''
दो लफ़्ज़ हैं यही तो
कैफ़-ओ-ख़ुमार-ए-हस्ती

—

बरसात

उड़ते हुए मयख़ाने बढ़ कर रिन्दों की तमन्नाओं से मिले
दोशीज़ा-ए-फ़ितरत जाग उठी, साज-ए-इशरत के तार हिले
कलियाँ मुस्काई फूल खिले   नग़मे ने ली अँगड़ाई   बरसात आई
गाती लहराती इठलाती जन्नत से हवाऐं आने लगीं
दिल की आग़ोश में ख़्वाबीदा फ़ितनों की नींद उड़ाने लगीं
ख़ून-ए-ताज़ा दौड़ाने लगीं जज़्बों को मिली फिर बरनाई बरसात आई
मौजें बिफरीं, दरिया उमड़े, सब्ज़ा लहका, गुलशन महका
दुनिया ने नई करवट-बदली, सीना धड़का, चहरा दहका
चलते चलते राही बहका   शबनम पत्तों पर लहराई   बरसात आई
मख़मूर फ़िज़ा मदहोश हवा, पुरकैफ़ घटाओं के साए
वो रक़्स उरूस-ए-मस्ती का, हर चश्म-ए-तमाशा ललचाए
ईमान भी ठोकर खा जाए   आलम वहशी-ओ सोदाई   बरसात आई

जुगनू ने शम्ऐं रोशन कीं, रूमाँ परवर मन्ज़र चमके

मलहार की रोशन तानों से चमकीं दीवारें दर चमके

घरवाले हँसे और घर चमके   हस्ती झूमी और लहराई   बरसात आई

साजन परदेस से लौट आया सजनी की उम्मीदें बरआईं

भूली हुई यादें बून्दों के गीतों में आप उभर आईं

आशाऐं उमन्गें बर आईं   पैग़ाम मुसर्रत का लाई   बरसात आई

झूलों पे जवाँ मुस्कान लिए, अलबेला हुस्न हुआ रक़्साँ

रक़्साँ अपनी दुनिया में बशर, अपनी जन्नत में ख़ुदा रक़्साँ

अपने शेअरों में ''ज़िया'' रक़्साँ   बासद कैफ़्-ओ-सद रानाई   बरसात आई

—

कहते रहे फ़सना-ए-गुल, क़िस्सा-ए-बहार

कहना जो था मगर न कहा और रो लिए

इक नामुराद-ए-शौक़ से हम ने कहा ''ज़िया''

रोना नहीं जुनूँ में रवा और रो लिए

—

रूह का पैमाना

भर दे मेरा जाम ऐ साक़ी, भर दे मेरा जाम
आया हूँ मैं दूर से साक़ी, भर दे मेरा जाम
कैफ़ियत और नूर से साक़ी, भर दे मेरा जाम
नूर वो जिस से रोशन दिल का काशाना हो जाए
कैफ़ वो जिस में डूब के हस्ती मयख़ाना हो जाए
ज़ीस्त जिसे कहती है दुनिया, मस्ती का है नाम
भर दे मेरा जाम

मशरिक़ से वो सूरज उभरा, पहने ज़र्रीं ताज
चाँद सितारे छोड़ के भागे अपना अपना राज
बेदारी के नग़मों से बेताब हुआ हर साज़
तू भी तो ऐ मेरे साक़ी, दे मुझ को आवाज़
मेरी उम्मीदें भी क्यूँकर रह जाऐं तिशनाकाम
भर दे मेरा जाम

बेख़ुद हैं नश्शे में रँग-ओ-बू के कुल गुलज़ार
फ़र्क नहीं है मुतलक़ कोई गुल हो या हो ख़ार
दूर कहीं इक गुलशन है इस गुलशन से भी ख़ूब
दिल तो दिल, हो जाती हैं जिससे रूहें मग़लूब
उस गुलशन के भेद बता कर, मुझ को कर ले राम
भर दे मेरा जाम

बादल करते हैं गरदूँ पर बेताबी का रक़्स
ख़ाक का हर ज़र्रा करता है शादाबी का रक़्स
भूल चुके हैं अकसर तुझको, होकर ना उम्मीद
नाउम्मीदी ही तो है बरबादी की तमहीद
मुझको भी इस तरह न रख तू नोमीद-ओ- नाकाम
भर दे मेरा जाम

पीकर मैं बेख़ुद हो जाऊँ, गाऊँ तेरे गीत
मेरी जीत हक़ीक़त में है साक़ी, तेरी जीत
देख के मेरी मस्ती दुनिया फिर मस्ती में आए
उस आलम में मुझको खो दे और तुझे पा जाए
मुझसे ग़फलत क्यू, मैं तो हूँ रिन्द-ए-मय आशाम
भर दे मेरा जाम

मुद्दत से तेरा मयख़ाना है बे रँग-ओ-नूर
क्या इस का अन्जाम तूझे ऐसा ही था मन्जूर
हार के जा बैठे हैं गोशे में सारे मयख़्वार
जो भी है इस महफ़िल में, है मस्ती से बेज़ार
लेकिन मुझको देख, कि मेरा शौक़ नहीं है ख़ाम
भर दे मेरा जाम

तेरे ही तो बन्दे हैं सब बाहोश-ओ-बेहोश
ज़ेब नहीं देता है तुझको हो जाना ख़ामोश
ऐ कैफ़-ओ-मस्ती के ख़ालिक, मस्ती कर तक़सीम
फिर इन तिशना रूहों को दे तसकीं की तालीम
ला अपनी वो ख़ास सुराही, रँगीं-ओ-गुलफ़ाम
भर दे मेरा जाम, ऐ साक़ी, भर दे मेरा जाम

—

चमकता रेश्मी मलबूस या खद्दर का पैराहन
बहाना चाहिए कोई मुझे तन ढ़ाँपना तो है
उठाना ही पड़ेगा, धूप हो, तूफ़ान-ए-बाराँ हो
ये बार-ए-ज़ीस्त मेरी तब्अ-ए-नाज़ुक पर गिराँ गो है

—

फूलों से होता है गोया, सुनता है हवाओं से नग़में
तारों से बहला करता है, दिल अपना एक खिलौना है
आओ जब तक बेदार हैं हम, रूदाद-ए-दिल कह लें सुन लें
इक दो लम्हे की फ़ुरसत है, फिर गहरी नींद ही सोना है

—

बढ़ते साए

साए बढ़ते ही चले जाते हैं
ख़ाक उगलती है धूँआ
नूर सिमटा हुआ, मुँह अपना छुपाने के लिए
जुस्तजू में है किसी गोशे की
और बढ़ते ही चले जाते है साए हरदम

हर तरफ़ मशरिक़-ओ-मग़रिब की फ़िज़ाओं में हुजूम
जँग की तीरह-ओ-पुरहौल घटाओं का है
हिचकियाँ लेते नज़र आते हैं ख़ुरशीद-ओ-नुजूम
रँग बिखरा हुआ मासूम फ़िज़ाओं का है
चँग-ओ-बरबत की सदा
रूह के रक़्स का इक अक़्स-ए-जमील
नौ-ए-इन्सानी की तहज़ीब-ओ-तमद्दुन का निखार

यानी सदियों का निचोड़

शोरिश-ओ-ग़लग़ला-ए-महशर-ए-अजसाम में आह

रह गई दब के हमेशा के लिए

क्या हमेशा के लिए?

कुराह-ए-अर्ज़ पे छाई है भयानक ज़ुल्मत

और मालूम नहीं राह के पेच-ओ-ख़म

और मँज़िल का तसव्वुर भी नहीं ज़हनों में

और दिल दहले हुए, पाँव पे लरज़ा तारी

और दम घुटता हुआ

ज़ुल्मतें फिर भी घिरी आती हैं

और बढ़ते ही चले जाते हैं साए हरदम

—

तूफ़ान

उठा तूफ़ान

गरजते बादलों ने आस्माँ पर कर लिया कब्ज़ा,

चमकती बिजलियों में छुप गया जलवा सितारों का,

नज़र आता नहीं महताब का ताबिन्दा चहरा भी,

क़रीब-ओ-दूर हर जानिब अँधेरा ही अँधेरा है

बहुत तारीक है माहौल गिरदाब-ए-हवादिस का

हवाऐं चींख़ती हैं और मौजें तिलमिलाती हैं

सुकूँ धोका है, हस्ती इक मुसलसल कश्मकश का नाम-ए-सानी है

कहाँ है नाख़ुदा इसका?

बही जाती है किश्ती ख़ुद-ब-ख़ुद मौजों के दामन में

कभी पानी की चादर में ये छुप जाती है नज़रों से
कभी ये फिर उभर आती है सतह-ए-आब पर गोया
असर इस पर नहीं होता है तूफ़ानी थपेड़ों का,
बही जाती है किश्ती ख़ुद-ब-ख़ुद मौजों के दामन में

कहीं साहिल भी है यारब?
लिए जाती है किश्ती को बहा कर किस तरफ़ मौजें
शब-ए-तारीक में-ज़ालिम अँधेरे में,
कभी वो वक़्त आ जाएगा जब ख़ुरशीद भी मशरिक़ से उभरेगा
नवीद-ए-दौर-ए-नौ लेकर
कटेंगे बन्द-ए-मजबूरी,

—

जला के ख़ाक ही बुलबुल को कर दिया आख़िर
गिरी जो बरक़ तो फिर आशियाँ से कुछ न हुआ

—

दौर-ए-नौ

आँख खुली तो रात न थी-वो बात न थी
बत्न-ए-मशरिक़ से दिन का इठलाता सूरज उभर रहा था
धरती के रोशन आँगन में कुवाँरी किरणें नाच रही थीं
वक़्त की लम्हा लम्हा बजती पायल नग़्में बाँट रही थी
सदियों का रस घोल रही थी-
बोल रही थी:
ख़त्म हुआ ज़ुल्मत के जादूगर का तमाशा
टूट गया वो सिलसिला-ए-तख़रीब-ओ-तबाही
जिस से ख़जल इन्सानियत थी
हँगाम-ए-बेदारी आया
सोनेवालो! जाग भी जाओ
देखो हर सू शादाबी है
प्यास बुझी है
चेहरा चेहरा निखर गया है
कली कली पर रँग-ए-तबस्सुम बिखर गया है

होता है दौर-ए-तामीर आग़ाज़ यहीं से
इन्साँ सरअफ़राज़ यहीं से
बढ़कर इस्तिक़बाल करो इस दौर-ए-नौ का
पाँव न पीछे हटने दो इस दौर-ए-नौ का

ये दौर-ए-नौ गहवारा है अम्न-ओ-सुकूँ का
बहबूदी-ए-बशर का हामिल
इस ने ही गिरतों को सँभाला
इस की नज़र में आज़ादी की सच्ची मँज़िल
मुद्दत से जो बँद पड़े थे दरवाज़े, वो इस ने खोले
और इजाज़त दी जाँबख़्श हवाओं को अँदर आने की
सदियों के सोए आख़िर अँगड़ाई ले कर जाग उठे

आँख खुली तो रात न थी-वो बात न थी

—

साल की आख़िरी रात

ख़त्म होता है साल आ जाओ   दूर कर दो मलाल आ जाओ
भूल जाओ मेरे गुनाहों को   शब के नालों को दिन की आहों को
जो हुआ इस का ग़म फ़िज़ूल है अब   दास्तान–ए–अलम फ़िज़ूल है अब
नामुरादी का ज़िक्र जाने दो   कामरानी का दौर आने दो
आओ फिर बैठ जाओ पास मेरे   वलवले क्यूँ रहें उदास मेरे
आओ हम फिर पीऐं पिलाऐं कहीं   मौसम–ए–नौ का लुत्फ़ उठाऐं कहीं
आओ फ़िर छेड़ दें शबाब का साज़
होनेवाला है साल–ए–नौ आग़ाज
सर्द ओ–तारीक और तवील है रात   इशरत–ए–सुबह की दलील है रात
आज की रात ग़म किसी को नहीं   रक़्स करते हैं आस्मान–ओ–जमीं
ये सितारे जो झिलमिलाते हैं
प्रेम की रागनी सुनाते हैं

—

नया साल

लोग कहते हैं साल ख़त्म हुआ   दौर-ए-रँज-ओ-मलाल ख़त्म हुआ
इशरतों का पयाम आ पहुँचा   अहद-ए-नौ शादकाम आ पहुँचा
गूँजती हैं फ़िजाएं गीतों से   रक़्स करते हैं फूल और तारे
मुस्कराती है कायनात तमाम   जगमगाती है कायनात तमाम
मुझको क्यूँ कर मगर यक़ीं आए

मेरे दिल को नहीं क़रार अब तक   मेरी आँखें है अश्कबार अब तक
हैं मेरे वास्ते वही रातें   क़िस्सा-ए-ग़म फ़िराक़ की बातें
आज की रात तुम अगर आओ   अब्र बनकर फ़िज़ा पे छा जाओ
मुझको चमकाओ अपने जलवों से   दिल को भर दो नई उमन्गों से
तो मैं फिर समझूँ साल-ए-नौ आया

—

न रोक

प्रेम का बीज जो मन में बोए
उस को क्यूँ कर धीरज होए

रोने से ने रोक
सखी री, रोने से न रोक

कारी कारी बदरी रोए
आँसू से आँचल को धोए

उस को भी तू टोक
सखी री, रोने से न रोक

पापी मन है प्रेम पुजारी,
लगी कलेजे बिरह कटारी

होश गए परलोक
सखी री, रोने से न रोक

—

बिरहन

तारे तो दें ताने मुझको, चँद्र मुझे तड़पाए
रैन बिरहा की साँय साँय करके रोज़ डराए
बालम हैं परदेस सखी री, नींद न मुझको आए

फूलों से भँवरा करता है मीठी मीठी बातें
दिन मेरे हैं सूने सूने, उजड़ी उजड़ी रातें
बालम है परदेस सखी री, नींद न मुझको आए

मुझ से पूछ बताऊँ तुझको बिरहन क्या है सजनी
साँझ सवेरे चैन न आए, सुलगे मन में अग्नी
बालम हैं परदेस सखी री, नींद न मुझको आए

—

बिरहन का गीत

पीतम नाहीं आए
सखी री सावन बीता जाए

पीतम बिन सँसार है सूना
देस, नगर, घरबार है सूना
ये फूलों का हार है सूना
कौन इसे पहनाए
सखी री पीतम नाहीं आए

पीतम का परदेस में बासा
भारी है मुझ पर चौमासा
टूट चली है मन की आसा
कौन अब धीर बँधाए
सखी री पीतम नाहीं आए

नीला अम्बर, कारे बादल
जैसे हों नैयनों में काजल
मन मेरा है प्रेम की कोंपल
खिलते ही मुरझाए
सखी री पीतम नाहीं आए
बिजली चमके, पानी बरसे
सखियों का दिल काँपे डर से
पी कारन निकली मैं घर से
निकली जोग रमाए
सखी री पीतम नाहीं आए
झूटे जग की प्रीत है झूटी
माया, मोह की रीत है झूटी
क्या मेरी भी मीत है झूटी
कोई मुझे झुटलाए
सखी री सावन बीता जाए

चैन नहीं है मोरे मन को
प्रीत की आग लगी है तन को
आग लगाऊँ इस जीवन को
पी दरशन न पाए
सखी री सावन बीता जाए

मैं पापिन, क़िस्मत की मारी
कर के प्रीत हुई दुखियारी
अब तो मैं रो रोकर हारी
कोई उन्हें ले आए
सखी री सावन बीता जाए

—

हुई तक़सीम जब मुहब्बत की
मेरे हिस्से में इंतिज़ार आया
रविश-ए-मयकदा बदल देता
कोई ऐसा न होशियार आया

—

एक लूटेरा

किस से खेलूँ जी बहलाऊँ
उछलूँ, कूदूँ, नाचूँ, गाऊँ
हँसूँ, हँसाऊँ, रोऊँ, रूलाऊँ
कैसे बिगड़ी बात बनाऊँ

टूट गया है दिल का ख़िलौना
दिल का खिलौना टूट गया

मैं हूँ, रात है, तनहाई है
ग़म की काली घटा छाई है
बीते दिनों की याद आई है
दिल की कली मुस्काई है

छूट गया है साथ युगों का
साथ युगों का छूट गया

ये तो बता, ओ जाने वाले
मैं बिरहन हूँ किसके हवाले
दिल में ज़ख़्म ज़ुबाँ पर ताले
भरने को हैं सब्र के पियाले

फूट गया है हाय नसीबा
हाय नसीबा फूट गया

सूखा गया मौसम सावन का
माला टूटी, बिखरा मनका
होश किसे है अब तन मन का
नींद आँखों की, सुख जीवन का

लूट गया है एक लूटेरा
एक लूटेरा लूट गया

—

बाईस-ए-आमद-ए-ख़िज़ाँ है बहार
आरज़ू-ए-बहार कौन करे

—

(सानेट)

जुदाई

जुदाई, आह ये इक लफ़्ज़ कितना यास आगीं है
तसव्वुर इस का उम्मीदों पे पानी फेर देता है
हज़ारों कोस इसी से मँज़िल-ए-आराम-ओ-तसकीं है
जो इस से हो गया वाकिफ़ वो फिर कब चैन लेता है
जुदाई बाग़ की रँगनियों को छीन लेती है
शराब-ओ-रक़्स से महरूम कर देती है इन्साँ को
जहाँआराईयों, ख़ुदबीनियों को छीन लेती है
छुपा देती है मायूसी की तारीकी में अरमाँ को
ये सब कुछ है, मगर मजबूर है मेरा दिल-ए-महज़ूँ
मुहब्बत परवरिश पाती रही है इस के दामन में
जमाल-ए-दोस्त से महजूर है मेरा दिल-ए-महज़ूँ
वो दुश्मन दोस्त तड़पाया था जिसने मुझ को सावन में
उन्हीं हाथों में दे दी है अनान-ए-आरज़ू मैंने
भरोसे पर ख़ुदा के छोड़ दी है जुस्तजू मैंने

—

मना ही लिया

मेरी जीवन की बगिया है फूली हुई
याद फिर आ गई बात भूली हुई
मन के सागर में तूफ़ाँ उमँगों का है
खेल सारा अनोखा ये रँगों का है
वो तो सोते थे मैंने जगा ही लिया
अपने पीतम को मैंने मना ही लिया

मैं तो ख़ुशियों के दीपक जलाने चली

प्रीत के गीत सब को सुनाने चली

मेरे आँगन में आज उजाला है फिर

मेरी आशा ने मुझ को पुकारा है फिर

अपनी बिगड़ी हुई को बना ही लिया

अपने पीतम को मैंने मना ही लिया

साज़ बजता है बून्दों का गाती हूँ मैं

अपने पीतम को झूला झूलाती हूँ मैं

मेरी आँखों को फिर रोशनी मिल गई

आप ही आप मन की कली खिल गई

अपना खोया हुआ चैन पा ही लिया

अपने पीतम को मैंने मना ही लिया

—

उलझन

माया जाल में फँस कर दुनिया भूली प्रेम कहानी
उल्टी गँगा बहती है अब अज्ञानी है ज्ञानी
किस से कहूँ मैं मन का दुखड़ा कौन सुने ये बातें
कौन सुने ये बातें सजनी, कौन सुने ये बातें

सुँदर सपने देख रहे हैं सूरज चाँद सितारे
मस्त हैं अपनी अपनी धुन में धरती के मतवारे
अपने अपने दिन हैं सब के, अपनी अपनी रातैं
दिन हैं जैसे रातें सजनी, कौन सुने ये बातें

छेड़ूँ मैं क्यूँकर अपने मन के वो तार जो टूटे
जिन को बनाया जीवन साथी वो भी मुझ से छूटे
हारी मैंने प्रेम की बाज़ी, खाई मैंने मातें
मेरे भाग में मातें सजनी, कौन सुने ये बातें

कौन सुने और किस को सुनाऊँ मैं जो कहना चाहूँ
चुपके चुपके ही सारे दुख दर्द ये सहना चाहूँ
रोते रोते आँखें आईं कैसी हैं बरसातें
सावन की बरसातें सजनी, कौन सुने ये बातें

कोयल कूके और पपीहा पी पी शोर मचाए
भँवरा गूँजे और पतँगा चुपके से मर जाए
मर कर जीना, जी कर मरना, सच्चे प्रेम की बातें
सच्ची मन की बातें सजनी, कौन सुने ये बातें

—

हुस्न -ए-गुमराह

मुझ को मालूम है तू हुस्न में लासानी है
सारी दुनिया तेरी सौदाई है दीवानी है
तेरी आँखों में है कैफ़िय्यत-ए-जाम-ए-मयनाब
सौ बहारों का है आईना तेरा हुस्न-ए-शबाब
रुख़-ए-रँगीं से तेरे फूल भी शरमाते हैं
सामने आते हुए डरते हैं कतराते हैं
काली ज़ुल्फ़ें तेरी लहराती हैं जब शानों पर
बिजलियाँ कौ।दती हैं इश्क के ऐवानों पर
मुस्कराती है तो गोहर से लूटा देती है
मीठी आवाज़ से फ़ितरत को जगा देती है
नूर पाती है ज़माने की निगाहें तुझ से
रोशन उम्मीद-ओ-तमन्ना की हैं राहें तुझ से
नौजवानी से भी तेरी मुझे इन्कार नहीं
मैं मगर तेरी मुहब्बत में गिरफ़्तार नहीं

कुछ भी हो मुझ को नहीं हुस्न के ये तौर पसँद
मेरी तख़ैय्युल को है रँग कोई और पसँद
देखना मुझ को कनखि़यों से तेरा ठीक नहीं
और फिर क्या है जो ये हुस्न की तज़्हीक नहीं
हर सहेली से मेरा जि़क्र किया करती है
मुझे पैग़ाम मुहब्बत के दिया करती है
उँगलियों से मेरी जानिब ये इशारे तेरे
ख़ूब मालूम हैं धोके मुझे सारे तेरे
तुझको दरअस्ल मुहब्बत से नहीं कोई लगाव
तेरी दानिस्त में सब कुछ हैं सिँघार और बनाव
तू मूझे किस लिए बदनाम किया करती है
और रुसवा सहर-ओ-शाम किया करती है
मेरी ग़ैरत जो कभी जोश पर आ जाएगी
हुस्न-ए-गुमराह को रस्ते पे लगा लाएगी

—

उम्मीद

तू बनाने मुझे आई है, चली जा, जा भी
तेरी बातों में न आऊँगा, न आऊँगा कभी
तेरी बातों ही में आकर तो हुआ हूँ बरबाद
छोड़ पीछा मेरा, कमबख़्त, कमीनी, बदख़ू
ज़िन्दगी मेरी अजीरन हुई तेरे कारण
तू मेरे पीछे चली आती है -दिन हो कि हो रात

बाद-ओ-बाराँ में भी पाता हूँ तुझे साथ अपने
और जब तू है मेरे साथ तो फिर फ़िलवाक़े
मेरी मँज़िल हुई जाती है पहुँच से बाहर
तेरे नग़मों की मधुर तानों में खो जाता हूँ
शोरिश -ए-ज़ीस्त से बेफ़िक्र-सा हो जाता हूँ

तुझ को मनहूस अदा हाय तबस्सुम की क़सम
बिजलियाँ ख़िमरन-ए-दिल पर न मेरे और गिरा
मेरे अश्कों को न दावत दे उमड़ आने की

तेरे चेहरे से उतर जाए जो ग़ाज़े की ये तह
देखना तुझ को गवारा न करे आँख कभी
तेरे रँगीन-ओ-हसीं सपने हैं मकर और फ़रेब
ज़िन्दगी तल्ख़ हक़ीक़त है तो फिर तल्ख़ नही

—

होशमन्दी यही तो है कि बशर
मस्ती-ए-जाविदाँ से टकराए

—

दिल-ए-नाफ़हम का कहना न मानो
ज़मीर अपना न दे जब तक गवाही

—

मक़तूल लम्हे

ऐ मेरे मक़तूल लम्हो, अब न याद आओ मुझे
याद आ आ कर न सुबह-ओ-शाम तड़पाओ मुझे
तुम तो थे हमदर्द मेरे, तुम तो थे मूनिस मेरे
घोलते हो किस लिए अब जाम में तुम बिस मेरे
साथ रह कर हर क़दम पर यूँ बिछड़ जाना न था
और जाना ही अगर मक़सूद था, आना न था
तुम ने तो मुझ को लगाया रास्ती की राह पर
कर दिया मैंने निछावर तुम को अपनी चाह पर
मेरी आँखों पर पड़ा था परदा, क्या आता नज़र
कर लिया हाथों से अपने ख़ून-ए-दिल, ख़ून-ए-जिगर
क्या समझ सकता इशारों को तुम्हारे दिल मेरा
आगे बढ़ कर किस तरह लेती क़दम मँज़िल मेरा
बँद आँखें करके मैं सोता रहा, खोया रहा

बीज धरती में जहाँ बोया वहीं बोया रहा

मेरे हाथों में दिया तुम ने क़लम भी, तीर भी

देखती ही रह गई तक़दीर भी, तदबीर भी

तुम ने समझा था मेरे दिल को गुल-ए-नौज़ायदा

तुम ने चाहा था कि मैं तुम से उठाऊँ फ़ायदा

मेरी ग़फ़लत ने मगर मअज़ूर ही रक्खा मुझे

ख़ुदनुमाई, ख़ुदपरस्ती ने दिया धोका मुझे

हाय मेरी कमनसीबी, पा के तुम को खो दिया

मैं वो क़ातिल हूँ, जो तुम को क़त्ल कर के रो दिया

—

मैं सँवारूँ गेसू-ए-हस्ती मगर ऐ दिल बता

तेरी वहशत ने कहाँ रक्खा किसी क़ाबिल मुझे

—

कर रहा है चाँद तारों से कलाम

हो गया है ये तुझे दीवाने क्या

—

धोका (सानेट)

तुम ने क्यूँ देखा मेरी जानिब निगाह-ए-नाज़ से
मुझको ये धोका हुआ बेदार क़िस्मत हो गई
वो निगाह-ए-नाज़, जिससे सैकड़ों परदे उठे
दाग़-ए-नाकामी मेरे दामान-ए-दिल से धो गई
हो गया ख़ून-ए-तमन्ना मेरी रग रग में रवाँ
फ़ितने जो सोए हुए थे लेकर अँगड़ाई उठे
छा गया दुनिया पर अफ़सून-ए-शबाब-ए-जाविदाँ
बेनियाज़-ए-होश होकर मस्त-ओ-सौदाई उठे
तुम ने देखा है अगर मुझको निगाह-ए-लुत्फ़ से
नुक्ताचीं सारा ज़माना है तो मैं ग़म क्या करूँ
जलवागर हरदम रहो मेरी नज़र के सामने
देखने की ताब है जब तक तुम्हें देखा करूँ
दिल लिया है रूह भी ले लो ख़ुदा के वास्ते
मैं तुम्हारे वास्ते हूँ, तुम हो मेरे वास्ते

—

हिज्र

थम ज़रा ऐ आस्माँ वक़्त-ए-विदा-ए-यार है
साँस लेना भी फ़िज़ा-ए-यास में दुश्वार है
ख़ौफ़ था जिस का वो हँगाम-ए-जुदाई आ गया
ख़ैर हो यारब कि पैग़ाम-ए-जुदाई आ गया
आ गया वो मोड़, होतीं हैं जहाँ राहेँ अलग
दिल से दिल, नज़रों से नज़रें दूर और चाहें अलग
वो उठीं काली घटाऐं, हिज्र का आग़ाज़ है
हौल तारी रूह पर, ख़ामोश दिल का साज़ है
इक उदासी, एक बेकैफ़ी-सी है छाई हुई
हर कली सहन-ए-गुलिस्ताँ में है मुरझाई हुई
गरदिश-ए-शाम ओ-सहर में कोई दिलचस्पी नहीं
मयकदे में साग़र-ओ-मीना तो हैं, मस्ती नहीं
क्या ग़ज़ब है, जान-ए-महफ़िल उठके महफ़िल से चला
काफ़िला सब्र-ओ-सुकूँ का दिल की मँज़िल से चला

हिज्र तकमील-ए-मुहब्बत, हिज्र तज़ईन-ए-जमाल
हिज्र पर है मुनहसिर रँगीनी-ए-हुस्न-ए-ख़्याल
हिज्र, रँग-ओ-निकहत-ए-गुल, हिज्र बुलबुल की नवा
हिज्र, इक शान-ए-तग़ाफ़ुल, हिज्र सामान-ए-वफ़ा
हिज्र, शब की तीरगी, नूर-ए-सहर, राज़-ए-हयात
हिज्र के हाथों में दामान-ए-निगार-ए-कायनात
हिज्र से धड़कन दिलों की है ख़्यालों की उड़ान
हिज्र है अँधों की आँखें, हिज्र गूँगों की ज़ुबान
हिज्र, उम्मीदों का मसकन, आरज़ूओं का महल
हिज्र तूफ़ाँखेज़ मौजों का तबस्सुमज़ा कँवल
हिज्र ज़द में आँधियों की जगमगाता-सा चिराग़
हिज्र ही तो है क़मर के सीना-ए-रोशन का दाग़
नश्शा-ए-जाम-ए-शराब-ए-नौजवानी हिज्र है
वस्ल फ़ानी है, यक़ीनन जाविदानी हिज्र है

ऐ दिल-ए बेताब, ये शोर-ओ-फ़ुगाँ किस वास्ते
आँसुओं का सैल आँखों से रवाँ किस वास्ते
सब्र उनवान-ए-तमन्ना है फ़साने के लिए
हिज्र है बस ज़ब्त तेरा आज़माने के लिए
बढ़ता दरिया कोई हरगिज़ रोक सकता ही नहीं
मुड़ के पीछे की तरफ़ तूफ़ान तकता ही नहीं
सामने वो रोशनी-सी आ रही है जो नज़र
है मदार-ए-आलम-ए-फ़रदा उसी पर, बेख़बर!
दूर जा कर दूर जा सकता नहीं जो दिल में है
इक तड़प मौजों के पहलू में तो इक साहिल में है
वक़्त-ए-रुख़सत,मुतरिबा,इक गीत ऐसा छेड़ दे
जिस का ज़ेर-ओ-बम शिकस्ता साज़ दिल का छेड़ दे
फिर लबों पे आए वापस वो हँसी रूठी हुई
ख़ुद-ब-ख़ुद मन जाए अपनी ज़िन्दगी रूठी हुई

—

आज़ाद ज़िन्दगी

ज़ुल्मतकदे में ग़म के इशरत की रोशनी है
उम्मीद गा रही है
तामीर-ए-आलम-ए-नौ तजवीज़ हो चुकी है
आज़ाद ज़िन्दगी है
सोई हुई उमँगें दिल में मचल रही हैं
करवट बदल रही हैं
महफ़िल में एक रँगीं हलचल मची हुई है
आज़ाद ज़िन्दगी है
रक़्साँ है निकहतों की परियाँ हसीं फ़िज़ा में
तदबीर-ए-इरतिक़ा में
फूलों की पँखड़ियों पर शबनम की आरसी है
आज़ाद ज़िन्दगी है
क्या रँज उस समय का जो ख़त्म हो चुका है
फ़रदा की फ़िक्र क्या है
अब हाल ही है सब कुछ, अब क़द्र हाल की है
आज़ाद ज़िन्दगी है
तारों से गुफ़्तगू है, फूलों से हमसुख़न है
और शम्अ-ए-अन्जुमन है
तेरा ‘‘ज़िया’’ अनोखा अन्दाज़-ए-शाइरी है
आज़ाद ज़िन्दगी है

—

तराना-ए-शौक़ (सानेट)

बुलन्द-ओ-पस्त-ए-आलम पर मेरे अहकाम जारी हैं
घटाएँ आस्माँ पर मयकदा बर दोश तारी हैं
हुजूम-ए-रँग-ओ-बू से दश्त-ओ-सहरा ग़ैरत-ए-गुलशन
चिराग़-ए-कुश्ता-ए-अय्याम, रश्क़-ए-शोला-ए-ऐमन
चमन पर ज़ेर-ए-लब नग़में जवाँ गूँचों के सारी हैं
अनादिल गोशा-ए-ज़िन्दाँ में महव-ए-आह-ओ-ज़ारी हैं
निशात अन्गेज़-ओ-दिल अफ़रोज़ है कोहसार का दामन
गुहर हाए तमन्ना का बना है हर जिगर मअदन
समझ सकती नहीं मुझ को अबद तक अक़्ल-ए-इन्सानी
भटकते हैं मेरे कूचे में ''ख़ाकानी''-ओ-''क़ाआनी''
कि असबाब-ओ-नताइज से मुब्बर्रा है मेरी हस्ती
है तेरा राज़ ही राज़-ए-तिलिस्म-ए-हस्ती-ए-फ़ानी
शरार-ए-बेख़ुदी से रोशनी पाती है ये बस्ती
यहाँ के रहनेवालों को नहीं फ़िक्र-ओ-ग़म-ए-हस्ती

—

राही

दिल की आवाज़ न सुन
पैच दर पैच तेरी राहें है
ये उम्मीदें ही तेरी आहेँ हैं
फ़िक्र के जाल न बुन
पाँव आगे ही बढ़ा
ठोकरों में है तेरी जाम–ओ–सुबू
मुड़ के पीछे की तरफ़ देख न तू
तू कहाँ से था चला
तेरी मँज़िल है कहाँ
ज़ुल्मतें तैरती आती हैं मुदाम
उलझनें धड़कनें हैं तेज़ ख़िराम
कर अज़ाइम को जवाँ
ये निगाहों में तेरी
अक्स धुँदला–सा नई दुनिया का
कोई मज़लूम न ज़ालिम होगा
हर तरफ़ होगी ख़ुशी
देख सकता है तो देख
पेट सिमटे हुए आँखें बे नूर
क़ुव्वतें शिद्दत–ए–ग़म से मजबूर
ये नहीं भाग के लेख

तेज़ कर अपने क़दम

मोड़ना है रुख़-ए-हस्ती तुझको खींचती रह गई पस्ती तुझको

खुल गया ग़म का भरम

नग़मा-ए-साज़ न सुन

चींख़ती रूहें उड़ी जाती हैं ये कभी चैन नहीं पाती हैं

दिल की आवाज़ न सुन

—

हमारा आलम-ए-हस्ती कुछ और ही होता

न कहते अपनी अगर आप का कहा करते

—

शायद है यही मँज़िल-ए-तकमील-ए-मुहब्बत

अब उनकी जफ़ा भी तो बा अन्दाज़-ए-वफ़ा है

कुछ दिन के लिए कशमकश-ए-दहर है वरना

मरना है जब इक रोज़ तो फिर ज़ीस्त में क्या है

—

महरूम से

सुकूँ नहीं है मुक़द्दर में अहल-ए-आलम को
न कर शिकायत-ए-सामान-ए-इज़्तिराब न कर
न छोड़ दामन-ए-उम्मीद, नाउम्मीदी में
दिल-ए-ख़राब को यूँ और भी ख़राब न कर
अज़ल से रिन्दी-ओ-मस्ती है मशरब-ए-हस्ती
शराब-ओ-साक़ी-ओ-साग़र से इजतनाब न कर
ग़म-ए-फ़िराक़ ही दरअस्ल है निशात-ओ-विसाल
ये राज़-ए-इश्क़ ज़माने पे बेनक़ाब न कर
शकेब-ओ-सब्र से ऊँची नहीं कोई मँज़िल
फ़रेब-ए-दहर में आकर इसे ख़राब न कर
नशेब भी है ज़माने में और फ़राज़ भी है
नियाज़मन्द भी इन्साँ है बेनियाज़ भी है

—

[+] बिस्मिल-ए-ग़ज़ल

कल शाम नागहाँ सर-ए-राह मिल गई मुझे
फ़ितने क़दम क़दम पे जगाती हुई ग़ज़ल
पूछा कि आज पा-ए-सफ़र का है रुख़ किधर
बोली नज़र झुका के लजाती हुई ग़ज़ल
कहती हूँ दिल की बात जो फैली है शहर में
परदा ही उठ गया है तो तुझ से छुपाऊँ क्या
महबूबा जिस की हूँ, मेरा महबूब है वही
सौदा है किस दयार का सर में, बताऊँ क्या
गरमी है बज़्म-ए-शेअर में जिस की नवाओं से
मेरे ख़दन्ग-ए-नाज़ का बिस्मिल वही तो है
सरगरदाँ कू-ब-कू हूँ मैं जिस की तलाश में
दिलबर मेरा वही, मेरी मँजिल वही तो है

[+] बिस्मिल सईदी

मेरा हमदम मेरा दोस्त-गोपाल मित्तल

रात, यानी दिन की ज़िद

तह बा तह तारीकियों का बार कँधों पर उठाए

बेहिसी के गीत गाती, नाचती,

बहर-ओ-बर, कोन-ओ-मकाँ पर छा गई

हर गली, कूचे में हैबतनाक उदासी का समाँ

ख़ेमाज़न ख़ामोशियों के कारवाँ,

आँधियों की ज़द में आलम आ गया

हिल गई धरती, फ़लक थरर‍ा गया

खिलने पाया था न गुल, मुरझा गया

दफ़अतन दिल के निहाँख़ाने में गूँजी एक दूर उफ़तादा चींख़

इक धमाका, जैसे एटम बम ख़लाओं में फटे, फटता ही जाए

मुरदा अरमानों को इज़्न-ए-ज़िन्दगी-ए-नौ मिला

यास पर उम्मीद का जादू चला

रोशनी की जुस्तजू ताज़ा हुई

चलते चलते मिल गया इक हम सफ़र
मशइल–ए–इरफ़ाँ लिए
महरिम – ए –असरार– ए– हुस्न– ए – कायनात
रहगुज़र के पैच–ओ–ख़म से आशना
मँज़िल आगाह–ए–हयात
ख़ौफ़, डर, अँदेशे की आराइशों से पाक–ओ–साफ़
हक़ परस्त–ओ–रास्तगो
क़दरदान–ए–इल्म, अदब का पासबाँ
दोस्तों का दोस्त लेकिन दुश्मनों के हक़ में बरक़–ए–बेअमाँ
नुक्तादाँ, साहिब नज़र
हामी – ए – आज़ादी – ए– फ़िक्र–ओ– ख़याल
आदमी और आदमियत का परस्तार–ए–क़दीम
इक अजब अँदाज़ से दी उसने सहरा में अज़ाँ
वो अजाँ दरअस्ल इक तहरीक थी
नूर के फ़व्वारे फूटे हर तरफ़
तालिबान–ए–रोशनी को रोशनी मिल ही गई

—

फ़नकार

गुल-ओ-लाला-ओ-नसतरन बेचता हूँ
मैं काँटों की रँगीं चुभन बेचता हूँ
ज़मी-ओ-ज़माँ-ओ-ज़मन बेचता हूँ
मैं अपना ज़मीर और फ़न बेचता हूँ
मैं अपनी मता-ए-सुख़न बेचता हूँ
ख़रीदो मुझे जान-ओ-तन बेचता हूँ

रिवायात-ए-माज़ी हिकायात-ए-फ़रदा
तबस्सुम, तरन्नुम, शिकायत, मुदावा
ख़मोशी, तकल्लुम, हँसी, शोर, ग़ोग़ा
उजाला, अँधेरा, जवानी, बुढ़ापा
निज़ाम-ए-हयात-ए-कुहन बेचता हूँ
ख़रीदो मुझे जान-ओ-तन बेचता हूँ

सहरखे़ज़ कलियों की अस्मत ख़रीदो
रगों में मचलती हरारत ख़रीदो
लबों की गुलाबी की रँगत ख़रीदो
लताफ़त, मुसर्रत, मुहब्बत ख़रीदो
नज़ाकत, अदा, बाँकपन बेचता हूँ
ख़रीदो मुझे जान-ओ-तन बेचता हूँ

बहारों की दिलचस्प रानाईयाँ लो
रबाब-ए-जुनूँ की तरबज़ाईयाँ लो
उरूस-ए-तख़ैय्युल की अँगड़ाईयाँ लो
लपकते शरारों की ऊँचाईयाँ लो
मैं अपना ख़ुदा, अहरमन बेचता हूँ
ख़रीदो मुझे जान-ओ-तन बेचता हूँ

मैं अफ़साने लिखता हूँ कहता हूँ ग़ज़लें
ज़माने में मक़बूल हैं मेरी नज़्में
अदब को है मुझ से बहुत कुछ उम्मीदें
नहीं पेट की भूक ही मेरे बस में
ब उम्मीद यक नान, फ़न बेचता हूँ
ख़रीदो मुझे जान-ओ-तन बेचता हूँ

मेरी आँख की तुम नमी को न देखो
मेरे आलम-ए-बरहमी को न देखो
मेरी ज़िन्दगी की कमी को न देखो
मेरे पैकर-ए-मातमी को न देखो
मैं इन्सानियत का कफ़न बेचता हूँ
ख़रीदो मुझे जान-ओ-तन बेचता हूँ

—

पोस्ट मारटम

(फ़ुरक़त काकोरवी की मौत पर)

रेल के थर्ड क्लास डिब्बे में

कल बरामद हुई थी जो इक लाश

सुकड़ी, सिमटी-सी, ठुठरी, मुरझाई

आज अख़बार में छपी है ये नियूज़

थी वो एक बेनवा-ओ-बदक़िस्मत

जाने पहचाने उर्दू शाइर की

मर के शायद किसी की फ़ुरक़त में

जन्नत-ए-वस्ल मिल गई उस को

—

(मीरा जी की मौत पर)

चिराग़ बुझ गया

चिराग़ बुझ गया

अदब की बज़्म तीरह हो गई

फ़िज़ा की सोगवारियों के भूत नाचने लगे

उम्मीद यास बन गई

निराश दिल तड़प उठे

निगाह आँसुओं की बेक़रारियों में खो गई

तमाम कायनात ज़ुल्मतों की नज़्र हो गई

सिबात-ए-ज़िन्दगी फ़रेब था, फ़रेब ही रहा

अज़ल की सख़्त-ओ-सर्द उँगलियों ने खोल दी गिरह

तख़ैय्युलों पे ओस पड़ गई, जुमूद छा गया

ज़ुबान गुँग हो गई

चिराग़ बुझ गया अदब की बज़्म तीरह हो गई

चिराग़ बुझ गया तो क्या ?

नहीं है रोशनी तो क्या ?

जो आज है वो कल न था

जो होगा कल, वो अब नहीं

नये तराने छेड़ कर दिलों को गुदगुदाऐंगे

नई हयात लाऐंगे

अजल पे मुस्कराऐंगे

बुझे हुए चिराग़ का लतीफ़ नर्म-सा धुँआ

फ़लक की बेपनाह वुसअतों में झूम जाऐंगे

कि उस की रोशनी दवाम-ओ-पायदार हो गई

—

इन्सान बन के हिरस का दामन हुआ दराज़

तकलीफ़ दी तुझे करम-ए-बेशुमार की

—

शिफ़ा ग्वालियरी की मौत

नाले की मौत, आह की मौत, और बुका की मौत
सूरज की मौत, चाँद की, सुबह-ओ-मसा की मौत
सच, झूठ, जीत, हार, रवा, नारवा की मौत
कैफ़-ओ-जमाल-ओ-हसरत-ओ-सब्र-ओ-रिज़ा की मौत
मस्ती-ओ-जाम-ओ-बादा-ओ-अब्र-ओ-हवा की मौत
शबनम की मौत, शोला-ओ-बरक़ इन्तेहा की मौत
दौर-ए-बहार-ओ-अहद-ए-ख़ुलूस-ओ-वफ़ा की मौत
रँगीनी-ओ-लताफ़त-ए-फ़िक्र-ए-रसा की मौत
तख़ैय्युल की नज़ाकत-ओ-हुस्न-ओ-अदा की मौत
राह-ए-वफ़ा में हमसफ़र-ए-बे रिया की मौत
इक दोस्त, इक रफ़ीक़ की, इक आशना की मौत
जैसे चमन में बुलबुल-ए-नग़मासरा की मौत
इक सानहा है शहर-ए-अदब में शिफ़ा की मौत

—

वालिद की मौत

बाप का साया भी मेरे सर से आख़िर उठ गया
रोना आ जाए न क्यूँकर अपनी यतीमी पर मुझे
पे-ब-पे सदमात-ए-ग़म हाय ज़माना ने ''ज़िया''
कर दिया है रफ़्ता रफ़्ता दर्द का ख़ूगर मुझे
मैं चलूँगा किस की उँगली थामकर अब राह में
कौन जिम्मेदार होगा अब ख़ताओं का मेरी
कौन ग़मख़्वारी-ओ-दिलदारी करेगा बेख़तर
कौन उठाएगा ख़ुशी से नाज़ अदाओं का मेरी
मेरी पुरअसरार ख़ामोशी से अब उलझेगा कौन
कौन चौ।केगा मेरी अवाज़ सुनकर सुबह-ओ-शाम
बात जो है मेरे दिल में अनकही, समझेगा कौन
कौन होगा कामरानी पर मेरी अब शादकाम
हो गया रुख़सत, मुझे किसके हवाले छोड़कर
मैं भी उड़ जाऊँगा इक दिन झूठे बन्धन तोड़कर

—

लामुतनाही

अभी इक शम्अ के बुझने का अलम था दिल में

अभी रोती हुई आँखों पे अँधेरा था मुहीत

अभी शब बैठी थी गेसू-ए-परीशाँ लेकर

अभी सरबस्ता थे असरार-ए-नुमूद-ए-ख़ुरशीद

और इक शम्अ बुझी ऐसी चली बाद-ए-समूम

और टूटा सर-ए-हस्ती पे मसाइब का पहाड़

और उजालों का हुआ ख़ून, बढी ज़ुल्मत-ए-ग़म

और अनदेखे हसीं ख़्वाबों का भाँडा फूटा

अम्न-ए-ईसार तलब ले के रहा नज़्र-ए-वफ़ा

एक परवाना हुआ जलवागह-ए-दिल पे निसार

एक दीवाने ने दी जान सदाक़त के लिए

आतिश-ए-गुल से हुआ राख़सनाख़्वान-ए-बहार

शम्अ जलती है तो इक नूर को देती है जनम

और बुझती है तो वो नूर नहीं मिट जाता

शम्अ बुझकर ही तो कर जाती है शमएं रोशन

सिलसिला ख़त्म ज़ियाओं का कहीं होता है

—

माया

धर्म, ज्ञान को खो कर मूरख पाप मोह को पाया
क्यूँ माया के फेर में आ कर अपना रूप गँवाया
अपना रूप गँवाया बाबा झूटी जग की माया
दो दिन के जीवन पर क्यूँ इतराता है अभिमानी
आज है जो भी कल वो न होगा, सोच ज़रा अज्ञानी
चलती फिरती छाया बाबा झूटी जग की माया
देख कर सुँदर रूप को इस के, जो इस पर मरता है
ये उस को ही डस लेती है, वो आहें भरता है
होश न तुझ को आया बाबा झूटी जग की माया
फूल को लेने हाथ बढ़ाए तो काँटा चुभ जाए
जो जैसी करनी करता है, वैसा ही फल पाए
लाख तुझे समझाया बाबा झूटी जग की माया
जाग उठे सब सोने वाले, तू भी जाग अब प्यारे
तोड़ दे अँधियारों से रिश्ता, क्यूँ फैलें अँधियारे
झूटी जग की माया बाबा झूटी जग की माया

—

माँझी

ये तूफ़ाँ, ये बाद-ओ-बाराँ
ये बिफरी मौजों के पेकाँ
किश्ती का दिल छलनी छलनी
कब ये काली रात है ढ़लनी
कब निकलेगा सुबह का तारा
माँझी, कितनी दूर किनारा

पानी की दीवार खड़ी है
सर पर इक तलवार खड़ी है
गरदूँ पे चिँघाड़ते बादल
गिरदाबों की महलक हलचल
क़तरा क़तरा है अँगारा
माँझी, कितनी दूर किनारा

ख़ालिक-ए-तूफ़ाँ है ये समुन्दर
दुश्मन-ए-इन्साँ है ये समुन्दर
किश्ती मौज से टकराती है
हस्ती मौत से डर जाती है
कब तक देगी आस सहारा
माँझी, कितनी दूर किनारा

उठती, गिरती, बढ़ती मौजें
धरती के सर चढ़ती मौजें
अम्न-ओ-सुकूँ की हाय गिरानी
पानी, पानी, हर सू पानी
इस को डुबोया, उस को उभारा
माँझी, कितनी दूर किनारा

अश्कों से क्या काम चलेगा डूबेगा जो हाथ मलेगा
दरियाओं से साजिश करके सागर के साग़र को भर के
दूर से किसने मुझे पुकारा

माँझी, कितनी दूर किनारा

हर ग़म का बचना मुश्किल है धारों से बचना मुश्किल है
ग़रक़ाबी किस को रास आई किस ने मर कर दुनिया पाई
दीवाना है आलम सारा

माँझी, कितनी दूर किनारा

चाँद ने आकर आफ़त ढ़ाई तुग़यानी ने धुम मचाई
समय क़यामत का आ पहुँचा क़तरे क़तरे का दिल ढ़लका
कुछ तो मुँह से बोल ख़ुदारा

माँझी, कितनी दूर किनारा

—

जाग ऐ इन्सान

रात ख़त्म हो गई रोशनी में खो गई

साहिल-ए-निशात तक ज़िन्दगी की रो गई

कायनात जाग उठी

कुल हयात जाग उठी

मिट गई तकान जाग जाग ऐ इन्सान जाग

नज़्म-ए-रँग-ओ-बू बदल बादा-ओ-सुबू बदल

आफ़ताब आ गया

इन्क़लाब आ गया

अब है इम्तिहान जाग जाग ऐ इन्सान जाग

हर दुआ है बारयाब हर उमँग कामयाब

ताज़ा गीत छेड़ दे छिड गया नया रबाब

जोर-ए-आस्माँ नहीं

यास का निशाँ नहीं

तू तो है महान जाग जाग ऐ इन्सान जाग

इन्कसार भी ग़लत इज़्तरार भी ग़लत
शाम और सुबह का इन्तिज़ार भी ग़लत
हिम्मत और अ़ज़्म पर
कारगाह की नज़र
क़दर-ए-ज़ीस्त जान,जाग जाग ऐ इन्सान जाग
ज़र्रा आफ़्ताब है क़तरा मौज-ए-आब है
राज है बहार का ख़ार भी गुलाब है
ये हँसी , ये दिलकशी
देन तेरे होश की
तू बनाम-ए-नान जाग जाग ऐ इन्सान जाग

—

अँधेरों से बाहर निकल कर तो देखो
तमन्ना ने क्या क्या उजाले सहारे
ये किश्ती शब-ओ-रोज़ की बहती जाए
हमारे सहारे, तुम्हारे सहारे

—

इन्सान-ए-बेदार

जा रही है तीरगी   छा रही है रोशनी
मुस्कराती है कली   है फ़िज़ा निखरी हुई
ताईरान -ए-ख़ुशनवा
नग़मा हाय दिलरुबा
मस्तियों का सिलसिला
गुनगुनाती है हयात   रक़्स में है कायनात
बाख़बर हुशियार है   आदमी बेदार है

रशक-ए-गरदूँ है ज़मीं   है ये दौर-ए-बहतरीं
ग़म किसी दिल में नहीं   हिम्मत-ओ-अज़्म-ओ-यकीं
रहनुमा - ओ - राहबर
ठोकरों में रहगुज़र
ख़त्म होता है सफ़र
ज़ुल्म-ओ-इस्तिबदाद का   अब ज़माना लद गया
बाख़बर हुशियार है   आदमी बेदार है

है बुलन्दी ज़ेर-ए-पा पस्तियों का ज़िक्र क्या
काम क्या है यास का दिल है हिम्मत आशना
बेनियाज़ी मिल गई
चारासाज़ी मिल गई
सरफ़राज़ी मिल गई
फ़िक्र-ए-ना-ओ नोश है यानी अपना होश है,
बाख़बर हुशियार है आदमी बेदार है

ख़ार-ओ-गुल का पासबाँ इरतिक़ा का राज़दाँ
शोर-ओ-शर का नोहाख़्वाँ हामी - ए - अम्न -ओ- अमाँ
आशना- ए- रँग-ओ-बू
वाकिफ़-ए-जाम- ओ-सुबू
सुलहख़्वाह - ओ - सुलहजू
क़ायल-ए-तदबीर भी माइल-ए-तक़दीर भी
बाख़बर हुशियार है आदमी बेदार है

सुबह-ए-नौ आ ही गई   नूर फैला ही गई
बाग़ पर छा ही गई   कैफ़ बरसा ही गई
पत्ती पत्ती इक गुलाब
क़तरा क़तरा मौज-ए-आब
ज़र्रा ज़र्रा आफ़ताब
राज़ अफ़शा हो गया   ख़्वाब सच्चा हो गया
बाख़बर हुशियार है   आदमी बेदार है

—

सूरज की किरण से बज़्म-ए-इम्काँ रोशन
परतौ से बहार के गुलिस्ताँ रोशन
बिलकुल ऐसे ही ऐ असीर-ए-दानिश
है शम्अ-ए-जुनूँ से अक़्ल-ए-इन्साँ रोशन

—

नया आदमी

तक़रीरों से आग लगाए   तहरीरों से हश्र उठाए
ख़्वाबों के परचम लहराए   मुस्तक़बिल के नग़मे गाए
उम्मीदों से दिल बहलाए   अरमानों की सेज सजाए
अज़्म-ओ-इरादे पर इतराए   मँज़िल मँज़िल ठोकर खाए
ज़र्रे में सूरज चमकाए   क़तरे में सागर छलकाए
जँग-ओ-जदल पर अश्क बहाए   अम्न-ओ-सुकूँ के गीत सुनाए
फूलों के सीने धड़काए   काँटे काँटे को महकाए
नोच के फेंके शब के साए   नूर-ए-सहर हर सू फैलाए
भेद इन्सानियत का पाए   इन्साँ को इन्सान बनाए
इक बन्जारा गाता जाए
लौट के बुद्धू घर को आए

—

जब पूछता हूँ क्या है कलाम-ए-जिगर गुदाज़
करते हैं पेश शेयर मेरा ही मिसाल में

—

यकजहती

लाखों पत्ते, एक दरख़्त		सदहा क़तरे, इक दरिया
रँग हज़ारों, इक तस्वीर		इक सूरज, अनगिनत नुजूम
अरबों इन्साँ इक दुनिया

फूल खिलें तो बाग़ सजे		मौजें मिल के बनी तूफ़ाँ
साए इकट्ठे हों तो रात		किरनें जमा हुईं तो दिन
तानों का सँगम सँगीत

यकजहती, कुव्वत की असास		यकजहती, उलफ़त की देन
यकजहती, पैग़ाम-ए-अम्न		यकजहती, इन्सानियत
यकजहती, तदबीर-ए-हयात

—

ये बिलकुल ठीक है हम हैं हमारे लाला-ओ-गुल हैं
मगर कुछ भी नहीं मुमकिन ख़िलाफ़-ए-आसमाँ हम से

—

मुहब्बत

किया मजबूर किस ने हज़रत-ए-''मूसा'' को ''सीना'' पर
किया ''अर्जुन'' को किस ने जँग से बेगाना-ओ-मुज़तर
सिखाया किस ने ''मजनूँ '' को ख़राब-ए-दरबदर होना
बताया ''कोहकन'' को किस ने यूँ आशुफ़्ता सर होना
किया ''प्रहलाद'' को मजबूर किस ने जाँनिसारी पर
''हक़ीक़त'' को दिया दरस-ए-फ़ना किसने अयाँ होकर
फ़ना ''मनसूर'' जिस पर हो गया आवाज़-ए-उलफ़त थी
चढ़ाया दार पर जिसने ''मसीहा'' को मुहब्बत थी

—

बड़ी पाशिकन इश्क़ की रहगुज़र थी
कोई साथ चलता भी कब तक हमारे ?

—

दो जिस्म और एक जान

रात और दिन
मुहब्बत की कभी न टूटनेवाली डोर में
ऐसे बँधे
कि फिर करोडों सदियाँ गुज़र जाने के बाद भी
आज तक
एक दूसरे के आगे पीछे
दौड़ते रहते हैं
गोया ये एक कुल के
दो अहम जुज़्व हैं

हज़ारों चाँदों
हज़ारों सूरजों
ने कोशिश की

कि रात को दिन से

और दिन को रात से

अलग कर दें, जुदा कर दें

मगर सब कोशिशें, तमाम तदबीरें बेकार गईं

और दिन और रात

बदस्तूर

हाथ में हाथ डाले

जिस्म को जिस्म से मिलाए

वक़्त की लँबी डगर पर

अनजानी मँज़िल की तरफ़

आज भी

रवाँ, दँवा हैं

—

हम एक हैं

ये है ज़माने का चलन
हर फ़र्द फ़र्द-ए-अन्जुमन
फूलों से तज़ईन-ए-चमन
मिन्नत कश-ए-अन्जुम, गगन
ज़र्रों में आँधी की फबन
क़तरों में दिल के मौजज़न
तूफ़ान हैं
हम एक हैं

मज़हब की है ये रोशनी
मिअराज है तहज़ीब की
चीनी, फ़िरँगी, भारती
जापानी, रूसी, काबूली
हिन्दू, मुसल्माँ, पारसी
ईसाई, जैनी, सिख सभी
इन्सान हैं
हम एक हैं

हक़ बात जो दिल ने कही (मीठी नहीं, कड़वी सही)
आकर ज़ुबाँ पर ही रही टूटा तिलिस्म-ए-गुमरही
रहना तो है मिलजुल के ही
दुनिया में जीने के यही
सामान हैं
हम एक हैं

बुतहाय नफ़रत तोड़ दें उलफ़त से रिश्ता जोड़ लें
इन्सानियत की राह में खाऐं हज़ारों ठोकरें
हरदम क़दम आगे बढ़ें
फिर देखिए , सब मुश्किलें
आसान हैं
हम एक हैं

—

ऐ मेरे हिन्दुस्तान

आस्माँ पर जलवागर है आफ़ताब-ए-ज़रफिशाँ
हो चुकीं रुख़सत जहाँ से रात की तारीकियाँ
ताईरान-ए-ख़ुशनवा गाते हैं अपनी दास्ताँ
हैं अगरचे नातवाँ
नातवाँ-ओ-बेज़ुबाँ
बेज़ुबाँ-ओ-बेअमाँ
ग़फ़लतों पर ग़ालिब आख़िर आ गई बेदारियाँ
आह तारी है मगर तुझ पर अभी ख़्वाब -ए-गिराँ
ऐ मेरे हिन्दुस्ताँ!
हो गई है अज़्मत-ए-असलाफ अब ख़्वाब-ओ-ख़याल
वो गुज़िशता रिफ़अतें सब हो चुकी हैं पायमाल
कारवाँ के साथ अब चलना भी है तेरा मुहाल
लड़ख़डाते हैं क़दम
बार-ए-सर है रँज-ओ-ग़म
ज़िन्दगी बेकैफ़-ओ-कम
ये ज़माना ये ज़माने की ज़माना साज़ियाँ
ये तेरी तक़दीर की लाचारियाँ, नासाज़ियाँ
ऐ मेरे हिन्दुस्ताँ!

आह रामायण का अहद-ए-दिल फ़रेब-ओ-दिल नशीं !
आस्तान-ए-इश्क़ पर जब ख़म थी इन्साँ की जबीं
बादा-ए-नूर-ए-फ़लक था और जाम-ए-मरमरीं
सुबह, पैगाम-ए-निशात
शाम, इलहाम-ए-निशात
जज़्बा-ए-आम-ए-निशात
आस्मानी ताक़ते करती थीं तनज़ीम-ए-जहाँ
काश तू दूहरा सके फिर अपनी रँगीं दास्ताँ
ऐ मेरे हिन्दुस्ताँ !
वो महाभारत की जँगी दास्तानें क्या हुईं
क्या हुए वो तीर वो बाँकी कमानें क्या हुईं
सरफ़राज़ी और वफ़ादारी की आईनें क्या हुईं
वो फ़साने याद हैं ?
वो तराने याद हैं ?
वो ज़माने याद हैं ?
वो ज़माने जब कि था तू भी जवाँ, दिल भी जवाँ
इशरत-ए-ताज़ा से रहता था हमेशा शादमाँ

ऐ मेरे हिन्दुस्ताँ!
वक़्त है अब भी सँभल ऐ कारवान-ए-मुन्तशिर
हाल, माज़ी से भी नाज़ुक है, ज़रा तू ग़ौर कर
उठ क़दामत को मिटा
वज़अ कर आईं नया
क़ौम-ए-ख़फ़्ता को जगा
जगमगा दे नूर-ए-शम्अ-ए-इश्क़ से कोन-ओ-मकाँ
फिर वही जज़्बात हों हर क़ल्ब-ए-मुरदा में जवाँ
ऐ मेरे हिन्दुस्ताँ!
इस तरह कब तक रहेगा तू असीर-ए-यास-ओ-गम
ताबके मिलकर न बैठेंगी तेरी क़ौमें बहम
ता बा कि शेख़-ओ-बरहमन, ता कुजा दैर-ओ-हरम
ये अदावत ता कुजा
ये जहालत ता कुजा
बुग़ज-ओ-नफ़रत ता कुजा
इस तरह तो और भी बढ़ जाऐंगी नाकामियाँ
इत्तेफ़ाक़-ए-बाहमी से है निशात-ए-जाविदाँ

ऐ मेरे हिन्दुस्ताँ!
खोल कर आँखें ज़माने की ज़रा रफ़तार देख
हो रही हैं साज़िशें क्या क्या पस-ए-दीवार देख
देख रँग-ए-कारज़ार
देख ये ख़ूनीं बहार
देख ये जीत और हार
या इसी लम्हे से कर आग़ाज-ए-तक़लीद-ए-जहाँ
या जहाँवालों को तू अपना बना ले हमज़ुबाँ
ऐ मेरे हिन्दुस्ताँ!

—

मयख़ाना-ए-हस्ती का सरूर आज़ादी
इन्सान की अज़मत का शऊर आज़ादी
मालूम हुआ ‘‘ज़िया’’ ये होकर आज़ाद
है ख़ू-ए-ग़ुलामी का ग़ुरूर आज़ादी

—

दीपावली

दीप जले, दीवाली आई
बाग़ों में हरियाली छाई
जोतें रोशन महफ़िल महफ़िल
परवानों ने पाई मँज़िल
महकी बगिया, फैली ख़ुशबू
काली रैन में चमके जुगनू
ताने गूँजीं, दुनिया नाची
लैला झूमी, राधा नाची
हर चेहरे पर सुख का उजाला
हर सीने में प्रेम की ज्वाला
दर चमके, दीवारें चमकीं
सिक्कों की झँकारें चमकीं
दिल ने ली इक मस्त अँगड़ाई
अरमानों की फिर बन आई
मार के रावण को राम आए
अँधियारा अब सर न उठाए

सच्चाई की जीत हुई फिर
जारी प्रीत की रीत हुई फिर

—

हिलाल-ए-ईद

ऐ हिलाल-ए-ईद, ऐ आईना-ए-हुस्न-ए-अज़ल
मुन्तज़िर है तेरे नज़्जारे का हर पीर-ओ-जवाँ
एक लम्हे के लिए तारीक बादल से निकल
ताबके लेता रहेगा यूँ नज़र का इम्तिहाँ
तेरे मुश्ताक़ो में इक हलचल मची है सुबह से
उन की उम्मीदें हैं नाजुक, तू उन्हें ठुकरा न दे
आ, कि अब बाक़ी नहीं आँखों में ताब-ए-इन्तिज़ार
रोज़ादारों को क़यामत हो रही है हर घड़ी
इक महीने से दिल-ए-अरमाँ ज़दा है बेक़रार
और तू सब्रआज़मा, मुश्किल है ये कितनी बड़ी
ये तग़ाफुल केशियाँ अपनों से, हैं ज़ेबा तुझे?
मुशइल-ए-बज़्म-ए-फ़लक, ये हो गया है क्या तूझे?
ज़ुल्मत-ए-ग़फलत में गुम है जलवा-ए-राह-ए-बक़ा
पा-ए-हिम्मत है शिकस्ता, दूर है मँज़िल अभी
वक़्त है, अपनी शुआ-ए-नूर से रस्ता दिखा
होती है मुश्किल ही में पहचान सच्चे दोस्त की
हिन्द मुद्दत से है तिशनाकाम-ए-दर्स-ए-इत्तेहाद
ईद के हमराह दे पैग़ाम-ए-दर्स-ए-इत्तेहाद

—

गिरानी

रात अँधेरी, दिन तूलानी   हिर्स-ओ-हवस की ये अरज़ानी
चलती फिरती बेईमानी   ख़ून हुआ रग रग में पानी
बिकती है बेदाम जवानी
हाय गिरानी, हाय गिरानी

गन्दुम, चावल, दाल, नमक, घी   रोज़ अफ़ज़ूँ है क़ीमत सब की
बजती है इक हाथ से ताली   कलजुग की ये रीत भी देखी
ज्ञानी कहलाऐं अज्ञानी
हाय गिरानी, हाय गिरानी

बाज़ारों में लूट मची है   पूछ न जो हालत दिल की है
सर पर आफ़त मँडलाती है   क़दमों से बेड़ी लिपटी है
महरूमी, हसरत सामानी
हाय गिरानी, हाय गिरानी

कौन सुनेगा मन के दुखड़े   भूके पेट और सीने सुकड़े
घुटते दम अैर उतरे मुखड़े   जीवन दर्पण टुकड़े टुकड़े
हर शय धोका, हर शय फ़ानी
हाय गिरानी, हाय गिरानी

पानी मनों आकाश से बरसे   प्यासा इक इक बूँद को तरसे
बोझ ये कब उतरेगा सर से   धरती का दिल काँपे डर से
होने को है ख़त्म कहानी
हाय गिरानी, हाय गिरानी

—

इशतिराक

जाबिर हो या हो मजबूर क़ाहिर हो या हो मक़हूर
कुदरत का है ये दस्तूर राजा प्रजा सब मज़दूर

ये ऊँचे रँगीं ऐवान ये सादा कुटिया की शान
जिस को देखो एक समान राजा प्रजा सब मज़दूर

दोनों मेहनत करते हैं हँसते, आहें भरते हैं
पैदा होते, मरते हैं राजा प्रजा सब मज़दूर

दोनों जैसे तीर कमान दोनों से ज़िन्दा इन्सान
दोनों मज़दूरी की शान राजा प्रजा सब मज़दूर

—

मज़दूर की मुहब्बत

काँटों में रहनेवालों को फूलों की मय से क्या मतलब
जानी चीज़ों के तालिब को अनजानी शय से क्या मतलब
जब पेट की भूक सताती है, दिल उलफ़त को तज देता है
जिस शख़्स का ख़ून पसीना हो वो राहत को तज देता है
ये शाम-ओ-सहर की गरदिश क्या बेताबी पैदा करती है
मायूस दिलों में अहसास-ए-नायाबी पैदा करती है
मैं तुझ से प्यार करूँ कयूँकर, मजबूर भी हूँ, नाचार भी हूँ
ये मेरी अपनी क़िस्मत है, मज़दूर भी हूँ, नादार भी हूँ
मेरे बाज़ू की क़ुव्वत से औरों को दौलत मिलती है
मैं भी तो आख़िर इन्साँ हूँ, मेरी भी छाती हिलती है

ऐ काश मुझे भी दुनिया में रहने का सलीक़ा आ जाता
अपने बेगाने को धोका देने का तरीक़ा आ जाता
मेरी जेबों में भी सिक्के आपस में सरगोशी करते
मेरी कमज़ोरी छुप जाती, मेरी हैबत से सब डरते
गाढ़े की जगह इक अतलस का मलबूस मेरे तन पर होता
दुनिया को झुका कर क़दमों पर नाज़ाँ मैं भी धन पर होता
इश्क़ और जवानी के किस्से सुनता भी और सुनाता भी
जागी हुई दिल की दुनिया को मस्ती का भेद बताता भी
लेकिन अब ये कैफ़ियत, जीना है वबाल-ए-दोश मुझे
लेने को आगे बढ़ता है ग़म खोले हुए आग़ोश मुझे
फ़िक्रों में उम्र गुज़रती है पल भर भी चैन नहीं मिलता
जो तूफ़ाँ को साहिल कर दे वो नस्बुलऐन नहीं मिलता
मैं प्यार की बातें क्या जानूँ, मैं प्यार की घातें क्या समझूँ
बेकैफ़ हमेशा रहती हैं क्यूँ मेरी रातें क्या समझूँ

—

फ़िक्रें

सोच रहा हूँ - क्या ये नँगा, भूका इन्साँ, यूँ नँगा, भूका ही रहेगा
सदियों से ग़म खानेवाला कब तक ज़ुल्म-ओ-जोर सहेगा
सोच रहा हूँ - क़िस्मत को कब तक कोसेगा,कब तक ये बेदार न होगा
मज़हब के दीवानापन से माँगेगा नफ़रत की ज्वाला
सोच रहा हूँ - आपस में लड़ने भिड़ने से मुस्तक़बिल तामीर भी होगा
आग़ाज-ए-तदबीर के हाथों अँजाम-ए-तक़दीर भी होगा
सोच रहा हूँ - दूर न होगी मँज़िल से ये राहों की दुश्वारी कब तक
मस्जिद, मँदिर के नातों में आएगी हमवारी कब तक
सोच रहा हूँ - ख़ून से जिन बच्चों, बूढ़ों के ये धरती शादाब हुई है
क्या उन की भटकी रूहों को जन्नत में तस्कीन मिली है

—

ऐ मेरे नाख़ुदा, मुझे दरिया में डूब कर
अन्दाज़ा-ए-तलातुम-ओ-तूफ़ाँ हुआ तो है

—

सदा-ए-जरस

अँधेरों की दुनिया पे छाता चला जा
उम्मीदों की शम्एं जलाता चला जा
तराने मुहब्बत के गाता चला जा
क़दम सू-ए-मँज़िल बढ़ाता चला जा
तेरी रहगुज़र में जो हो काई पत्थर
उसे ठोकरों से हटाता चला जा
अगर कोई ज़ोर आज़्मा हो तो बढ़कर
उसे ज़ोर-ए-बाज़ू दिखाता चला जा
पहाड़ों से दरियाओं से बेख़तर हो
मुसायब से आँखें लड़ाता चला जा
वो कैसी ही तेरी कठिन रहगुज़र हो
क़दम तू हमेशा बढ़ाता चला जा
न डर बाद-ओ-बाराँ के तूफ़ाँ से हरगिज़
जवाँ हौसले आज़माता चला जा

न डर ख़ारज़ार-ओ-बयाबाँ से हरगिज़
बाज़ोअम-ए-जुनूँ ख़ाक उड़ाता चला जा
वफ़ाओं का दुनिया में कर बोल बाला
इमारत जफ़ाओं की ढ़ाता चला जा
ग़म-ओ-दर्द-ओ-अन्दोह का है गिला क्या
तह-ए-तेग़ भी मुस्कराता चला जा
रिवायात-ए-माज़ी फ़रामोश कर दे
हिकायात-ए-फ़रदा सुनाता चला जा
ये शेवन की आवाज़ ख़ामोश कर दे
तरन्नुम के दरिया बहाता चला जा
सलामत ये जोश-ए-तलब है मुसाफ़िर
मुसाफ़त तेरी जाँ ब लब है मुसाफ़िर

—

किस ने छेड़ा सुबहदम साज़-ए-शबाब
कायनात-ए-दिल सरापागोश है

—

दरीचे से

मैंने देखा है दरीचे से कई बार तुझे,
तेरी नौख़ेज जवानी के हसीं जलवों से
मेरी अवारा निगाहों ने ख़यालों में मेरे
जाल मोहूम से ख़्वाबों के बुने हैं सदहा,

ये शब–ओ–रोज़ का इक सिलसिला लामुतनाही
ज़िन्दगी इन में भटकती है मुसलसल, पैहम–
क्या कोई मँज़िल–ए–मक़सूद नहीं है इस की?
उड़ती, पर मारती, आज़ाद फ़िज़ा में रूहें
जिस्म की क़ैद को करती हैं गवारा क्यूँ कर?
टूट ही जाता है मासूम उमँगों का तिलिस्म,
कश्मकश ज़ीस्त की बन जाती है बुग़ज़ और हसद
मक्र का नाम यहाँ रक्खा है इन्सानिय्यत
ईंट चूने की नज़र आती हैं जो दीवारें
ओट में इन के गुनाहों के लगे हैं अँबार
–वो गुनह जिन के तसव्वुर से है लरज़ाँ इबलीस!

ख़ुद को धोका यूँहीं रह रह के दिए जाता है

ख़ुदग़रज, अहल-ए-हवस का वो जफ़ाकार गिरोह

जिसे कहते हैं समाज

रहनुमाई की जगह राहज़नी पर माईल

इस के क़ानून-ओ-असूल-इब्न-ए-आदम के लिए एक फ़रेब-ए-अज़ीम

दरमियाँ मेरे तेरे दोस्त जो हाईल है ख़लीज

जिस्म-ए-ख़ाकी को हम आग़ोश न होने देगी

सोचता हूँ कि ये लम्हात-ए-हसीन-ए-हस्ती

क्या यूँहीं फ़िक्र-ओ-तरद्दुद में गुज़र जाऐंगे?

क्या तुझे देख सकूँगा में दरीचे से मुदाम?

ईंट चूने की ये दीवार-ये मकरूह समाज!

—

अहल-ए-साहिल देख रहे थे

डूब गए जब डूबने वाले

—

सवेरा

मुझे लेनी है तूफ़ानों से टक्कर ऐ दिल-ए-वहशी
कि अब आसूदगी साहिल की वजह-ए-सरगिरानी है
कि मैंने अब जुनून-ए-कश्मकश की क़दर जानी है
बहुत चलता रहा दामन बचा कर ऐ दिल-ए-वहशी
मय-ओ-मीना-ओ-साक़ी का ख़याल-ए-जाँफ़िज़ा कब तक
न लेगा तू सहारा परतव-ए-शमशीर का कब तक
न तू आएगा कब तक रास्ते पर ऐ दिल-ए-वहशी
किसी के रेशमी आँचल में कब तक मुस्कुराएगा
जवानी की हसीं आग़ोश में तसकीन पाएगा
मिटा जाता है झूटी राहतों पर ऐ दिल-ए-वहशी
ये मज़हब आदमी को आदमी से जो लड़ाता है
ख़ुदा के नाम पर जो शैतनत को ख़ुद जगाता है
वो मज़हब इब्न-ए-आदम का है रहबर ऐ दिल-ए-वहशी
मुझे इन्सानिय्यत की मौत पर आँसू बहाने हैं
यतीमों और बेवाओं के अफ़साने सुनाने हैं

जो घरवाले कभी थे अब हैं बेघर ऐ दिल-ए-वहशी

क़नूतीयत तेरी रूहानियत का नक़्श-ए-पस्ती है
इलाही किस क़दर तख़रीब परवर तेरी बस्ती है
जो अब तक बँद थे वो खोल दे दर ऐ दिल-ए-वहशी

ज़माना तुझ से आगे और आगे बढ़ता जाता है
तेरी ख़ुशफ़हमियों पर अज़्म तेरा मुस्कराता है
कि पानी आ गया है सर के ऊपर ऐ दिल-ए-वहशी

लुँढा दे ख़ुम, पियाले तोड़ दे, साक़ी को रुख़सत कर
शुरू-ए-दौर-ए-नौ है, तेग़ उठा, परचम से उलफ़त कर
न अपने माज़ी-ए-मज़लूम से डर ऐ दिल-ए-वहशी

गई शब और हँगाम-ए-तुलू-ए-सुबह आ पहुँचा
सफ़ीना ज़ीस्त का मँझधार में ऐ नाख़ुदा पहुँचा
बदलना है मुझे तेरा मुक़द्दर ऐ दिल-ए-वहशी

—

सहारा

मैने सोचा था कि हस्ती के तरबख़ाने में
नाम मेरा भी किसी जाम पे लिखा होगा
एक शब, एक ही शब, मैं भी किसी नग़मे से
दिल की तसकीन का सामान करूँगा पैदा

मैंने चाहा था कि ख़्वाबों की हसीं दुनिया में
मुस्कराहट से हमआग़ोश रहूँ ग़म न सहूँ
खोए खोए से अँधेरे ये उजाले हर सू
रक़्स करती किसी दोशीज़ा किरण को छू लूँ

मेरा सोचा, मेरा चाहा, न हुआ हो न सका
बज़्म-ए-मातम को तरबख़ाना समझता था मैं
सादालोही थी मेरी सादाख़्याली की सज़ा
शम्अ को महफ़िल-ए-परवाना समझता था मैं

जाम-ए-लबरीज़ भी था, नाम भी था उस पे मेरा
था मगर उस में भरा ज़हर बजाए मय-ए-नाब
हाथ बढ़ता तो न था, हाथ बढ़ाना ही पड़ा
और समझा किया उस को भी मैं आवाज़-ए-शबाब

मुस्कराहट के पस-ए-परदा ग़म-ए-दिल की झलक
और मुतरिब के फ़सूँसाज़ तरानों की कराह
आँख हर नरगिस-ए-हैराँ की बहर से महरूम
नँग-ओ-तख़रीब का इक अक्स-ए-रवाँ इज़्ज़त-ओ-जाह

ज़ीस्त इक आह-ए-मुसलसल के सिवा कुछ भी नहीं
और कुछ थी भी तो मैं उस को समझ ही न सका
दोश-ए-फ़रदा के दोराहे पे भटकता ही रहा
दामन-ए-हाल था सद चाक उसे सी न सका

तलख़ियाँ बढ़ती रहीं वक़्त की रफ़्तार के साथ
उम्र घटती रही आते रहे, जाते रहे दिन
रूह मीआद-ए-असीरी में सुकूँ पा न सकी
रोज़ इक रात की तमहीद बनाते रहे दिन

मैं समझता था जिसे राह-ए-निजात-ए-इन्साँ
वो न इक़रार में थी और न इन्कार में थी
माद्दियत की अलमनाक हदों से आगे
मेरी तसकीन मेरे दामन-ए-अशआर में थी

—

पाप और पश्चाताप

ये नगरी है पाप की नगरी

ग़म की पश्चाताप की नगरी

तोड़ के इस नगरी के बँधन, दूर कहीं उड़ जाऊँ

मक्र-ओ-रिया की दुनिया है ये

हिर्स-ओ-हवस की दुनिया है ये

जीना, मरना, मरना, जीना, समझूँ और समझाऊँ

माया, लोभ और मोह के बन्दे

लूले, लँगड़े, भूके, नँगे

जी में है अब काले दिन को उजली रात बनाऊँ

इस्तिबदाद का भाँडा फोड़ूँ

ज़ुल्म के धारे का मुँह मोड़ूँ

इन्साँ को इन्सान बना कर राह-ए-हक़ पर लाऊँ

ज़ब्त और सब्र करूँगा कब तक

दिल पर जब्र करूँगा कब तक

ख़ुशियों के गीतों के मोती लूँटू और लुटाऊँ

आज़ादी के गीत सुना कर
शादाबी के भेद बता कर
धरती के प्यासे खेतों पर प्यार की मय बरसाऊँ
ज़र्रा सूरज बन कर चमके
क़तरा तूफ़ाँ बन कर उभरे
वज्द में आकर झूमूँ, नाचूँ, दुनिया को भी नचाऊँ
मिल के जीयूँ और मिल के मरूँ मैं
मिल कर सारे काम करूँ मैं
मिल के चलूँ मुश्किल राहों पर, मिलकर पाँव बढ़ाऊँ
माज़ी का ग़म दिल से मिटाऊँ
मुस्तक़बिल के गीत सुनाऊँ
आज की बुझती चिँगारी से कल के दीप जलाऊँ
इन्साँ की पहचान जहाँ हो
हस्ती का इरफ़ान जहाँ हो
प्रेम और सुँदरता के सपने देखूँ और दिखाऊँ

—

फ़सानानिगार की तख़लीक़

रात, तनहाई, उदासी, ख़ामुशी,
यास-ओ-ग़म, बीम-ओ-रज़ा,
मौत के साए में पलकर ज़िन्दगी
चींखती, चिल्लाती, गिरती, रेंगती,
वक़्त की लँबी डगर पर पे-ब-पे
मँज़िल-ए-मोहूम की जानिब रवाँ,
आदमी, माहौल का सैद-ओ-ग़ुलाम
महव-ए-तख़रीब-ए-ख़ुदी
आदमियत की ज़वाल आमादगी,
गुल में काँटे की चुभन,
बस्तियाँ, वीरानियाँ,
वहशतें, आवारगी,
बाद-ओ-बाराँ,
क़हत का रक़्स-ए-फ़ना,

शोख़ आँखों की नमी,
साग़र-ए-महरूम-ए-मय,
मौज-ए-ज़मज़म, आब-ए-गँगा, और फिर भी तिशनगी,
मस्जिदों में दाग़-ए-सजदा की जलन,
मँदिरों में नफ़रतों का शोर-ओ-गुल,
अम्न से बेज़ारियाँ
जँग की तैयारियाँ
ये मुनाज़िर, ये मुज़ाहिर देख कर
कृष्ण चँद्र रो दिया,
रोते रोते बन गया
एक अफ़सानानिगार

—

दम तोड़ती मौजें क्या साहिल का पता देंगी
ठहरी हुई किश्ती है ख़ामोश है तूफ़ाँ भी

—

मेरी तस्वीर

मेरी तस्वीर
मेरी नज़्म का उनवान-ए-अजीब
आप ये नज़्म सुनेंगे तो परीशाँ होंगे
क्यूँकि ये नज़्म तो है,
नज़्म का मोज़ूँ भी है,
लेकिन इस नज़्म के फ़नकार की
यानी मेरी
दस्त-ए-नक़्क़ाश ने खींची ही नहीं
कोई तस्वीर अभी,
मैं नहीं हूँगा जब इस दुनिया में
मेरी इस नज़्म को पढ़कर अहबाब

किसी फिरदौस-ए-तख़ैय्युल में पहुँच जाऐंगे
और सद रँग तसव्वुर की क़लमकारी से
अपने इस सफ़्ह-ए-दिल पर, कोई
मेरी तस्वीर बना ही लेंगे
मेरी तस्वीर
मेरी नज़्म के हर लफ़्ज़ में है

—

दिल के वीराने में खोई हुई याद
ढूँढ लाए न कहीं आज का दिन

—

हथेली की लकीरें कह रही हैं
मेरी तक़दीर में लिखा है क्या

—

साये से बेनियाज़-ओ-बेपरवा
दश्त में घर बना रही है धूप

—

मुराजअत

हाल–ओ–फ़रदा के कारख़ाने में   ज़िन्दगी की मशीन चलती है
दिल में जज़्बात का गुज़र ही नहीं   बस अमल का यक़ीन बाक़ी है

ऐ ग़म–ए–ज़ीस्त तुझ को देख लिया   कश्मकश के सिवा नहीं कुछ भी
दिल में दर्द–ए–बुताँ न हो तो फिर   वलवला, हौसला नहीं कुछ भी

सोचता हूँ कि क्या यही तख़रीब   हासिल–ए–इरतिक़ा–ए–इन्साँ है
आ गया हूँ अजब दोराहे पर   ये गुलिस्ताँ है, वो बयाबाँ है

रोशनी की उम्मीद में कब तक   दिल मेरा रात से निबाह करे
दामन अपना बचा के काँटों से   ये किसी लालारुख़ की चाह करे

चाहता हूँ किसी बहाने फिर   मैं तेरे आस्ताँ पर आ जाऊँ
फिर तेरे पँखुड़ी से होंठों पर   मुस्कराहट की चाँदनी पाऊँ

—

तलाश

गुलफ़रोशों को चमन में जलवा-ए-गुल की तलाश
मयगुसारों को सुराही और क़ुलक़ुल की तलाश
ख़ुश्क खेतों को निशात-ए-अब्र-ए-बाराँ की तलाश
रहरवान-ए-राह-ए-हक़ को दीन-ओ-ईमाँ की तलाश
दीदा-ए-बीमार-ए-नरगिस को ज़ियाओं की तलाश
ताइरान-ए-ख़ारबरलब को नवाओं की तलाश
चश्म-ए-परवाना को नूर-ए-शम्अ-ए-महफ़िल की तलाश
किश्ती-ए-बे नाख़ुदा को अम्न-ए-साहिल की तलाश
वादी-ए-एमन को अज़्म-ए-पा-ए-मूसा की तलाश
बिजलियों को ख़िरमन-ए-होश-ओ-तमन्ना की तलाश
बेख़ुदों को आलम-ए-इमकाँ में है अपनी तलाश
है मगर सहरा-ए-हस्ती में मुझे तेरी तलाश

—

मुतरिबा से

वो गीत छेड़ जिस से झूम जाए रूह-ए-ज़िन्दगी
बजे रबाब-ए-कायनात, गाए रूह-ए-ज़िन्दगी
वो सोज़ हो, वो हो असर
तड़प उठें दिल-ओ-जिगर
तमाम दिल क़रार और सुकूँ से बेनियाज़ हों
ख़ुदी के आलम-ए-ख़ुदानुमा में सरफ़राज़ हों

मेरी बहार है यही कि गाए जा बजाए जा
दिलो-ओ-दिमाग़ में मेरे इक आग-सी लगाए जा
तरब की नद्दियाँ बहा
चिराग़ कैफ़ के जला
तमाम कायनात नग़मारेज़-ओ-नग़माबार हो
बहार-ए-सद निशात हो, निशात-ए-सदबहार हो

मेरे मज़ार पर न रो, न झोंक मुझ को आग में
कि मेरी जन्नतें छुपी हुई हैं तेरे राग में
न रोक हाथ मुतरिबा
लतीफ़ गीत गाए जा
मेरी इस आख़िरी उम्मीद को न पायमाल कर
शहीद-ए-आरज़ू की इलतेजाओं का ख़याल कर
—

फ़रदा के सपने

चले जाओ फ़रदा के रँगीन सपनो
अभी हाल की फ़िक्र में मुबतला हूँ
अभी दामन-ए-दोश छूटा नहीं है
अभी ख़ुद को मजबूर मैं देखता हूँ
चले जाओ फ़रदा के रँगीन सपनो
तुम्हारा सहारा भी मैं ढूँढ़ लूँगा
ज़रा वक़्त करवट बदल ले तो फिर मैं
तुम्हारे ही रस्ते पे गाता चलूँगा
चले जाओ फ़रदा के रँगीन सपनो
तुम्हारे लिए राह हमवार कर लूँ
मिटाकर ये सदियों की पुरहौल ज़ुल्मत
निखरते हुए नूर में बन सँवर लूँ
चले जाओ फ़रदा के रँगीन सपनो
हक़ायक से दो चार होना है मुझ को
तुम्हारे लिए डूबकर ज़िन्दगी में
ग़लत रिफ़अतों को डूबोना है मुझ को

चले जाओ फ़रदा के रंगीन सपनो
कि मैं अज़्म पर आँच आने न दूँगा
तुम्हारे सुनहरी तसव्वुर में खोकर
तमन्नाओं में गुनगुनाने न दूँगा
चले जाओ फ़रदा के रँगीन सपनो
नई क़ुव्वतों के सहारे उठूँगा
तुम्हारी क़सम है तुम्हारे लिए मैं
ज़माने के धारे का रुख़ मोड़ दूँगा
चले जाओ फ़रदा के रँगीन सपनो
मैं काँटों से तामीर-ए-गुलशन करूँगा
फ़िज़ाओं में जो ज़हर हल हो चुका है
उसी ज़हर के ख़ुद भी क़ाबिल बनूँगा
चले जाओ फ़रदा के रँगीन सपनो
मेरे हाल पर छोड़ दो आज मुझको
—

ऐ मेरे ख़ुदा

जहाँ में करके पैदा फ़िक्र रहती है मिटाने की
ये क्या तदबीर है मजबूरियाँ को आज़माने की

तूझे क्यूँ बेकसों पर रहम फ़रमाना नहीं आता
किसी गुमराह को क्यूँ राह पर लाना नहीं आता

दुआऐं जब दवाओं की तरह नाकाम रह जाऐं
तेरे बन्दे यकीं तेरे करम पर किस तरह लाऐं

अगर मन्ज़ूर था तुझ को मुझे मग़मूम ही रखना
तो बहतर था सरूर–ओ–कैफ़ से मरहूम ही रखना

—

मुआज़िरत

रूमानियत से दिल को तअल्लुक़ नहीं रहा
रूमान ढूँढते हो मेरे शेअर में फ़िज़ूल

हूँ हादसात-ए-गरदिश-ए-अय्याम का शिकार
चुभता है बन के ख़ार अब आँखों में मेरी फूल

आज़ाद कौन कहता है मुझको बा-ई-हुमा
मजबूरी-ओ-फ़राइज़-ओ-पाबन्दी-ए-उसूल

क़ल्ब-ओ-दिमाग़ वक़्फ़-ए-ग़म-ओ-फ़िक्र-ए-रोज़गार
मैं मुअजिज़ात-ए-हुस्न-ओ-मुहब्बत गया हूँ भूल

वो दिन गये कि लेती थी मँज़िल मेरे क़दम
हर सिम्त रहगुज़र में अब उड़ती है ख़ाक धूल

—

नई रुत

ठिठूर रही है हर कली

शजर शजर है मुनजमिद

हवा ख़ुनक, फ़िज़ा ख़ुनक

है रात सर्द, सर्द दिन

तपिश नहीं है धूप में

हरारत आग में नहीं

ये मुरदा जिस्म बर्फ़ बर्फ़

ये होंठ सर्द, गाल ज़र्द

दिया दिया, बुझा बुझा

वो गरमजोशियाँ नहीं

वो बादानोशियाँ नहीं

मेरे ख़ुदा! मेरे ख़ुदा! बता बता

ये ज़िन्दगी की रुत है क्या? ये रुत है क्या?

—

बग़ावत

मैं तुझे आज भुला ही दूँगा
नाम तेरा सहर-ओ शाम लिया है मैंने
मैंने पूजे हैं बनाकर तेरे बुत हाय हसीं
तेरी हैबत से मेरी रूह लरज़ जाती थी
ज़िन्दगी यास के साए से भी थर्राती थी
एक लम्हे के लिए भी नहीं उठती थी जबीं
तूझे नज़राना-ए-सद होश दिया है मैंने

मैं तुझे आज भुला ही दूँगा
तोड़ दूँगा ये तसव्वुर का तिलिस्म-ए-रँगीं
जिसने सदियों को रखा अपने गिरफ़्तार-ए-फ़रेब
जिस ने परवान न चढ़ने दिया इन्साँ का शऊर
जिसकी तामीर में शामिल है फ़क़त मेरा क़सूर
मैं मिटा दूँगा मगर अब वही आसार-ए-फ़रेब
आशना मेरे इरादों से हैं ज़र्रात-ए-ज़मीं

मैं तुझे आज भुला ही दूँगा
खोल दूँगा मैं तरक़्क़ी की हज़ारों राहें
और आज़ाद फ़िज़ाओं में करूँगा परवाज़
नाम पर तेरे, मेरा ख़ून बहेगा न कभी
मेरा दिल तेरी जफ़ाओं को सहेगा न कभी
अहल-ए-दुनिया पे अयाँ कर के रहूँगा हर राज़
देख सकते हैं जो तुझको वही तुझ को चाहें

मैं तुझे आज भुला ही दूँगा
पी कर आया हूँ शराब-ए-ग़म-ए-फ़रदा-ए-हयात
दफ़्न माज़ी के धुँदलकों को भी कर आया हूँ
तूझ को खोकर ही मिलेगी मुझे मँज़िल मेरी
हल अगर होगी तो होगी यूँही मुश्किल मेरी
आज मैं तुझ से बग़ावत पे उतर आया हूँ
मेरा माबूद कोई है तो है लैला-ए-हयात

—

आख़िरी बार

तू परीशान न हो खौफ़ न खा!
मैं इशारे पे तेरे जान भी दे सकता हूँ
ये बड़ा बोल नहीं इस को हक़ीक़त ही समझ
क़ैस-ओ-फ़रहाद की उल्फ़त ही समझ
सादालोही पे ना जा

मैं कहीं दूर बहुत दूर चला जाऊँगा
लौटकर फ़िर न कभी आऊँगा
तू भी इस घर से चली जाऐगी शहनाई के नग़मे सुनती
ताज़ा ख़्वाबों के हसीं जाल से हरदम बुनती
शम्अ रह जाएगी इक सर धुनती
तेरे अहसास की गहराई में खो जाऊँगा
और तारीक उजालों में सुकूँ पाऊँगा!!
चाँद ख़ामोश है तारों का फ़सूँ टूट गया
बीती रातों की तुझे याद दिलाऊँगा न अब

क़ौल-ओ-पैमाँ की तरफ़ कोई इशारा न करूँगा हरगिज़
वक़्त-ए-गुज़राँ तो गुज़र जाता है
ख़ुद-ब-ख़ुद ज़ख़्म भी भर जाते हैं
तू कोई फ़िक्र न कर
ये मुलाक़ात, मुहब्बत का ये हुक्म-ए-आख़िर
हमें तसलीम ही करना होगा

आख़िरी बार ज़रा अपने हसीं होंठों पर
मुस्कराहट की शुआओं को बिखर जाने दे
मैं अँधेरों में यही नूर तो ले जाऊँगा
तू परीशान न हो खौफ़ न खा
मैं कहीं दूर, बहुत दूर चला जाऊँगा
लौट कर फिर न इधर आऊँगा-

—

अब कहाँ ढूँढने जाऊँ कि तेरा जल्वा-ए-नौ
बस गया है मेरी आँखों में नज़र की सूरत

—

पस मन्ज़र

मुझे बीते हुए अय्याम फिर क्यूँ याद आए हैं
मुहब्बत के वो लम्हे - हाँ वही लम्हे
जिन्हें ज़र्रीं समझते हैं जहाँवाले
मगर जिनके तसव्वुर से लरज़ जाता है दिल मेरा,
मुहब्बत के वो हैबतनाक लम्हे - मौत के लम्हे

घटाएँ उड़ के आती हैं कहाँ से आसमानों पर,
टपकते हैं ख़ुशी के अश्क तारों की निगाहों से,
निखरता है चमन, गूँचे चटक कर फूल बनते हैं
फ़िज़ाओं में महक जाते हैं नग़मे आबशारों के
वो नग़मे जो दिल-ए-वीराँ को मेरे गुदगुदाते हैं
समा जाते हैं मेरी रूह के आइनाख़ाने में,
उभर आते हैं धुंदले नक़्श याद-ए-अहद-ए-रफ्ता के सताने के लिए मुझको

मेरे साक़ी, दर-ए-रँगी पे तेरे सर-ब-सजदा होने आया हूँ
सुना है आतिश-ए-सैय्याल तेरे पास है ऐसी
जलाकर दमज़दन में राख कर देती है जो अफ़्कार-ए-हस्ती को,

ये दोश-ओ-हाल-ओ-फ़रदा इक फ़रेब-ए-अक़्ल-ए-इन्साँ
के सिवा क्या है?
वो दिन जो वापस आते ही नहीं दुनिया-ए-फ़ानी में
मुझे क्यूँ याद आऐं - याद आकर दिल को तड़पाऐं?

—

कायनात, और इस क़दर महदूद
आदमी, और इस क़दर दिल तँग
किस दोराहे पे यास ने घेरा
घर से निकला था दिल में लेके उमँग

—

अगर ख़ुदा है

अगर ख़ुदा है तो फिर ज़माने में रँज-ओ-अन्दोह दर्द क्यूँ है
ज़ुबान-ए-बुलबुल पे नाला क्या है, ये रु-ए-गुल ज़र्द ज़र्द क्यूँ है
अगर ख़ुदा है तो क्यूँ नहीं है बहार आलम की जाविदानी!
हर एक शय बेसिबात उस की, हर एक शय उस की आनी जानी!
अगर ख़ुदा है तो किस लिए ज़ुल्म ढ़ाए जाते हैं बेकसों पर
फ़लक से क्यूँ बिजलियाँ-सी गिरती हैं बेनवाओं पर, बेबसों पर
अगर ख़ुदा है, अगर ख़ुदा ने बनाई है कायनात सारी!
तो क्यूँ हर इक सिमत फिर हैं फ़ितने फ़रेब-ओ-मक्र-ओ-रिया के जारी
अगर ख़ुदा है तो एक हालत में क्यूँ नहीं है निज़ाम-ए-हस्ती
कहीं शब-ओ-रोज़ शोरिशें हैं, कहीं बुलन्दी, कहीं है पस्ती
अगर ख़ुदा है तो क्यूँ नहीं है तमाम दुनिया वफ़ा की हामी!
कहीं हकूमत है मस्त-ओ-बेख़ुद, तड़प रही है कहीं ग़ुलामी
अगर ख़ुदा है तो क्यूँ नहीं है निशात-ओ-ग़म दोनो इख़्तियारी
रगों से दुनिया की क्यूँ है दिन रात ख़ून बेचारगी का जारी
अगर ख़ुदा है तो फिर उम्मीदों के साथ ख़ौफ-ओ-मलाल क्या है
ज़वाल क्यूँ है मसर्रतों को, ग़मों को हासिल कमाल क्या है

अगर ख़ुदा है तो क्यूँ नहीं है ख़ुदा के बन्दों में इश्क़-ओ-उलफ़त
न जिस्म को है क़रार हासिल, न रूह को है नसीब राहत
अगर ख़ुदा है तो क्यूँ नहीं उस को अपनी दुनिया की फ़िक्र-ओ -परवा
अज़ल से सोया है यूँ कि बेदार ता अबद अब न होगा गोया
अगर ख़ुदा है तेरा यही, ऐ फ़रिशता-ए-नेकनाम, सुन ले
मैं हश्र तक भी नहीं बनूँगा तेरे ख़ुदा का ग़ुलाम, सुन ले
न भूल अपनी हक़ीक़तों को कि इब्न-ए-आदम है नाम तेरा
अभी फ़लक की बुलन्दीयों पर है तज़केरा सुबह-ओ-शाम तेरा
ज़ुबाँ पे तारों की है अभी तक तेरे जवानी के गीत जारी
है आबशारों के साज़-ए-दिलकश पे कामरानी के गीत जारी
बहार तेरे लिए चमन का सिँघार करती है रँग-ओ-बू से
ख़िज़ाँ फिर आगाह उस को करती है तेरे फ़ितरत से और ख़ू से
तेरे ही सामान-ए-दिलकशीं हैं ये रोज़-ओ-शब, मेहर-ओ-माह-ओ-तारे
उरूस-ए-फ़ितरत तुझी को करती है परदा-ए-अब्र से इशारे
ये वाकेआ कल का है कि सजदे किए मलायक ने तेरे आगे
फ़िज़ा-ए-जन्नत में हो रहे हैं अभी तेरी अज़मतों के चरचे
वो दिन है महफ़ूज़ ज़हन-ए-फ़ितरत में जब हेयूला बना था तेरा
ख़याल दिल में मुसव्विर-ए-दोजहाँ के पैदा हुआ था तेरा

ख़ुदा को तो याद है अभी तक, ख़ुदा तुझे याद ही नहीं है
भुला के जन्नत की इशरतों को तू अब ग़ुलाम-ए-ग़म-ए-ज़मीं है
तेरे तग़ाफ़ुल का ये है धोका, ग़म-ए-अलम वरना कुछ नहीं है
झुकी हुई आस्तान-ए-शैताँ पे रोज़-ओ-शब क्यूँ तेरी जबीं है
वुजूद-ए-शैताँ तो इक नतीजा है ज़हनियत की ग़लतरवी का
यक़ीन कर इस की पैरवी से तुझे कोई फ़ायदा न होगा
अगर न बज़्म-ए-जहाँ का मक़सद तगय्युर-ओ-इन्क़लाब होता
उभर के नाकामियों की पस्ती से क्यूँ कोई कामयाब होता
ख़ुदा से मुनकिर है इब्न-ए-आदम,फ़रेब-ए-आलम का सहर, तौबा
छुपा लिया है गुलों का परतौ, नुमूद-ए-शबनम का सहर, तौबा
वो देख मशरिक़ से नूर निकला लिए हुए जलवा-ए-हक़ीक़त
मजाज़ की तर्क कर ग़ुलामी कि तू तो है बन्दा-ए-हक़ीक़त

—

बँद बाब-ए-मयकदा है, वा दर-ए-काबा नहीं
छोड़कर कूचा तेरा फिर जाए दीवाना कहाँ

—

वो तेरी बज़्म-ए-नाज़ थी वरना
हम कहीं बिन बुलाए जाते हैं

—

सजदा-ए-इस्तिक़ा

मिला जब हुक़्म-ए-रुख़सत हज़रत-ए-आदम को जन्नत से
तो जितनी नाज़िशें थीं दिल में वो बदली निदामत से
उतर कर अर्ज़-ए-ख़ाकी पर ज़मीं देखी, फ़लक देखा
बड़ी हैरत से हर मन्ज़र को देखा, देर तक देखा
कहीं देखा उठाए सर फ़लक-सा कोहसारों को
कहीं देखा हसीं नग़मात बर लब आबशारों को
कभी तारों को देखा जगमगाते, नूर फैलाते
कभी फूलों को देखा मुस्कराते, रँग बरसाते
ख़लाओं में परिन्दे माइल-ए-परवाज़ भी देखे
लरज़ते पर्दाहा-ए-साज़-ए-बेआवाज़ भी देखे
किया नज़्ज़ारा दुनिया की बुलन्दी और पस्ती का
हर इक मन्ज़र नज़रकश था फ़िज़ा-ए-बज़्म-ए-हस्ती का
हुए गुम इस क़दर इन मन्ज़रों में हज़रत-ए-आदम
कि जन्नत से निकलने का रहा दिल में न कोई ग़म
खुली ज़ाहिर की आँखें, रँग-ओ-बू में रह गईं खोकर
यही होता है आलम हक़ से बन्दे का जुदा होकर

ख़िरामाँ मुद्दतों आदम रहे तारीक राहों पर
कुदूरत दिल पे छाई ज़िन्दगी की कश्मकश बन कर
ज़माना करवटें लेता रहा, लेता रहा पैहम
अँधेरा छा गया हर सू, उजाला हो गया मध्धम
ये हैबतनाक ज़ुल्मत देख कर दिल और घबराया
मुसर्रत हो गई रुख़सत, ग़म-ओ-अनदोह दर आया
डरे, सहमे, रुके, दौड़े, किसी पहलू न चैन आया
उठा इक दर्द-ए-नामालूम-सा, दिल को तपाँ पाया

अचानक इक शुआ-ए-नूर आदम को नज़र आई
जहान-ए-बेहक़ीक़त में हक़ीक़त की ख़बर आई

किसी ने कान में आकर कहा, मालूम है तुझ को?
तेरी तख़लीक़ का मक़सद है क्या, मालूम है तुझको?
कहाँ से आ रहा है तू? तेरी मँज़िल भी है कोई?
तेरी इस हस्ती-ए-महदूद का हासिल भी है कोई?
कभी फूलों को मुरझाते हुए भी तूने देखा है?
कभी तारों को टकराते हुए भी तूने देखा है?

नक़ाब-ए-रुख़ कभी उल्टी है तूने ख़ुद परस्ती की?
कभी समझी है तूने बात अपनी ज़ैरदस्ती की?
कभी तूने किया है ग़ौर ‘‘क्या’’, ‘‘किस वास्ते’’, ‘‘क्यूँ ’’ पर?
नज़र तेरी कभी पहुँची है गरदूँ से भी बालातर?

ये सुनते ही हुआ अहसास महरूमी का आदम को
ज़ियादा हो गया ग़म अपनी महकूमी का आदम को
असर जज़्बे का था इतना दिल-ए-ग़मगीं-ओ- मुज़तर को
कि झुकने पर हुआ मजबूर आख़िर ख़ुदसर-ए-ख़ुदसर
हक़ीक़त खुल गई रानाई-ए-गुलज़ार-ए-आलम की
दुआ हो ही गई मक़बूल आख़िरकार आदम की
दिमाग़-ओ-रूह ने अपना सुकूँ खोया हुआ पाया
ख़ुदा के सामने सजदे में राज़-ए-इरतिक़ा पाया

—

कुछ भी तो नहीं मेरा, दूँ भी तो उसे क्या दूँ
दुनिया ने मेरे आगे क्यूँ हाथ पसारे हैं

—

मुतालबा

तराने मुसर्रत के गाओ तो जानें
जवानी की शम्ऐं जलाओ तो जानें
हसीं ज़िन्दगी को बनाओ तो जानें
मुहब्बत का परचम उठाओ तो जानें

मसाइब की रूदाद कहते रहे हो
थपेड़े हवादिस के सहते रहे हो
शब-ओ-रोज़ तूफ़ाँ में बहते रहे हो
भँवर को भी साहिल बनाओ तो जानें

ये छुप छुप के आँसू बहाना ग़लत है

ख़मोशी से हर ग़म उठाना ग़लत है

कमर तोड़ कर बैठ जाना ग़लत है

अमल का कोई गीत गाओ तो जानें

बहुत दूर मँज़िल, कठिन रहगुज़र हो

न रहबर, न रहबर की कोई ख़बर हो

नज़र मुज़महिल, हौसला पस्त तर हो

क़दम फिर भी आगे बढ़ाओ तो जानें

शब-ए-तार में चाँद तारों से खेलो

अगर गुल नहीं है तो ख़ारों से खेलो

तलाश-ए-सुकूँ में शरारों से खेलो

मुसीबत में भी मुस्कराओ तो जानें

—

जो रात बेमुहाबा मेरे लब पे आ गई

मैंने ''ज़िया'' वो बात किसी से कही न थी

—

निरवान

मैं आज मँजिल-ए-मक़सूद पा के दम लूँगा
ये दश्त-ओ-कोह-ओ-बयाबाँ-ओ-ख़ारज़ार, कोई
ख़लल न डाल सकेगा मेरे इरादों में
मेरे इरादे हैं मज़बूत सँग-ओ-आहन से
हिरास-ओ-ख़ौफ़ से मैं दिल को कर चुका हूँ पाक
भुला चुका हूँ मैं माज़ी की कोशिश-ए-नाकाम
क़दम जो आगे बढ़ा है वो रुक नहीं सकता
मैं आज मँज़िल-ए-मक़सूद पा के दम लूँगा

ये किस ने छेड़ दिया साज़-ए-इशरत-ए-फ़रदा?
ये मेरी रूह को तड़पा दिया है फिर किस ने?
सरूर-ओ-कैफ़ से फिर झुक गईं मेरी आँखें
दिमाग़-ओ-ज़हन पे अब्र-ए-ख़ुमार छाया है
हसीन ख़्वाबों की दुनिया में खो गया हूँ मैं
नवीद-ए-इशरत-ए-फ़रदा न दे मुझे ऐ दिल!

कि तेरे नग़मों से आती है पाँव में लग़ज़िश
मुझे तो हाल में रहना है, ज़िन्दगी है यही,
हदीस-ए-जन्नत-ओ-हूर-ओ-मलक दुरूस्त, मगर
सुनूँ मैं तेरे फ़साने कहाँ मुझे फ़ुरसत
अभी तो मँज़िल-ए-मक़सूद दूर है मेरी
बिछे हुए हैं हर इक सिम्त राह में काँटे
जो आ रहे है। नज़र फूल चश्म-ए-ज़ाहिर को,
फ़रेब-ए-इशरत-ए-फ़रदा न दे मुझे ऐ दिल!

फ़रेबकारी-ए-दुनिया है मुझ पर आईना
यहाँ तो नूर भी खोया हुआ है ज़ुल्मत में,
मैं इस चमन में रहूँ मुझ से हो नहीं सकता
बजाए जज़्बा-ए-उलफ़त है दिल में अब नफ़रत,
निशान-ए-मँज़िल-ए-मक़सूद मिल गया मुझको
मैं आज मँज़िल-ए-मक़सूद पा के दम लूँगा!

—

शादी

अपने आँगन में जो लगाया था
एक पौदा गुलाब का मैंने
बीस और नौ बरस में वो बढ़कर
मेरे क़द के क़रीब आ पहुँचा,
रोशनी घर के गोशे गोशे में
उस के हुस्न-ओ-जमाल की फैली
ले उड़ी निकहत उस की बाद-ए-सहर
और मुअत्तर हुआ तमाम चमन
रख दिया ज़िन्दगी का नाम चमन

दूर से उस को देखकर ख़न्दाँ
खिल उठी एक नाशगुफ़्ता कली
दो दिलों की ख़मोश धड़कन ने
राज़-ए-मस्ती कहा इशारों में
छिड़ गया साज़ लेकर अँगड़ाई
खोल दी अपनी आँख नग़मों ने
सब्ज़ पत्तों ने तालियाँ पीटीं

शाखें महद-ए-हवा में झूल गईं
ग़म-ओ-आलाम-ए-दहर भूल गईं

शादमानी, निशात, कैफ़-ओ-तरब
बजती शहनाईयों का शोर-ओ-ग़ुल
नरतकी कायनात की रक़्साँ
ज़िन्दगी जैसे इक हसीन ग़ज़ल
बन सँवर कर बनी हुई दुल्हन
इक नये मोड़ पर खड़ी है हयात
दे रही है नई सहर का पयाम
रोशनी हर तरफ़ हुवैदा है
सर-ए-इन्सानियत पे सेहरा है

—

हुए इस जहाँ में किसी के न आप
ज़माना मगर आपका हो गया

—

वो चले आए हैं तसव्वुर में
दरमियाँ अब नहीं नज़र का हिजाब

—

बातें

छोड़ो ये दुनिया की बातें   आओ प्यार की बातें कर लें
खाली है मुद्दत से झोली   उस को आस उम्मीद से भर लें
आस उम्मीद न हो तो इन्साँ   जीते जी ही मर जाता है
टक्कर क्या तूफ़ाँ से लेगा   जो इक मौज से डर जाता है
डर कर जीना मौत से बदतर   चलती फिरती ज़िन्दा लाशें
सोई हुई जज़्बात की हलचल   कुचले हुए ज़हनों के सुकूँ में
ज़हन अगर बेदार न होंगे   ख़ौफ़ दिलों पर तारी होगा
आग़ाज-ओ-अन्जाम-ए-हस्ती   मजबूरी, लाचारी होगा
इन मजबूर फ़िजाओं में हम   प्रीत और प्यार का रँग मिला दें
सहराओं और वीरानों को   सेराबी का भेद बता दें
चेहरों से हो दूर उदासी   उनवान-ए-मज़मून-ए-हस्ती
राहें नई खुल जाऐं सब पर   कुल दुनिया का नक़्शा बदले
होश-ओ-ख़िरद के दीवाने भी   क़ायल हों दिल की अज़्मत के
मुफ़लिस की नादारी में भी   अँदाज़-ए-शाही पैदा हो
इश्क़ में लोच इतना आ जाए   हुस्न की महबूबी पैदा हो
माह-ए-मुहब्बत की किरणों से   रोशन अपनी रातें कर लें
छोड़ो ये दुनिया की बातें   आओ प्यार की बातें कर लें

—

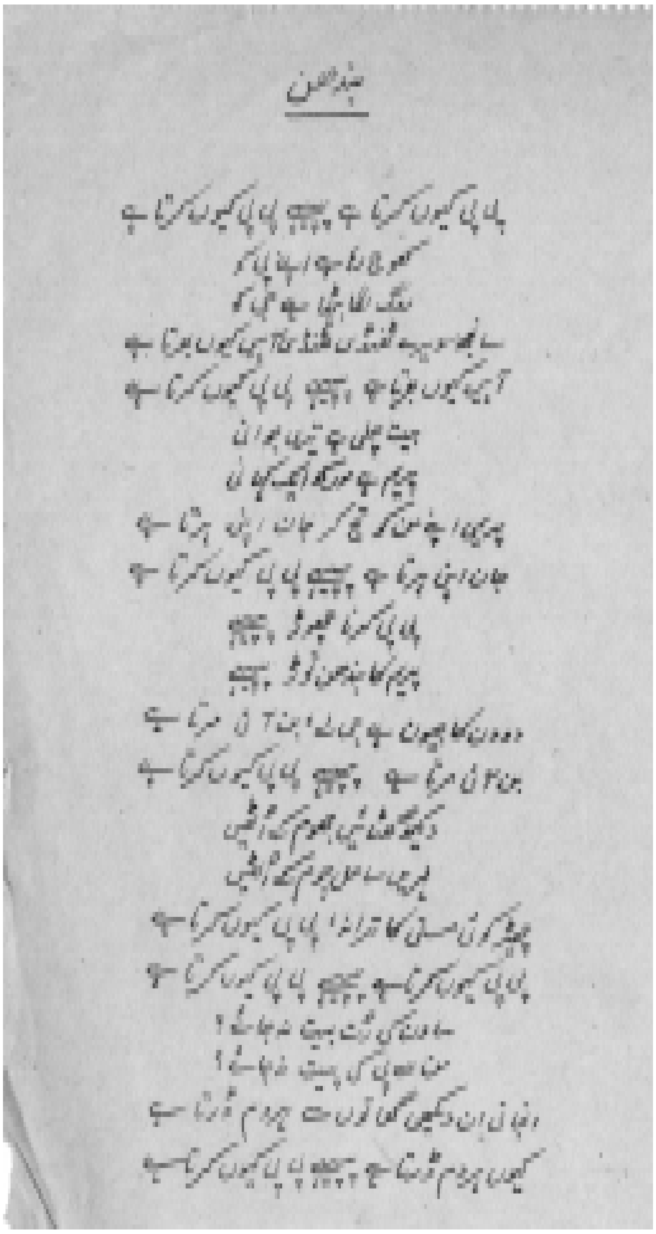

ज़िया फ़तेहाबादी की उर्दू लिखावट

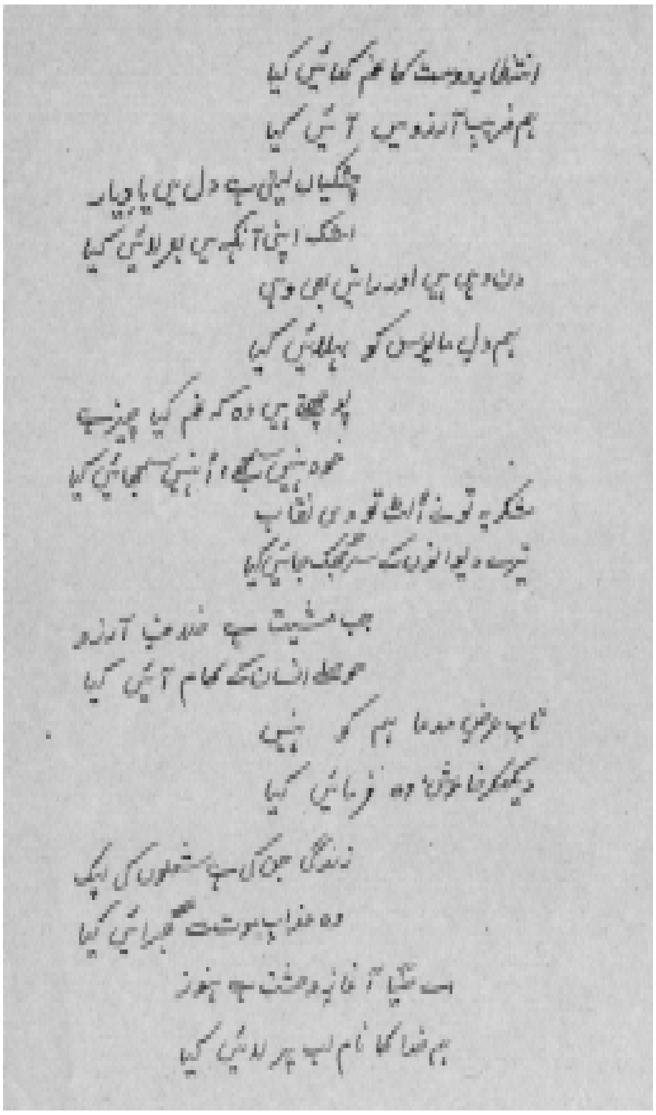

ज़िया फ़तेहाबादी की उर्दू लिखावट